लाल पताका

केन्द्रीय कमेटी का सैद्धांन्तिक मुखपत्र

नवम्बर 2017

13

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति के
सौवीं वर्षगांठ जिंदाबाद!
विश्व सर्वहारा क्रांति जिंदाबाद!
मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद
जिंदाबाद!
सर्वहारा के अंतरराष्ट्रीयतावाद जिंदाबाद!

लाल पताका

केन्द्रीय कमेटी का सैद्धांन्तिक मुखपत्र

नवम्बर 2017

13

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

विषय-वस्तु

1. अमर शहीदों को लालसलाम!
2. संपादकीय
3. तीसरी इंटरनेशनल और इतिहास उसकी स्थान - लेनिन
4. रूसी क्रांति के अंतरराष्ट्रीय स्वभाव - स्तालिन
5. लेनिन और लेनिनवाद - भा.क.पा. (माओवादी) दस्तावेज से
6. रूसी क्रांति में निहित सारतत्वों की विश्वजनीन सच्चाई को सदा बुलंद रखें! - सीसी, भाकपा (माओवादी)
7. बोल्शेविक क्रांति - समकालीन इतिहास में उसकी महत्व - बीआर
8. आंदोलन के शक्ति-संतुलन में बदलावों के अनुसार फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य को बदलने के बारे में - देवजी
9. मई दिवस पर प्रेस विज्ञप्ति
10. जिनुगु नरसिंहरेड्डी के आत्मसमर्पण और विश्वासघात की भर्त्सना करें! पार्टी और स्वयं को बदल कर मजबूत करने के लिए इस नकारात्मक शिक्षक से सबक लें!

(इसमें 1, 2, 3, 4 विषय अनुवाद नहीं हुआ है। इसे पीपुल्सवार-13 (अंग्रेजी) से अनुवाद करना होगा)

लेनिन और लेनिनवाद

मार्क्स और एंगेल्स के अनुगामी लेनिन समूची दुनिया के सर्वहारा वर्ग, मेहनतकश अवाम और उत्पीड़ित राष्ट्रों के महान क्रान्तिकारी शिक्षक रहे। साम्राज्यवाद के युग की ऐतिहासिक परिस्थिति में और सर्वहारा समाजवादी क्रान्ति की ज्वालाओं के बीच लेनिन ने मार्क्स और एंगेल्स की क्रान्तिकारी शिक्षाओं को विरासत के रूप में ग्रहण किया, मजबूती से उनकी हिफ़ाज़त की, वैज्ञानिक रूप से उन्हें लागू किया और सृजनात्मक रूप से उनका विकास किया। लेनिनवाद साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रान्ति के युग का मार्क्सवाद है।

उन्होंने साम्राज्यवादी युग के शुरुआती चरण में रूसी क्रान्ति और विश्व सर्वहारा क्रान्ति के ठोस व्यवहार में मार्क्सवाद की बुनियादी प्रस्थापनाओं को सृजनात्मक रूप से लागू किया। कामरेड स्तालिन ने लेनिनवाद का इस प्रकार समाहार किया – *''यह साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रान्ति के युग का मार्क्सवाद है।''*

स्तालिन ने लेनिनवाद की खास विशेषताओं के दो कारणों का उल्लेख किया है – *''..... पहला तथ्य यह कि लेनिनवाद उस सर्वहारा क्रान्ति से पैदा हुआ जिसकी छाप उस पर अवश्य ही दिखायी देती है; दूसरा यह कि दूसरे इण्टरनेशनल के अवसरवाद के खिलाफ संघर्षों में यह विकसित और मजबूत हुआ।''*

कामरेड लेनिन ने मार्क्सवाद के तीनों संघटक अंगों को समृद्ध करने और सर्वहारा पार्टी, क्रान्तिकारी हिंसा, राज्य, सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व, साम्राज्यवाद, किसानों के सवाल, महिला प्रश्न, राष्ट्रीय प्रश्न, विश्व युद्ध तथा वर्ग संघर्ष में सर्वहारा वर्ग की कार्यनीति के विषय में हमारी समझदारी को अवधारणा की उन्नत मंजिल तक पहुँचाने में महान योगदान दिया। कामरेड लेनिन की सैद्धान्तिक रचनाएँ मार्क्स की द्वन्द्वात्मक पद्धति को लागू करते हुए प्रायः सभी विषयों को समेटती है।

लेनिन ने मार्क्सवादियों के बीच मौजूद भौतिकवाद-विरोधी रुझानों की सर्वांगीण आलोचना करने के साथ ही एंगेल्स के समय से लेकर अपने समय तक

विज्ञान की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियों का भौतिकवादी दर्शन के आधार पर सामान्यीकरण करने के बेहद गम्भीर कार्यभार को हाथ में लिया। विशेष रूप से दर्शनशास्त्र में संशोधनवादी रुझान के रूप में सामने आयी अनुभवसिद्ध आलोचना की आलोचना का बुनियादी महत्व है। तब से लेकर आज तक उनकी यह आलोचना आधुनिक पूंजीवादी दार्शनिक रुझानों की मार्क्सवादी समालोचना के रूप में उपयोगी रही है। आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के आधार पर ''नवीन'' दार्शनिक रुझानों के नाम पर मार्क्सवाद पर होने वाले हमले को उन्होंने दर्शन के मोर्चे पर वर्ग संघर्ष की एक अभिव्यक्ति माना। उन्होंने यह सिद्ध किया कि ''नवीन'' दार्शनिक सिद्धान्त बर्कले और ह्यूम के पुराने मनोगतवादी आदर्शवाद से भिन्न नहीं है। इस प्रकार लेनिन ने दार्शनिक मोर्चे पर मार्क्सवाद पर हुए इस हमले को बखूबी परास्त किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने मार्क्सवादी दर्शन का सृजनात्मक विकास किया।

लेनिन ने प्रतिबिम्बन के मार्क्सवादी सिद्धान्त को सृजनात्मक तरीके से विकसित किया। आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के आधार पर उन्होंने यह बताया कि प्रतिबिम्बित होना पदार्थ का गुण है और कि मानव मस्तिष्क में पदार्थ के प्रतिबिम्बन का उच्चतम रूप है चेतना।

लेनिन ने पदार्थ के प्रतिबिम्बन का जो सिद्धान्त विकसित किया, *''पदार्थ''* की जो परिभाषा की, उसने मार्क्सवादी दार्शनिक भौतिकवाद की बुनियाद को अधिक मजबूत किया और उसे आदर्शवाद के किसी भी रूप के हमले से अभेद्य बनाया। लेनिन ने क्रान्तिकारी द्वन्द्ववाद को आगे विकसित करते हुए अन्तरविरोधों का खास तौर पर गहरा अध्ययन किया। उन्होंने अन्तरविरोध को *''द्वन्द्ववाद का सारतत्व''* बताया और यह कहा कि *''एक का विभाजन और उसके अन्तरविरोधी अंगों का ज्ञान ही द्वन्द्ववाद का सार है।''* उन्होंने आगे इस पर भी जोर दिया कि *''संक्षेप में द्वन्द्ववाद को विपरीत तत्वों की एकता के सिद्धान्त के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।''*

राजनीतिक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में भी लेनिन ने महान योगदान किया। मार्क्स और एंगेल्स ने मुक्त प्रतियोगिता की मंजिल के पूंजीवाद के विभिन्न पहलुओं को

उजागर किया और उसकी प्रवृत्तियों तथा भावी दिशा को चिह्नित किया। किन्तु अब तक सामने न आ सकी पूंजीवाद की उच्चतम मंजिल साम्राज्यवाद का विश्लेषण करना उनके लिए सम्भव न था। लेनिन ने मार्क्सवादी राजनीतिक अर्थशास्त्र को आगे विकसित किया और साम्राज्यवाद के आर्थिक तथा राजनीतिक सारतत्वों का विश्लेषण किया।

कामरेड लेनिन ने मार्क्सवाद के सिद्धान्त में महान योगदान करने वाले, साम्राज्यवाद के अपने विलक्षण विश्लेषण के जरिये वैज्ञानिक रूप से इजारेदारी से पहले वाली मंजिल से लेकर इजारेदारी की मंजिल तक पूंजीवाद के रूपान्तर की व्याख्या की और यह बताया कि पूंजीवाद की यह उच्चतम मंजिल किस प्रकार युद्ध और क्रान्ति को जन्म देती है। उन्होंने यह बताया कि साम्राज्यवादी युद्ध दरअसल साम्राज्यवादी राजनीति का जारी रूप है। विश्व बाजारों, कच्चे माल के स्रोतों तथा निवेश के क्षेत्रों को खोज निकालने की अपनी हवस के चलते और दुनिया को फिर से विभाजित करने के परस्पर संघर्ष के चलते साम्राज्यवादी शक्तियाँ विश्व युद्धों की शुरुआत कर देती हैं। इसीलिए जब तक दुनिया में साम्राज्यवाद रहेगा तब तक युद्ध का स्रोत और सम्भावना कायम रहेगी। उन्होंने लोकतन्त्र के मिथक की धज्जियाँ उड़ायीं और यह बताया कि *''राजनीतिक तौर पर साम्राज्यवाद हमेशा हिंसा और प्रतिक्रियावाद की दिशा में प्रयासरत होता है।''*

लेनिन ने पुरजोर तरीके से कहा कि साम्राज्यवाद इजारेदार, परजीवी या पतनशील, मरणोन्मुख पूंजीवाद है; कि यह पूंजीवाद के विकास की उच्चतम मंजिल तथा अन्तिम मंजिल है और इसी वजह से यह सर्वहारा क्रान्ति की पूर्वबेला है।

लेनिन का एक अन्य प्रमुख योगदान शोषक वर्गों के राज्य के ढाँचे को ध्वस्त करने और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना करने के सम्बन्ध में है। उन्होंने यह बताया कि किस प्रकार राज्य एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के उत्पीड़न का उपकरण है और कैसे शोषणकारी राज्य को केवल क्रान्तिकारी हिंसा के जरिये ही ध्वस्त किया जा सकता है। लेनिन ने बार-बार यह बताया कि सर्वहारा क्रान्ति को पूंजीवादी राज्य मशीनरी को ध्वस्त करना होगा और उसके स्थान पर सर्वहारा

वर्ग का अधिनायकत्व कायम करना होगा।

पेरिस कम्यून और रूसी क्रान्ति से सबक लेते हुए लेनिन ने यह निष्कर्ष निकाला कि सरकार का सोवियत रूप सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का सर्वोत्तम रूप है; सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को मजदूर वर्ग के नेतृत्व में सर्वहारा तथा गैर-सर्वहारा वर्गों के शोषित अवाम के, खास कर किसानों के वर्ग संश्रय के विशेष रूप के तौर पर परिभाषित किया और यह बताया कि सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व किस प्रकार जनवाद की सर्वोच्च किस्म है, सर्वहारा जनवाद का वह रूप है जो बहुसंख्यक जनता के हितों को अभिव्यक्त करता है। उन्होंने यह बताया कि सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व पुराने समाज की शक्तियों तथा परम्पराओं के खिलाफ सतत संघर्ष है - रक्तपात-युक्त और रक्तपात-हीन संघर्ष, हिंसक और शान्तिपूर्ण संघर्ष, सामरिक और आर्थिक संघर्ष, शैक्षणिक और प्रशासनिक संघर्ष है और इसका अर्थ है पूंजीपति वर्ग पर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व। लेनिन के चिन्तन में सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के महत्व को उनके इस मशहूर कथन से आँका जा सकता है - *''केवल वही मार्क्सवादी है जो वर्ग-संघर्ष की मान्यता को सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की मान्यता तक स्वीकार करता हो।''*

इसके अलावा लेनिन ने पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की चर्चा करते हुए यह कहा कि अगर मजदूर वर्ग छोटे पैमाने के माल उत्पादन को पूरी तरह रूपान्तरित नहीं करता, तो इसका खतरा बना रहता है। लेनिन ने कहा है - *''छोटे पैमाने का उत्पादन लगातार प्रतिदिन, प्रतिघण्टा, सहज रूप से और व्यापक पैमाने पर पूंजीवाद और पूंजीपति वर्ग को जन्म देता है।''* यही कारण है कि लेनिन ने इस नये पूंजीपति वर्ग के उभरने पर रोक लगाने के लिए सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को अनिवार्य माना। पूंजीवाद के असमान आर्थिक तथा राजनीतिक विकास के नियम के आधार पर लेनिन इस निष्कर्ष पर भी पहुँचे कि विभिन्न देशों में पूंजीवाद अत्यन्त असमान रूप से विकसित होने के कारण समाजवाद पहले एक या अनेक देशों में विजयी तो हो सकता है, पर सभी देशों में एक ही साथ विजयी नहीं हो सकता। यही वजह है कि एक या अनेक देशों में समाजवाद

की विजय होने पर भी अन्य पूंजीवादी देश मौजूद रहते हैं, इससे समाजवादी राज्यों के खिलाफ तोड़-फोड़ की साम्राज्यवादी गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है। इसीलिए संघर्ष दीर्घकालीन होता है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने 1963 में अपने 14 जून के मशहूर पत्र में बहुत स्पष्ट तरीके से कहा है -

''अक्टूबर क्रान्ति के बाद लेनिन ने कई बार यह कहा है कि

(क) धराशाई शोषक हजारों तरह से उस 'स्वर्ग' को फिर से प्राप्त करने की कोशिश करते हैं जो उनसे छिन चुका है।

(ख) निम्न पूंजीवादी वातावरण में पूंजीवाद के नये तत्व लगातार और सहज रूप से पैदा होते रहते हैं।

(ग) पूंजीवादी प्रभाव तथा निम्न पूंजीपति वर्ग के प्रसारशील व पतनशील वातावरण के परिणामस्वरूप मजदूर वर्ग की पाँतों तथा सरकारी कार्य करनेवालों के बीच से राजनीतिक रूप से भ्रष्ट लोगों और नये पूंजीवादी तत्वों का उदय हो सकता है।

(घ) समाजवादी देश के भीतर वर्ग संघर्ष जारी रखने वाली बाहरी स्थितियाँ हैं - अन्तरराष्ट्रीय पूंजीवाद की घेरेबन्दी, साम्राज्यवादियों की सशस्त्र हस्तक्षेप की धमकी तथा शान्तिपूर्ण तरीके से छिन्न-भिन्न करने के लिए उनकी षड़यन्त्रकारी सरगरमियाँ।''

लेनिन की यह प्रस्थापना कि समाजवाद और पूंजीवाद के बीच संघर्ष एक समूचे ऐतिहासिक दौर तक जारी रहेगा, समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के सिद्धान्त में एक भारी योगदान है।

पार्टी निर्माण की अवधारणा तथा व्यवहार के क्षेत्र में लेनिन के योगदान से नया रास्ता खोलते हुए छलांग लगी जिससे मार्क्सवाद के शस्त्रागार में महान इज़ाफ़ा हुआ। लेनिन की यह मान्यता रही कि अगर सर्वहारा क्रान्ति को सम्पन्न करना हो और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को स्थापित व सुदृढ़ करना हो, तो सर्वहारा वर्ग के लिए यह निहायत जरूरी है कि वह अपनी ऐसी सच्ची क्रान्तिकारी राजनीतिक पार्टी, अर्थात कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना करे जो

अवसरवाद से पूरी तरह विच्छेद कर चुकी हो। *''सत्ता के लिए अपने संघर्ष में सर्वहारा वर्ग के पास संगठन के अलावा और कोई हथियार नहीं है''* - अपने इस मशहूर कथन में उन्होंने पार्टी की आवश्यकता का विलक्षण समाहार प्रस्तुत किया। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि पार्टी जनता के सभी अन्य रूपों के संगठनों को निर्देशित करने वाले वर्गीय संगठन का उच्चतम रूप है, कि सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को केवल सर्वहारा पार्टी के जरिये ही अमल में लाया जा सकता है और कि पार्टी को पेशेवर क्रान्तिकारियों का ऐसा स्थिर केन्द्रक होना चाहिए जिसके साथ पार्टी सदस्यों का एक व्यापक तानाबाना जुड़ा हो। इस राजनीतिक पार्टी को जनता के साथ गहरा जुड़ाव रखना होगा और इतिहास निर्माण में उसकी सृजनात्मक पहलकदमी को पूरा-पूरा महत्व देना होगा। इसे क्रान्ति के दौरान ही नहीं, वरन् समाजवाद तथा साम्यवाद के निर्माण के दौरान भी, जनता पर घनिष्ठ रूप से निर्भर रहना होगा।

राष्ट्रीय प्रश्न पर लेनिनवादी समझदारी गुणात्मक रूप से अधिक उन्नत स्तर की समझदारी है। लेनिन ने उत्पीड़क राष्ट्र के अन्धराष्ट्रवाद तथा उत्पीड़ित राष्ट्र के संकीर्ण राष्ट्रवाद दोनों के ही खिलाफ संघर्ष किया और राष्ट्रीय प्रश्न पर सर्वहारा वर्ग की पार्टी के लिए सभी राष्ट्रों के पूरी तरह समान अधिकार, अलग होने के अधिकार समेत राष्ट्रों के आत्मनिर्णय के अधिकार और समस्त राष्ट्रों के एक साथ जुड़ने के विषय में सही नीति प्रस्तुत की। उन्होंने यह बताया कि किस प्रकार राष्ट्रीय और औपनिवेशिक प्रश्न विश्व सर्वहारा क्रान्ति के सामान्य प्रश्न का अनिवार्य घटक तत्व है और कि इसका समाधान दुनिया भर से साम्राज्यवाद को पूरी तरह समाप्त करके कैसे किया जा सकता है। कामरेड लेनिन की *'राष्ट्रीय और औपनिवेशिक थीसिस'* के अनुसार पूंजीवादी देशों के सर्वहारा क्रान्तिकारी आन्दोलनों को उपनिवेशों तथा आश्रित देशों के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों के साथ संश्रय करना चाहिए; यह संश्रय उपनिवेशों तथा आश्रित देशों में साम्राज्यवादियों और सामन्ती तथा दलाल प्रतिक्रियावादी शक्तियों के बीच के संश्रय को ध्वस्त कर सकता है और इस तरीके से यह संश्रय दुनिया भर में साम्राज्यवादी व्यवस्था को अन्ततः हमेशा के लिए समाप्त कर देगा।

लेनिन ने मजदूर वर्ग और किसानों के बीच के संश्रय के सवाल पर मार्क्स और एंगेल्स के विचारों को सृजनात्मक रूप से विकसित करते हुए उसे एक अखण्ड सिद्धान्त का रूप दिया। प्लेखानोव सरीखे मेन्शेविकों की उस लाइन को खारिज करते हुए, जिसके तहत सर्वहारा को केवल चरम वामपन्थी विपक्ष की ही भूमिका अदा करनी होती और रूस की पूंजीवादी जनवादी क्रान्ति के नेतृत्व की भूमिका पूंजीपति वर्ग को सौंप देनी होती तथा किसानों को इस पूंजीपति वर्ग के ही नेतृत्वाधीन रख देना होता, लेनिन ने रूस की क्रान्ति की दोनों ही मंजिलों के लिए रणनीतिक योजनाएँ इस प्रकार सूत्रबद्ध की – *''सर्वहारा वर्ग को व्यापक किसान जनता के साथ जुड़कर जनवादी क्रान्ति को सम्पन्न करना होगा ताकि निरंकुश-तन्त्र के प्रतिरोधों को बलपूर्वक कुचल दिया जा सके और पूंजीपति वर्ग की अस्थिरता को पंगु बनाया जा सके। सर्वहारा वर्ग को आबादी के व्यापक अर्द्ध-सर्वहारा तत्वों के साथ जुड़ते हुए सामाजवादी क्रान्ति को पूरा करना होगा ताकि पूंजीपति वर्ग के प्रतिरोध को बलपूर्वक कुचल दिया जा सके और किसानों तथा निम्न पूंजीपति वर्ग की अस्थिरता को पंगु बनाया जा सके।''*

साम्राज्यवाद के युग में रूस की अन्तरराष्ट्रीय तथा आन्तरिक स्थितियों का विश्लेषण करते हुए लेनिन ने इस प्रकार पूंजीवादी जनवादी तथा सर्वहारा समाजवादी, अर्थात क्रान्ति की उन दोनों ही मंजिलों का एक सर्वथा नया सिद्धान्त विकसित किया जो अविभाज्य होती हैं और जिनका नेतृत्व सर्वहारा को ही करना होगा।

लेनिनवाद बर्नस्टीनवादी संशोधनवादियों, नरोदवादियों, अर्थवादियों, मेन्शेविकों, कानूनी मार्क्सवादियों, विसर्जनवादियों, काउत्स्कीपन्थियों, त्रात्स्कीपन्थियों समेत विभिन्न रंग-रूप के अवसरवादियों के खिलाफ अविराम संघर्ष के जरिये विकसित हुआ है। लेनिन ने मार्क्सवाद को जड़सूत्र के रूप में नहीं, बल्कि कार्यों के मार्गदर्शक के रूप में मानते हुए कार्यनीति तैयार की। लेनिन के कार्यनीतिक नारों की विलक्षण स्पष्टता और उनकी क्रान्तिकारी योजनाओं के अनोखे साहस के चलते दूसरे इण्टरनेशनल की समस्त वामपन्थी शक्तियों और क्रान्तिकारी जनता को बोल्शेविकों के पक्ष में लाया जा सका।

संशोधनवादियों को लेनिन मजदूर वर्ग के आन्दोलन की पाँतों के बीच छिपे हुए साम्राज्यवाद के दलाल मानते थे। उन्होंने कहा है कि *''..... साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष तब तक ढकोसला और बकवास होगा जब तक इसे अवसरवाद के खिलाफ संघर्ष के साथ अभिन्न रूप से न जोड़ दिया जाये।''*

''पितृभूमि की रक्षा'' की अन्धराष्ट्रवादी नीति पर चलने वाली अधिकतर सामाजिक जनवादी पार्टियों के विश्वासघात के चलते प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान दूसरे इण्टरनेशनल का पतन होने पर कामरेड लेनिन ने युद्ध के फौरन बाद तीसरे इण्टरनेशनल का गठन किया और इसे साम्राज्यवाद के खिलाफ अन्तरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के संघर्ष का शक्तिशाली उपकरण बना दिया।

मार्क्सवाद पूंजीवाद के अपेक्षाकृत शान्तिपूर्ण विकास के युग का सिद्धान्त है। जबकि लेनिनवाद साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रान्ति के युग का सिद्धान्त है।

कामरेड स्तालिन ने उन स्थितियों का वर्णन करते हुए जिनमें लेनिनवाद का उदय हुआ, यह कहा है कि *''लेनिनवाद ने साम्राज्यवाद की उन स्थितियों में विकास किया और आकार ग्रहण किया जब पूंजीवाद के अन्तरविरोध चरमबिन्दु तक पहुँच चुके थे, सर्वहारा क्रान्ति एक फौरी व्यवहारिक सवाल बन गयी थी, मजदूर वर्ग की क्रान्ति की तैयारी का पुराना दौर बीत चुका था और उसके स्थान पर पूंजीवाद पर सीधा प्रहार करने का नया दौर आ चुका था।''* उन्होंने यह भी कहा है कि *''लेनिनवाद आम तौर पर सर्वहारा क्रान्ति का सिद्धान्त तथा कार्यनीति है और खास तौर पर सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का सिद्धान्त तथा कार्यनीति है।''*

आज भी साम्राज्यवाद पर, सर्वहारा क्रान्ति तथा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व पर, युद्ध और शान्ति पर और समाजवाद तथा साम्यवाद के निर्माण पर लेनिन की शिक्षाएँ पूरी तरह प्राणवान बनी हुई हैं। इस प्रकार मार्क्सवाद के विज्ञान ने पूंजीवाद की साम्राज्यवादी अवस्था में सर्वहारा क्रान्ति और दूसरे इण्टरनेशनल के अवसरवादियों के विरुद्ध संघर्ष के दौरान मार्क्सवाद-लेनिनवाद की दूसरी उन्नत मंजिल तक गुणात्मक छलांग लगायी।

अक्टूबर क्रांति पर भा.क.पा. (माओवादी)

महान रूसी समाजवादी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ के अवसर पर रूसी क्रांति में निहित सारतत्वों की विश्वजनीन सच्चाई को सदा बुलंद रखें और अपना देश की विशिष्टता के अनुसार उसे व्यवहार में लागू करें

- केन्द्रीय कमेटी, भाकपा (माओवादी),

21 सितम्बर, 2017.

विदित है कि 1917 के 7 नवम्बर, महान रूसी क्रांति का विजय दिवस था. वह रूस तथा दुनिया के मजदूर-किसान व मेहनतकश अवाम के लिए एक ऐसे दिन के बतौर सामने आया जिस दिन वे वर्ग शोषण व वर्ग अत्याचार से मुक्ति मार्ग की ओर एक कदम अग्रगति के रूप में खुशियां मनाने के साथ-साथ शपथ भी लेते हैं। इसे और सुस्पष्ट कर कहने से रूसी क्रांति को वे पूंजीवाद के सीमाहीन शोषण व प्रचंड जुल्म से मुक्ति की ओर अग्रसर होने के रास्ते में एक मील का पत्थर जैसी विजय के रूप में देखते हैं। वाकई में जब से समाज में वर्गों का उदय हुआ और वर्ग संघर्ष की शुरुआत हुई, तब से दास समाज में दास-मालिकों के खिलाफ दास विद्रोह और सामंती समाज में भू-स्वामियों के खिलाफ बुर्जुआ क्रांति की बात जग जाहिर है। पर, दास विद्रोह हो या किसान विद्रोह या बुर्जुआ क्रांति- इन सब के जरिए सामाजिक व्यवस्थाओं में जरूर बदलाव आया, मगर शोषण व्यवस्था के एक तरीके के स्थान पर दूसरे तरीके की शोषण व्यवस्था आ बैठी। इनमें रूपों में जितने भी क्रांतिकारी बदलाव आने के बावजूद अंतर्वस्तु में वे सभी शोषणमूलक व्यवस्थाएं ही थी। लिहाजा कहा जा सकता है कि रूसी नवम्बर क्रांति ही दुनिया की सबसे पहली ऐसी क्रांति है जिससे पुराने शोषक-शासक वर्गों का तख्ता उलट कर मजदूर वर्ग का तथा मजदूर-किसान-मेहनतकशों का राज स्थापित हुआ। अतः इसे मील का पत्थर

अथवा प्रमाण-चिन्ह या प्रमाणांक (Hall mark) या वर्ग संघर्ष के इतिहास में प्रचंड गुणात्मक विशिष्टताओं से परिपूर्ण एक विशेष घटना इत्यादि के रूप में वर्णन भी किया गया है। का. माओ ने कहा, ''अक्टूबर समाजवादी क्रांति ने न केवल रूस के इतिहास में, बल्कि विश्व के इतिहास में भी एक नए युग का सूत्रपात किया है'' (अंतरविरोधों के बारे में- का. माओ)। महान रूसी अक्टूबर क्रांति की 40वीं वर्षगांठ पर रूस में यू.एस.एस.आर. के सुप्रीम सोवियत (जिसमें सोवियत युनियन और तमाम राष्ट्रीयता के सोवियत शामिल थीं) के सामने का. माओ द्वारा दिए गए एक भाषण (नवम्बर-1957) में उन्होंने कहा, ''जैसेकि हमारे क्रांतिकारी शिक्षक का. लेनिन ने इस बात को दर्शाया है कि 40 वर्षों पहले सोवियत जनता द्वारा संचालित महान रूसी क्रांति विश्व इतिहास में एक नया युग की शुरूआत की है ... ... इतिहास में अनेकों प्रकार के क्रांतियां देखी गयीं। पर, अक्टूबर समाजवादी क्रांति के साथ तुलना करने लायक एक भी नहीं है। विगत हजारों वर्षों से समूचा विश्व के श्रमजीवी जनता और प्रगतिशील ताकतें एक ऐसा समाज की स्थापना की सपनें संजोये हुए थे जहां एक मानव द्वारा दूसरे मानव पर शोषण नहीं रहेगा। यह सपने का कार्यान्वयन तब-ही संभव हुआ जब दुनिया के एक चौथाई क्षेत्र में पहली बार अक्टूबर क्रांति सफल हुई।''

'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' के जरिए ही सबसे पहले महान मार्क्स-एंगेल्स ने पूंजीवाद का ध्वस्त होने व समाजवाद की स्थापना होने की अनिवार्यता की बात कही

दुनिया के मजदूर-किसान-मेहनतकश जनता सहित आम जनता इस बात से अवगत हैं कि पूंजीवाद को ध्वस्त कर समाजवाद की स्थापना होना अनिवार्य है- का सिद्धांत महान मार्क्स ने ही सबसे पहले सामने लाया था। जैसाकि कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र में हम पाते हैं कि ''बुर्जुआ वर्ग सर्वोपरि अपनी कब्र खोद देनेवालों को ही पैदा करता है। उनका पतन और सर्वहारा की विजय, दोनों समान रूप से अवश्यंभावी हैं''। कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र हमें सिखाया है कि, ''कम्युनिस्टों का तात्कालिक लक्ष्य वही है, जो अन्य सभी सर्वहारा पार्टियों का है, अर्थात सर्वहारा एक वर्ग के रूप में गठन, बुर्जुआ प्रभुत्व का तख्ता उलटना, सर्वहारा द्वारा राजनीतिक सत्ता का जीता जाना'' [मार्क्स-एंगेल्स- कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र]।

यद्यपि मार्क्स-एंगेल्स ने दुनिया के सामने इस ऐतिहासिक सिद्धांत को लाया। पर, उस सिद्धांत को व्यवहार में कार्यान्वित कर पाने के लिए यानी बुर्जुआ प्रभुत्व का तख्ता उलटकर सर्वहारा द्वारा राजनीतिक सत्ता का जीता जाने के लिए 1917 तक इंतजार करना पड़ा। हालांकि, 1871 में पेरिस कम्युन के सर्वहारा वर्ग ने राजनीतिक सत्ता हथियाने के लिए पहली बार वीरतापूर्ण संघर्ष किया था। मगर, पूंजीपति वर्ग के सशस्त्र दमन के परिणामस्वरुप उसमें हार खानी पड़ी।

दरअसल मार्क्स-एंगेल्स के ऐतिहासिक सिद्धांत को व्यघ्वहारिक तौर पर सर्वहारा सिद्धांत कहा जा सकता है। सर्वहारा क्रांति मानव इतिहास की सबसे महान क्रांति है और निजी मिल्कियत की जगह सार्वजनिक मिल्कियत की स्थापना करती है तथा तमाम शोषण के व्यवस्थाओं और तमाम शोषक वर्गों को उन्मूलन कर देती है। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि ऐसी भूकम्पकारी क्रांति को गंभीर और भीषण वर्ग-संघर्षों से गुजरना पड़े तथा अनिवार्य रूप से एक ऐसा लम्बा और टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता तय करना पड़े जिसमें जगह-जगह असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

का. लेनिन ने भी एक बार कहा था: 'अगर हम इस मामले पर इसके सारतत्व की दृष्टि से विचार करें तो क्या इतिहास में कभी ऐसा भी हुआ है कि किसी नयी उत्पादन प्रणाली ने लम्बे समय तक एक के बाद एक असफलता का मुंह देखे बिना, गलतियां किये बिना और ठोकरें खाए बिना, फौरन अपनी जड़ें जमा ली हों?' (लेनिन- एक महान शुरुआत)

रूसी क्रांति का इतिहास भी टेढ़-मेढ़ा व उतार-चढ़ाव की तीन क्रांतियों के दौर से गुजरा

जाहिर है कि महान लेनिन व स्तालिन और उनकी प्रत्यक्ष देखरेख में संचालित सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के नेतृत्व में 1917 के 7 नवम्बर (रूसी कैलेंडर के अनुसार अक्टूबर) की समाजवादी क्रांति सफल हुई। पर, एक ही चोट या कोशिश में यह समाजवादी क्रांति विजय हासिल नहीं कर सकी। बल्कि, तीन क्रांतियों से गुजरते हुए ही 1917 की समाजवादी क्रांति सफल हुई। ये तीन क्रांतियां थीं: 1905 की पूंजीवादी-जनवादी क्रांति, फरवरी 1917 की पूंजीवादी-जनवादी क्रांति और अक्टूबर (अभी नवम्बर) 1917 की समाजवादी क्रांति।

पर, पहली 1905 की रूसी क्रांति का अंत पराजय में हुआ। जिन कारणों से यह पराजय हुई उसे गहराई से समझना हमारे लिए बहुत जरूरी है। क्योंकि हम भी भारतीय क्रांति के मौजूदा दौर में उतार-चढ़ाव, पीछे हटना, धक्का खाना आदि का सामना कर रहे हैं। जो भी हो, पहली रूसी क्रांति की पराजय के मूल कारणों को रूसी बोल्शेविक पार्टी ने समीक्षा करते हुए जिन बातों को सामने लाया, संक्षेप में वे हैं:

1. क्रांति में जारशाही के खिलाफ अभी मजदूरों और किसानों का पक्का सहयोग कायम नहीं हुआ था।
2. किसानों का काफी बड़ा हिस्सा जारशाही का खात्मा करने के लिए मजदूरों से सहयोग करने में अनिच्छुक था। उसका असर फौज के व्यवहार पर भी पड़ा। फौज में ज्यादातर सिपाहियों की वर्दी पहने हुए किसानों के बेटे थे। जार की फौज के कई दस्तों में असंतोष और विद्रोह फूट पड़ा, लेकिन अधिकांश सैनिकों ने अभी भी मजदूरों की हड़तालें और विद्रोह दबाने में जार की मदद की।
3. मजदूरों की कार्रवाई भी काफी सुगठित नहीं थी। क्रांतिकारी संघर्ष में वे 1906 में ज्यादा सक्रिय रूप से हिस्सा लेने लगे, लेकिन उस समय तक मजदूर वर्ग का हिरावल काफी कमजोर हो चुका था।
4. मजदूर वर्ग क्रांति की पहली और प्रधान शक्ति था। लेकिन मजदूर वर्ग की पार्टी की कतारों में आवश्यक एकता और दृढ़ता का अभाव था। रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी (रू.सा.ज.म.पा.)- मजदूर वर्ग की पार्टी- दो दलों में बंटी हुई थी: बोल्शेविक और मेंशेविक। बोल्शेविक सुसंगत क्रांतिकारी लाइन में चलते थे। उन्होंने जारशाही का खात्मा करने के लिए मजदूरों का आह्वान किया था। मेंशेविकों ने अपनी समझौतापरस्त कार्यनीति से क्रांति में बाधा डाली, मजदूरों के बड़ी तादाद के मन में उलझन पैदा कर दी और मजदूर वर्ग में बाधा डाली। इसलिए, मजदूरों ने क्रांति में हमेशा एकजुट होकर काम नहीं किया। अभी खुद अपनी कतारों में एकता नहीं होने की वजह से, मजदूर वर्ग क्रांति का सच्चा नेता नहीं बन सका।
5. निरंकुश जारशाही को 1905 की क्रांति का दमन करने में पश्चिमी यूरोप के साम्राज्यवादियों से मदद मिली।

6. सितम्बर 1905 में, जापान से शांति-संधि हो जाने पर जार को काफी मदद मिली। संधि होने से जार का पाया मजबूत हुआ।

अब दूसरी क्रांति पर नजर डाली जाएं: दूसरी क्रांति तो फरवरी 1917 में हुई। जिसके जरिए जारशाही का पतन हुआ तथा मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियतों का निर्माण हुआ और साथ ही साथ अस्थायी सरकार का निर्माण हुआ तथा दोहरी सत्ता अस्तित्व में आयी। इस तरह फरवरी की पूंजीवादी-जनवादी क्रांति की जीत हुई। रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) ने दिखाया है कि ''क्रांति की जीत इसलिए हुई कि इसका हिरावल मजदूर वर्ग था। फौजी वर्दी पहने हुए और 'शांति', रोटी और आजादी मांगते हुए, लाखों किसानों के आंदोलन का मजदूर वर्ग ने नेतृत्व दिया। सर्वहारा वर्ग के दृढ़ नेतृत्व ने ही क्रांति की सफलता निश्चित कर दी।''

क्रांति के प्रारम्भिक दिनों में का. लेनिन ने लिखा था, ''क्रांति मजदूरों ने की थी। मजदूरों ने वीरता दिखाई; उन्होंने अपना खून बहाया; अपने साथ मेहनतकश और गरीब जनता को बहा ले गये।''

पहली क्रांति ने, 1905 की क्रांति ने, दूसरी क्रांति, फरवरी 1917 की क्रांति की तुरंत कामयाबी के लिए रास्ता साफ कर दिया था।

का. लेनिन ने लिखा, ''1905-1907 के तीन वर्षों में ही सोवियतें बन गयीं। विजयी क्रांति को मजदूर और फौजी प्रतिनिधियों की सोवियतों के समर्थन का आधार मिला। जिन मजदूरों और सैनिकों ने विद्रोह किया, उन्होंने मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियतें बना लीं। 1905 की क्रांति ने दिखला दिया कि सोवियतें सशस्त्र विद्रोह का साधन थीं, और साथ ही एक नयी क्रांतिकारी सत्ता का बीज थीं। आम मजदूर जनता के मन में सोवियतों की बात जीवित रहीं और जैसे ही जारशाही का तख्ता उलटा गया, वैसे ही उसे अमल में ले आयी। अंतर इतना था कि 1905 में सिर्फ मजदूर प्रतिनिधियों की सोवियतें बनी थीं, जबकि फरवरी 1917 में बोल्शेविकों की पहलकदमीं पर मजदूर और सैनिक प्रतिनिधि यों की सोवियतें बनीं।''

मगर, सोवियत की कार्यकारिणी समिति के समाजवादी-क्रांतिकारी और मेंशेविक नेताओं ने सत्ता पूंजीवादियों को सौंप दी। फिर भी, जब मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों ने यह सब जाना, तो उसके बहुमत ने, बकायदा बोल्शेविकों के विरोध के बावजूद, समाजवादी-क्रांतिकारी और मेंशेविक नेताओं के काम को

पास कर दिया।

इस तरह रूस में एक नयी राज्यसत्ता पैदा हुई जिसमें, लेनिन के शब्दों में, ''पूंजीपतियों और पूंजीपति बन जाने वाले जमींदारों'' के प्रतिनिधि शामिल थे।

लेकिन पूंजीवादी हुकूमत के साथ-साथ, एक दूसरी सत्ता मौजूद थी-मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियत। सोवियत में सैनिक प्रतिनिधि ज्यादातर किसान थे, जो युद्ध के लिए भर्ती किये गये थे। मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियत जारशाही के खिलाफ मजदूरों और किसानों के सहयोग के संस्था थी और इसके साथ ही उनकी सत्ता की संस्था थी, मजदूर वर्ग और किसानों के अधिनायकत्व की सत्ता थी।

इसका फल यह हुआ कि दो सत्ताएं, दो अधिनायकत्व विचित्र ढंग से आपस में गुंथ गये: पूंजीपतियों का अधिनायकत्व, जिसकी प्रतिनिधि अस्थायी सरकार थी और मजदूरों और किसानों का अधिनायकत्व, जिसकी प्रतिनिधि मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियत थी।

इसका नतीजा निकला दोहरी-सत्ता।

अब, तीसरी क्रांति यानी रूसी अक्टूबर समाजवादी क्रांति पर नजर डाली जाए। पहले यह हमें याद रखना चाहिए कि पहला विश्वयुद्ध 1914 से 1918 तक चला और रूसी समाजवादी क्रांति 1917 के अक्टूबर (अभी नवम्बर) में सफल हुई।

जिस प्रक्रिया के जरिए रूसी नवम्बर क्रांति सफल हुई उसके बारे में कहा जा सकता है कि 1917 के 3 अप्रैल की रात को का. लेनिन ने एक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने समाजवादी क्रांति की विजय के लिए लड़ने के लिए आम जनता का आह्वान किया। 'समाजवादी क्रांति जिंदाबाद'- इन शब्दों के साथ का. लेनिन ने अपना यह भाषण खत्म किया। इसी समय का. लेनिन ने युद्ध और क्रांति के विषय पर बोल्शेविकों की एक मीटिंग में उन्होंने रिपोर्ट दी और उसके बाद मेंशेविकों और बोल्शेविकों की एक मिली-जुली मीटिंग में रिपोर्ट की सैद्धांतिक स्थापनाओं (थीसीस) को दोहराया। ये का. लेनिन की मशहूर अप्रैल थीसीस थी, जिससे पार्टी और सर्वहारा वर्ग को पूंजीवादी क्रांति से समाजवादी क्रांति की तरफ बढ़ने के लिए एक स्पष्ट क्रांतिकारी नीति मिली।

अक्टूबर 1917 से फरवरी 1918 तक, देश के विशाल प्रदेशों में सोवियत क्रांति इतनी तेजी से फैली कि का. लेनिन ने उसे सोवियत सत्ता का 'विजय'

यात्रा कहा।

महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति की विजय हुई

रूस में समाजवादी क्रांति की इस अपेक्षाकृत आसान विजय के कई कारण थे। नीचे संक्षेप में लिखे हुए मुख्य कारण ध्यान देने योग्य हैं:

(1) अक्टूबर क्रांति का दुश्मन अपेक्षाकृत ऐसा कमजोर, ऐसा असंगठित और राजनीतिक रूप से ऐसा अनुभवहीन था जैसे कि रूसी पूंजीपति। रूसी पूंजीपति आर्थिक रूप से कमजोर थे और पूरी तरह सरकारी ठेकों पर निर्भर थे। उनमें राजनीतिक आत्मनिर्भरता और पहलकदमीं इतनी नहीं थी कि परिस्थिति से निकलने का रास्ता ढूंढ़ सकें। मसलन, बड़े पैमाने पर राजनीतिक गुटबंदी और राजनीतिक दगाबाजी में उन्हें फ्रांसीसी पूंजीपतियों का सा तजुर्बा नहीं था, और न ही अंग्रेज पूंजीपतियों की तरह उन्होंने विशद रूप से सोची हुई चतुर समझौता करने की शिक्षा पायी थी। फरवरी क्रांति ने जार का तख्ता उलट दिया था और सत्ता खुद पूंजीपतियों के हाथ में आ गयी थी लेकिन बुनियादी तौर से घृणित जार की नीति पर ही चलने के सिवा उन्हें और कोई चारा नहीं था। जार की तरह, उन्होंने 'विजय तक युद्ध करने' का समर्थन किया, हालांकि युद्ध चलाना देश की शक्ति से परे था और जनता तथा फौज दोनों युद्ध से बुरी तरह से चूर हो चुके थे। जार की तरह कुल मिलाकर वे भी बड़ी जागीरी जमीन बनाये रखने के पक्ष में थे, हालांकि जमीन की कमी और जमींदारों के जुए बोझ से किसान मर रहे थे। जहां तक उनकी मजदूर नीति का संबंध था, वे मजदूर वर्ग से नफरत करने में जार को भी कान काट चुके थे। उन्होंने कारखानेदार के जुवे को बनाये रखने और मजबूत करने की कोशिश की, बल्कि उन्होंने बड़े पैमाने पर तालेबंदी करके उसे असहनीय बना दिया।

कोई ताज्जुब नहीं कि जनता ने जार की नीति की और पूंजीपतियों की नीति में बुनियादी भेद नहीं देखा, और जो घृणा उसके दिल में जार के लिए थी वही पूंजीपतियों की अस्थायी सरकार के लिए हो गयी।

जब तक समाजवादी-क्रांति और मेंशेविक पार्टियों का थोड़ा-बहुत असर जनता पर था, तब तक पूंजीपति उन्हें पर्दे की तरह उसे इस्तेमाल कर सकते थे और अपनी सत्ता कायम रख सकते थे। लेकिन,

जब मेंशेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों ने जाहिर कर दिया कि वे साम्राज्यवादी पूंजीपतियों के दलाल हैं और इस तरह जनता में उन्होंने अपना असर खो दिया, तब पूंजीपतियों और उनकी अस्थायी सरकार का कोई मददगार नहीं रहा।

(2) अक्टूबर क्रांति का नेतृत्व रूस के मजदूर वर्ग जैसे क्रांतिकारी वर्ग ने किया। यह ऐसा वर्ग था जो संघर्ष की आंच में तप चुका था, जो थोड़ी ही अवधि में दो क्रांतियों से गुजर चुका था और तीसरी क्रांति के शुरू होने से पहले शांति, जमीन, स्वाधीनता और समाजवाद के लिए संघर्ष में जनता का नायक माना जा चुका था। अगर क्रांति का नेता रूस के मजदूर वर्ग जैसा न होता, ऐसा नेता जिसने जनता का विश्वास पा लिया था, तो मजदूरों और किसानों की मैत्री न होती और इस तरह की मैत्री के बिना अक्टूबर क्रांति की विजय असम्भव होती।

(3) रूस के मजदूर वर्ग को क्रांति में गरीब किसानों जैसा सुदृढ़ साथी मिला, जो किसान जनता का भारी बहुसंख्यक भाग था। सर्वहारा और गरीब किसानों की मैत्री दृढ़ हुई। मजदूर वर्ग और गरीब किसानों की इस मैत्री के कायम होने से, मध्यम किसानों की भूमिका स्पष्ट हो गयी। ये मध्यम किसान बहुत दिन तक ढुलमुल रहे थे और अक्टूबर विद्रोह के शुरू होने से पहले ही पूरी तरह क्रांति तरफ आये थे और उन्होंने गरीब किसानों से नाता जोड़ा था। कहना न होगा कि इस मैत्री के बिना अक्टूबर क्रांति विजय न होती।

(4) मजदूर वर्ग का नेतृत्व राजनीतिक संघर्षों में तपी और परखी हुई बोल्शेविक पार्टी जैसी पार्टी ने किया था। बोल्शेविक पार्टी इतनी साहसी पार्टी थी कि निर्णायक हमले में जनता का नेतृत्व कर सके। शांति के लिए आम जनवादी आंदोलन, जागीरी जमीन छीनने के लिए किसानों का जनवादी आंदोलन, राष्ट्रीय स्वाधीनता और राष्ट्रीय समानता के लिए उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं का आंदोलन और पूंजीपतियों का तख्ता उलटने के लिए और सर्वहारा अधिनायकत्व कायम करने के लिए सर्वहारा वर्ग का समाजवादी आंदोलन-इन सबको ऐसी ही पार्टी क्रांतिकारी ध ारा में मिला सकती थी।

इसमें संदेह नहीं कि इन विभिन्न आन्दोलनों की धाराओं के एक ही

सामान्य शक्तिशाली क्रांतिकारी धारा में मिलने से रूस में पूंजीवाद की तकदीर का फैसला हो गया।

(5) अक्टूबर क्रांति ऐसे समय आरम्भ हुई जबकि साम्राज्यवादी युद्ध अभी जोरों पर था, जबकि प्रमुख पूंजीवादी राज्य दो विरोधी खेमें में बंटे हुए थे और जब परस्पर युद्ध में फंसे रहने और एक-दूसरे की जड़ें काटने में लगे रहने से, वे 'रूसी मामलों' में मजबूती से दखल नहीं दे सकते थे और सक्रिय रूप से अक्टूबर क्रांति का विरोध नहीं कर सकते थे।

अक्टूबर समाजवादी क्रांति ने सर्वहारा अधिनायकत्व कायम किया और विशाल देश की हुकूमत का काम मजदूर वर्ग को सौंप दिया। इस तरह से उसे शासक वर्ग बना दिया।

इस तरह अक्टूबर की समाजवादी क्रांति ने मनुष्य जाति के इतिहास में एक नया युग, सर्वहारा क्रांतियों का युग आरम्भ किया।

रूसी क्रांति का ऐतिहासिक सबक

रूसी क्रांति का ऐतिहासिक सबकों के संबंध में दो/चार बातें इस प्रकार हैं:

(1) सर्वहारा क्रांति की विजय, सर्वहारा अधिनायकत्व सर्वहारा क्रांतिकारी पार्टी के बिना असम्भव है। सिर्फ नयी तरह की पार्टी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी (अभी मा-ले-माओवादी पार्टी), सामाजिक क्रांति की पार्टी, पूंजीपतियों के खिलाफ निर्णायक युद्ध के लिए सर्वहारा को तैयार कर सकने वाली और सर्वहारा क्रांति की विजय संगठित कर सकने वाली पार्टी ही ऐसी पार्टी हो सकती है;

(2) मजदूर वर्ग की पार्टी वर्ग नेता की अपनी भूमिका तब तक पूरी नहीं कर सकती, जब तक कि वह मजदूर आंदोलन के आगे बढ़े हुए सिद्धांत (अभी मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी सिद्धांत) में माहिर नहीं होती।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत समाज के विकास का विज्ञान है, मजदूर-किसान व मेहनतकशों के आंदोलन का विज्ञान है। विज्ञान की हैसियत से, यह एक जगह रुकता नहीं बल्कि उसका निरंतर विकास होता है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत कठमुल्लापन नहीं है, बल्कि काम करने के लिए मार्ग-दर्शक है;

(3) पार्टी मजदूर वर्ग की हिरावल भूमिका पूरी नहीं कर सकती यदि सफलता से बदहवास होकर उसमें घमंड आ जाये, वह अपने काम में दोष न देखे, अपनी गलतियां मानने से और समय रहते खुलकर और ईमानदारी से उन्हें सुधारने से डरे। पार्टी अजेय होती है यदि वह आलोचना और आत्मालोचना से न डरे, यदि वह अपने काम में गलतियों से सबक लेकर कार्यकर्ताओं को सिखाये-पढ़ाये और यदि वह समय रहते अपनी गलतियों को सुधारना नहीं जानती, जब तक मजदूर वर्ग की पार्टी अपनी ही कतारों में उत्पन्न होने वाले अवसरवादियों के खिलाफ लगातार कड़ा संघर्ष नहीं करती, जब तक अपने ही भीतर पैदा होने वाले समर्पणवादियों का मुकाबला नहीं करती, तब तक वह अपनी कतारों में एकता और अनुशासन कायम नहीं रख सकती। **हकीकत में बोल्शेविक पार्टी के आंतरिक जीवन के विकास का इतिहास पार्टी के भीतर अवसरवादी गुटों के खिलाफ अर्थवादियों, मेंशेविकों, त्रास्तकीवादियों, बुखारिनपंथियों के खिलाफ संघर्ष का इतिहास है।**

4 (अ) रूसी क्रांति के पहले कामरेड लेनिन के सामने बतौर एक नमूना पेरिस कम्युन 1871 का विद्रोह था जो शहरों पर कब्जा जमाकर ही शुरू हुआ था। उसी अनुभव से सबक लेकर कामरेड लेनिन ने रूसी क्रांति के मार्ग के रूप में बगावत का मार्ग अपनाया।

(आ) अतः कहा जा सकता है कि रूसी क्रांति बगावत के जरिए सफल हुई। जिसका अर्थ है पहले शत्रु का अड्डा स्थल शहर पर कब्जा जमाकर बाद में गांवों (देहातों) पर कब्जा जमाना।

पर, रूसी क्रांति के महान नेताओं पहले का. लेनिन और बाद में का. स्तालिन की मृत्यु के बाद रूसी समाजवाद भी टिक नहीं सका। जो अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के लिए बहुत-ही दुखद घटना है। कारण निम्न रूप है:

विदित है कि 21 जनवरी, 1924 में महान लेनिन की मृत्यु हुई। उनकी मृत्यु के बाद सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के अधीन रूस देश में समाजवाद की अग्रगति का जिम्मा का. स्तालिन के कंधे पर आ पड़ा जो का. स्तालिन के कुशल नेतृत्व ने बखूबी निभाए। जबकि का. स्तालिन के सामने समाजवादी

निर्माण-कार्य का कोई पूर्व अनुभव नहीं था। उन्होंने न केवल रूस में समाजवादी निर्माण कार्य को आगे बढ़ाया, बल्कि साथ ही साथ विश्व सर्वहारा तथा कम्युनिस्ट आंदोलन में भी नेतृत्व दिया। का. स्तालिन के नेतृत्व में ही रूसी लाल सेना की अभूतपूर्व साहसिक जवाबी कार्यवाही के जरिए दूसरा विश्वयुद्ध के चरम फासीवादी ताकतों के सरगना हिटलर को बुरी तरह से परास्त किया गया और तमाम फासीवादी ताकतों का कमर तोड़ दिया गया। पर, पार्टी में छिपे हुए चरम संशोधनवादी व गद्दार ख्रुश्चेव गुट द्वारा 01 मार्च, 1953 को का. स्तालिन की मृत्यु के बाद पार्टी व सत्ता पर कब्जा जमा लिया गया और पहले पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करके और बाद में रूसी समाजवाद को सामाजिक साम्राज्यवाद में बदल दिया गया। इस तरह से दुनिया के सर्वहारा वर्ग व उत्पीड़ित राष्ट्र व जनता के सामने एक नकारात्मक अनुभव रखा। जिससे महान माओ ने सबक लेकर चीन में समाजवाद को आगे बढ़ाया। रूसी समाजवादी निर्माण कार्य में जो भी भूल व त्रुटि हुई थी उनसे सीख लेकर और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति को जारी रखते हुए चीन में सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को और मजबूत बनाया गया तथा गद्दार संशोधनवादी व पूंजीवाद के राहगीरों को पार्टी से निकाल-बाहर कर दिया गया। पर, समाजवाद का गद्दार देङ-गुट के नेतृत्व में 09 सितम्बर, 1976 में का. माओ की मृत्यु के बाद पार्टी व सत्ता पर कब्जा जमा लिया गया और चीन को पहले पूंजीवाद में और अभी साम्राज्यवाद में बदल दिया गया। इस तरह से दुनिया के सर्वहारा वर्ग व उत्पीड़ित जनता के सामने रूस के अध:पतन के बाद समाजवादी चीन का अध:पतन और एक नकारात्मक उदाहरण पेश आया। अब दुनिया के किसी भी देश में समाजवादी व्यवस्था का अस्तित्व नहीं है और इन दो नकारात्मक अनुभवों से सबक लेकर समाजवादी क्रांतियों को और आगे बढ़ाने व मजबूत बनाने का काम का जिम्मा सच्चे कम्युनिस्टों के कंधे पर आ पड़ा। इस महत्वपूर्ण काम को सही तौर पर निभाने के लिए दुनिया के कम्युनिस्टों को खुद को तैयार करना-ही होगा और इसलिए महान माओ द्वारा चीन में समाजवाद को मजबूत बनाने हेतु जो भी नीतियों को सूत्रबद्ध किया गया उसे गहराई से अध्ययन करना पड़ेगा और क्रियान्वयन करना होगा। समाजवाद की जीत की दिशा भी स्पष्ट तौर पर आगे बढ़ाने के लिए सारे कुछ को तैयार करना होगा।

रूसी समाजवादी क्रांति का विश्वजनीन तात्पर्य को आत्मसात करें

खूब संक्षेप में कहने से महान रूसी समाजवादी क्रांति का तात्पर्य निम्नरूप है:

(अ) विदित है कि वर्ग समाज उद्‌भव के बाद समूची दुनिया के सामाजिक विकास का इतिहास वर्ग संघर्षों का इतिहास रहा है। इस इतिहास के अंदर महान रूसी अक्टूबर समाजवादी क्रांति एक युगांतकारी घटना है! क्यों यह युगांतकारी घटना है? क्योंकि रूसी समाजवादी क्रांति के जरिए पूर्व में हुए तमाम विद्रोह व क्रांति के साथ एक सुस्पष्ट विभाजन रेखा भी खींची गयी। जैसे: रूसी क्रांति के पहले मानव समाज में जितने भी विद्रोह या क्रांतियां हुई, महान माओ के अनुसार, वे सब पुरानी बुर्जुआ जनवादी क्रांति का हिस्सा थी जिसका मूल मकसद था बुर्जुआ वर्ग के नेतृत्व में बुर्जुआ समाज या पूंजीवादी समाज की स्थापना करना; और बुर्जुआ वर्ग मजदूर-किसान को लामबंद कर सशस्त्र उपायों में बुर्जुआ क्रांति के जरिए खुद के वर्ग स्वार्थ में ही सामंती समाज को चकनाचूर करते हुए बुर्जुआ या पूंजीवादी समाज की स्थापना करना। पर, उसने देख लिया कि पूंजीवादी समाज स्थापित होने के बाद मजदूर-किसान चुपचाप नहीं बैठे रहे। बल्कि, आगे आकर 1917 में रूसी समाजवादी क्रांति के जरिए बुर्जुआ या पूंजीपति वर्ग को ही उखाड़ फेंका और मजदूर राज की स्थापना कर लिया। इससे आतंकित होकर बुर्जुआ वर्ग 1917 के बाद से और कहीं भी बुर्जुआ क्रांति का झण्डा नहीं लहराये। यानी बुर्जुआ वर्ग बुर्जुआ क्रांति का जिम्मा और नहीं निभाया। अब यानी 1917 के बाद से बुर्जुआ क्रांति के जरिए सामंतवाद को कब्र में डालने का जिम्मा मजदूर वर्ग के कंधे पर-ही आ पड़ा। जिसे राष्ट्रीय व जनवादी क्रांति यानी नई जनवादी क्रांति के रूप में कामरेड माओ ने परिभाषित किया; और महान रूसी क्रांति के बाद जितने भी क्रांतियां हुई तथा हो रही हैं, वे सब के सब सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में विश्व सर्वहारा क्रांति का हिस्सा बन गया है। और विश्व सर्वहारा क्रांति की दो धाराएं हैं, पहला समाजवादी क्रांति और दूसरा है नई

जनवादी क्रांति। समाजवादी क्रांति का मूल मकसद है मजदूर वर्ग के अधिनायकत्व के अधीन समाजवादी समाज और नई जनवादी क्रांति का मूल मकसद है मजदूर वर्ग के नेतृत्व में 90 प्रतिशत जनता का जनवादी अधिनायकत्व के अधीन नई जनवादी समाज की स्थापना करना; और बाद में नई जनवादी समाज को आगे बढ़ाते हुए सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के अधीन समाजवादी समाज की स्थापना करना;

(आ) क्रांति की मूल बात है राजसत्ता पर कब्जा जमाना जो बहुत ही तात्पर्यपूर्ण है। जिसे हमें हरगिज नहीं भूलना चाहिए।

रूसी क्रांति की धारावाहिकता के अभिन्न अंश के रूप में ही हुई चीनी क्रांति और रूसी व चीनी क्रांति की धारावाहिकता के अभिन्न अंश के रूप में ही जारी भारतीय क्रांति

हमें मालूम है कि साम्राज्यवाद के युग में सर्वहारा क्रांतियों के अनुभवों का निचोड़ निकालते हुए चीन की विशेषताएं और क्रांतिकारी युद्ध के बारे में माओ ने कहा, ''सशस्त्र बल द्वारा राजसत्ता छीनना, युद्ध द्वारा मसले को सुलझाना, क्रांति का केन्द्रीय कार्य और सर्वोच्च रूप है। क्रांति का यह मार्क्सवादी-लेनिनवादी उसूल सर्वत्र लागू होता है, चीन पर और अन्य सभी देशों पर लागू होता है।

लेकिन उसूल एक ही होने पर भी जब सर्वहारा वर्ग की पार्टी उसे अमल में लाती है तो वह अलग-अलग परिस्थितियों के अनुरूप उसकी अभिव्यक्ति के अलग-अलग तरीके अपनाती है। पूंजीवादी देश, जब वे फासिस्टवादी नहीं होते अथवा युद्ध में उलझे नहीं होते तो वे अपने देश के भीतर बुर्जुआई-लोकशाही पर अमल करते हैं; अपने वैदेशिक संबंधों में वे दूसरे राष्ट्रों के उत्पीड़न का शिकार नहीं होते बल्कि खुद दूसरे राष्ट्रों का उत्पीड़न करते हैं। उनकी इन विशेषताओं के कारण, पूंजीवादी देशों के सर्वहारा वर्ग की पार्टी का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह दीर्घकालीन कानूनी संघर्ष के जरिए मजदूरों को शिक्षित करे तथा अपनी शक्ति का संचय करे और पूंजीवाद का तख्ता अंतिम रूप से उखाड़ फेंकने के लिए तैयारी करे। उक्त देशों में मसला यह है कि दीर्घकाल तक कानूनी संघर्ष चलाया जाय, पार्लियामेंट को एक मंच के रूप में इस्तेमाल किया जाय, आर्थिक व राजनीतिक हड़तालें की जाएं, ट्रेड यूनियनों को संगठित किया जाए और मजदूरों को शिक्षित किया जाए। उन देशों में संगठन का रूप कानूनी

होता है और संघर्ष का रूप रक्तपातहीन (गैर-फौजी)। युद्ध के मसले के बारे में, पूंजीवादी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां अपने खुद के मुल्कों द्वारा छेड़े गए साम्राज्यवादी युद्धों का विरोध करती हैं; अगर इस प्रकार के युद्ध हो तो इन कम्युनिस्ट पार्टियों की नीति ऐसी होती है जो अपने देश की प्रतिक्रियावादी सरकारों को पराजित करने में सहायक हो। जो युद्ध वे करना चाहती हैं, वह गृहयुद्ध होता है जिसकी वे तैयारी कर रही है। लेकिन यह बगावत और युद्ध तबतक नहीं छेड़ना चाहिए जब तक पूंजीपति वर्ग वास्तव में असहाय नहीं हो जाता, जब तक सर्वहारा वर्ग का बहुसंख्यक जन-समुदाय सशस्त्र विद्रोह करने और युद्ध चलाने के लिए संकल्पबद्ध नहीं हो जाता, तथा जब तक किसान जन-समुदाय स्वेच्छा से सर्वहारा वर्ग को मदद नहीं देता। और जब इस प्रकार की बगावत और युद्ध का समय आ जाएगा, तो पहला कदम यह होगा कि शहरों पर कब्जा कर लिया जाए और फिर देहातों की तरफ बढ़ा जाए, न कि इसके विपरीत कदम उठाया जाए। पूंजीवादी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों ने ऐसा ही किया है, तथा रूस की अक्टूबर क्रांति ने इस बात को सही साबित कर दिया है।

''लेकिन चीन एक भिन्न प्रकार का देश है। चीन की विशेषता यह है कि वह एक स्वाधीन जनवादी देश नहीं है, बल्कि अर्द्ध-औपनिवेशिक और अर्द्ध-सामंती देश है; अंदरूनी तौर पर चीन में लोकशाही का अभाव है और वह सामंती उत्पीड़न का शिकार है, तथा उसके वैदेशिक सम्बंधों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता का अभाव है और वह साम्राज्यवादी उत्पीड़न का शिकार है। इस प्रकार यहां न तो इस्तेमाल करने के लिए कोई पार्लियामेंट है, और न मजदूरों को हड़ताल के लिए संगठित करने के लिए कोई कानूनी अधिकार ही। बुनियादी तौर पर, यहां कम्युनिस्ट पार्टी के सामने न तो यह कार्य है कि वह बगावत अथवा युद्ध शुरू करने से पहले एक लम्बे अरसे तक कानूनी संघर्षों के दौर से गुजरे, और न यह कि पहले शहरों पर कब्जा कर लिया जाए और फिर देहातों पर अधिकार किया जाए। उसके सामने जो कार्य है वह इसके एकदम उल्टा है।'' (उद्धरण- माओ के 'युद्ध और रणनीति की समस्याएं' नामक लेख से)। इस रूप से दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए ही 1949 में महान माओ के नेतृत्व में चीनी क्रांति सफल हुई।

अनुभव हमें सिखाया है कि महान रूसी अक्टूबर समाजवादी क्रांति अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग और जनता के क्रांतिकारी संघर्षों की अनिवार्य परिणति

थी तथा महान चीनी क्रांति उसी प्रक्रिया की धारावाहिकता थी। अब हमारी भारतीय क्रांति भी अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग और जनता के क्रांतिकारी संघर्षों का अभिन्न अंग है। अतः भारतीय क्रांति का भी केन्द्रीय कार्य सशस्त्र बल द्वारा राजनीतिक सत्ता पर कब्जा जमाना है। भारत में भी सर्वहारा वर्ग की पार्टी यानी कम्युनिस्ट पार्टी के लिए विश्व समाजवादी क्रांति के अनुभवों का, खासकर रूस और चीन की दो महान क्रांतियों के अनुभवों का अध्ययन करना नितांत अनिवार्य है।

चूंकि, भारत एक अर्द्ध-औपनिवेशिक व अर्द्ध-सामंती देश है, इसलिए यहां की क्रांति के लिए जो तरीका अपनाना होगा, वह है, ''यदि कोई देश किसी साम्राज्यवादी शक्ति या शक्तियों द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शासित हो और एक ऐसा अर्द्ध-सामंती देश हो जहां कि जनता को कोई आजादी या जनवादी अधिकार नहीं हो, वहां सर्वहारा वर्ग की पार्टी बिल्कुल शुरू से ही जनता को सशस्त्र संघर्ष के लिए जागृत और गोलबंद करती है। क्रांति की प्रधान शक्ति के रूप में किसान वर्ग रहती है, क्रांति, पिछड़े हुए क्षेत्रों को अपने कामकाज का मुख्य केन्द्र बनाती है, जनसेना और जनमिलिशिया का निर्माण करती है, विस्तीर्ण देहाती क्षेत्रों में निर्भरयोग्य, मजबूत और आत्मनिर्भर आधार क्षेत्रों या मुक्त इलाकों की स्थापना करती है, दीर्घकालीन लोकयुद्ध के दौर से उनका निरंतर विस्तार करती है और प्रतिक्रियावादियों की राजसत्ता पर निर्णायक व विध्वंसक प्रहार करने के जरिए शहरों को घेरकर उनपर अंतिम रूप से कब्जा जमा लेती है तथा समूचे देश में जनता की राजनीतिक सत्ता व राज्य-व्यवस्था की स्थापना करती है।''

भारत में लम्बे समय से चली आ रही विभिन्न रूपों की संशोधनवादी लाइन व कार्यक्रम की पृष्ठभूमि में संसदीय चुनाव पर हमारा एक सही दृष्टिकोण व उस अनुसार कार्यक्रम होना बहुत जरूरी है। इस पर हमारा रणनीति-कार्यनीति दस्तावेज में लिखित अंश के अंतर्वस्तु को गहराई से आत्मसात करना चाहिए और उस अनुसार स्लोगन व कार्यक्रमों को भी तैयार करना चाहिए। हमें याद रखना है कि चुनाव में भाग लेना या बहिष्कार करने का सवाल अवश्य-ही कार्यनीति से संबंध रखता है। लेकिन ख्रुश्चेव संशोधनवाद के उद्‌भव के बाद, जब संसदीय रास्ता और और चुनाव में भागीदारी आधुनिक संशोधनवाद की रणनीति बन गई है, तब इस पहलू के मद्देनजर हम इस सवाल को महज कार्यनीतिक मामला कहकर नजरअंदाज नहीं कर सकते। साथ ही ''अभी पार्टी

पहाड़-जंगल इलाके की थोड़ी-सी जगह के अंदर सिमट कर रह गयी है'', ''बहुत सारी जगहों या प्रांतों में पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था हावी हो गयी है'', ''संसदीय व्यवस्था या चुनाव पर जनता में मोह है''- इत्यादि तर्कों तथा दलीलें बेबुनियाद हैं और भारत की ठोस जमीनी वास्तविकताओं से इनका कोई लेना-देना नहीं है।

हमारे देश में ''अब तक के ऐतिहासिक अनुभव ने सिर्फ यही साबित किया है कि जिन्होंने चुनाव में भाग लिया उनमें से अधिकांश या तो संशोधनवादी हो गये हैं या उन्होंने क्रांतिकारी सशस्त्र संघर्ष को कानूनी और शांतिपूर्ण मार्गों पर भटका दिया। अत: निष्कर्ष के बतौर हम यह कह सकते हैं कि चुनावों का बहिष्कार हालांकि कार्यनीति का सवाल है, पर भारतवर्ष की ठोस परिस्थितियों में यह रणनीति का महत्व प्राप्त कर लेता है क्योंकि चुनावों में भागीदारी दीर्घकालीन लोकयुद्ध की रणनीति से बिल्कुल ही मेल नहीं खाती।

अत: खूब संक्षेप में कहने से हमें अवश्य-ही भारत की नई जनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए सशस्त्र कृषि-क्रांति तथा दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते पर अडिग रहना होगा।

रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ पर शपथ लें

भारतीय नई जनवादी क्रांति को सफल करें, अपना फौरी, प्रधान व केन्द्रीय कर्तव्य पर अडिग रहें

रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ मनाने के दो तरीके होते हैं- एक पेटी-बुर्जुआ संशोधनवादी तरीका और दूसरा क्रांतिकारी तरीका। संशोधनवादी तरीका का मतलब केवल दिखावे के रूप में रूसी क्रांति का और का. लेनिन-स्तालिन का जयगान करना, कुछ लम्बा-चौड़ा भाषण देना, पर व्यवहार में उसे कतई लागू नहीं करना। और क्रांतिकारी तरीका का मतलब है केवल दिखावे के रूप में नहीं, बल्कि रूसी क्रांति के तात्पर्य को यानी क्रांति के जरिए सत्ता पर काबिज होने का कर्तव्य को अपना-अपना देश की विशेषता के अनुसार आगे बढ़ाने की शपथ लेना। इसलिए हमें अवश्य-ही संशोधनवादी तौर-तरीके का कड़ा विरोध करना होगा और क्रांतिकारी तौर-तरीके के अनुसार रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ मनाना होगा।

रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ के अवसर पर हमें भी यही शपथ लेनी चाहिए ताकि भारतीय क्रांति की मौजूदा चुनौतियों का तथा मोदी सरकार की हर

फासीवादी नीति व कार्यवाहियों का साहस के साथ मुकाबला कर एक नया जनवादी भारत का निर्माण करना और समाजवाद-साम्यवाद की स्थापना के लिए पूरजोर कोशिश करना होगा।

जाहिर है कि भारत में केन्द्रीय सत्ता में आसीन ब्राह्मणीय हिन्दुत्ववादी फासीवादी आरएसएस-बीजेपी के नरेन्द्र मोदी का शासनकाल का तीन वर्ष पार हो गया। सरकारी व कॉरपोरेट नियंत्रित प्रचार यंत्र रेडियो, टीवी, पत्र-पत्रिका इत्यादि सारे कुछ के जरिए एक के बाद एक मोदी सरकार द्वारा जिन्हें उपलब्धियों के रूप में गिनाया जा रहा है, उनका व्यापक प्रचार किया जा रहा है. यह कहते नहीं थक रहे हैं कि अब भारत में गरीबी नहीं है, नौकरी का अभाव नहीं है, तमाम अभाव-अनटन खत्म होकर सभी प्रकार की समानता आ गयी है. आंकड़ों की हेराफेरी के जरिए सकल घरेलु उत्पाद में भारी वृद्धि दिखा रहे हैं, विश्व में सबसे तेज गति से विकास करनेवाली अर्थव्यवस्था के रूप में भारत के उभरने की बात कह रहे हैं. यह कह रहे हैं कि अब भ्रष्टाचार नहीं है, नोटबंदी के जरिए कालेधन पर अंकुश लगाया गया है, सब का विकास होकर अच्छे दिन भी आ गये हैं। नारियों के साथ छेड़खानी, बलात्कार, यौन उत्पीड़न इत्यादि नारी यातनाएं बहुत कम होने का ढोंग कर रहे हैं. जातिवाद, भेद-भाव के कम होने व धर्मीय अल्पसंख्यकों को हर अधिकार दिये जाने की सफेद झूठ बोल रहे हैं. 'मेक इन इंडिया', 'मैनुफैक्चरिंग हब', 'स्टार्ट अप इंडिया' इत्यादि स्लोगन देकर भारत के विकास होने, डिजिटल इंडिया, नगद रहित अर्थव्यवस्था का कार्यक्रम में बहुत तेजी आने के झूठे दावे कर रहे हैं. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का शान बढ़ा है, अमेरिका के साथ हर मामले मे घनिष्टता व सहयोग बढ़ा है, भारत भी किसी से कम नहीं की गलत समझ बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। अब केवल भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे ज्यादा खतरा बने माओवाद या माओवादी ही बचे हैं।

तथापि भारत का सही चित्र ठीक इसके विपरीत है। जैसे- गरीब और गरीब तथा अमीर और अमीर बनते जा रहा है तथा गरीब व अमीरों के बीच की खाई बहुत अधिक हो गयी है। खासकर, 2014 में मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से ही एक प्रतिशत अमीरों की सम्पत्ति 49 प्रतिशत से बढ़कर 2016 में 58. 4 प्रतिशत हो गयी। 2016 में देश के सबसे धनी 10 प्रतिशत अमीरों के पास देश के कुल सम्पत्ति में हिस्सा 80.7 प्रतिशत था। यानी बाकी 90 प्रतिशत

आबादी के पास केवल 19.3 प्रतिशत सम्पत्ति ही है (स्रोतः- क्रेडिट सुईस ग्लोबल वेल्थ डेटा बेस)। विदेशों में जमा काले धनों को 100 दिनों के अंदर लाने की मोदी की घोषणा अब 1050 दिन पार हो जाने के बाद भी उस ओर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा जा सका है यानी उसकी घोषणा टांय-टांय फिस हो गयी।

देश में नौकरी मिलने के अवसर पूरी तरह समाप्त हो रहे हैं। मुद्रास्फीति की दर में भी वृद्धि हुई है और महंगाई रोज दिन बढ़ती ही जा रही है। फिर, मोदी का 'मेक इन इंडिया' व 'मैनुफैक्चरिंग हब' का नारा असल में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रोत्साहन देना और 'डिजिटल इंडिया' का नारा भी असल में पूरे प्रशासन तंत्र को डिजिटलाइज्ड करना है, ताकि पूरे प्रशासन तंत्र पर उनका नियंत्रण बरकरार व मजबूत हो सके। मोदी सरकार कई मजदूर विरोधी व किसान विरोधी कानून लायी है। जिससे लाखों मजदूर नौकरीहीन हालत में आ गये हैं और किसान आत्महत्याएं और बढ़ हैं।

साम्राज्यवादी और दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों के हितों के लिए पूरे देश को एक ही एकीकृत बाजार के रूप में ढालने के लिए परोक्ष कर नीति को सुधार कर वस्तु सेवा कर (जी.एस.टी.) को सामने लायी गयी है। भ्रष्टाचार को उन्मूलन करने की धोखेबाजी प्रचार के साथ बड़े नोटों को रद्द कर लोगों के पास मौजूद पूरे पैसे को बैंकों में जमा कराया गया। इससे किसानों, छोटे व्यापारियों और छोटे पूंजीपतियों को झटका लगा। इससे कृषि, औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों को धक्का लगा। लोगों को अपने शेष व बचत पैसों को स्वतंत्र रूप से विनिमय करने की मौका न देकर उनके सभी पैसे बैंकों में जमा कराकर, इसके जरिए साम्राज्यवाद और दलाल पूंजीपतियों को फायदा पहुंचाते हुए डिजिटलीकरण, नगदरहित अर्थ व्यवस्था (cashless economy) स्थापित करने के लिए की जाने वाली कोशिशें आगामी दिनों में देश के मध्यम वर्ग सहित सभी तबकों पर अंतरराष्ट्रीय वित्तीय पूंजी और दलाल नौकरशाही पूंजी के हमले और बढ़ने की आसार है।

देश आर्थिक तौर पर विकसित होने की लफ्फाजी मोदी सरकार करने के बावजूद देश में औद्योगिक क्षेत्र और उत्पादन क्षेत्र (manufacturing) में मंदी की स्थिति पैदा होने के कारण बेरोजगारी, दैनिक जरूरत के चीजों की महंगाई और कृषि संकट बढ़कर इस 'विकास' के खोखलापन का भण्डाफोड़ कर रहा है।

देश में दिन ब दिन तेज होने वाले अंतरविरोधों के कारण उभरती सामाजिक आन्दोलनों को कुचलने के लिए मोदी सरकार जितने भी फासीवादी कानूनें सामने ला सकती है। इसी तरह विभिन्न नाम देकर हिन्दू फासीवादी गिरोहों का भी गठित करने और जनता पर गैरकानूनी एवं फासीवादी हमले तेज करने की आसार है।

देश के अंदर कश्मीर की जनता को सभी अधिकारों से वंचित कर एक बंदी शिविर का जीवन गुजर-बसर करने के लिए तथा बंदूक के साये में जीवन बिताने के लिए मजबूर किया गया है। ऐसाकि अत्याचार का स्वरूप इतने भयंकर है कि सेना द्वारा जीप गाड़ी में कश्मीरी युवक को बांधकर घुमाये जाने की चरम कुकीर्ति चलाया जा रहा है। पूर्वोत्तर भारत के समूचे राष्ट्रीयता की जनता का आत्म-निर्णय का अधिकार प्राप्त करने के लिए जारी आंदोलनों पर निर्मम दमनात्मक अभियान चलाया जा रहा है तथा उक्त आंदोलन को लौह बूटों तले रौंदा जा रहा है। ऐसाकि विरोध करने वाले मीडिया के लोगों को भी बख्शा नहीं जा रहा है। उनके द्वारा उठाया जा रहा प्रतिवाद या प्रतिरोधी आवाज को दबाने खातिर विभिन्न तरीके की धमकी व मुकदमा लाद दिया जा रहा है।

फिर, गोरक्षा के बहाने गोमांस रखने व खाने के आरोप लगाकर मुस्लिमों की पीट-पीटकर हत्या करने, उन्हें घायल करने की घटनाएं तो बे-रोक टोक जारी हैं और उत्तर-प्रदेश में कट्टर मुस्लिम विरोधी योगी आदित्यनाथ की सरकार के आगमन के बाद धार्मिक अल्पसंख्यक मुस्लिम जनता पर हर तरह का जुल्म-अत्याचार, दबाव, धार्मिक रीति-रिवाजों के पालन पर विभिन्न प्रकार के पाबंदी लगा दिया गया है तथा गोमांस सहित सभी प्रकार के मांस बिक्री पर प्रतिबंध और तमाम बुचड़खाने बंद कर कड़ा प्रतिबंध लगा दिया गया, ऐसाकि पशु खरीद-बिक्री को नियंत्रित करते हुए क्रूर कानून बनाए जा रहे हैं। लोगों के खान-पान व पहनावे-ओढ़ावे पर पाबंदियां लगा रहे हैं। अन्यान्य धार्मिक अल्पसंख्यकों पर भी विभिन्न प्रकार का दबाव व पाबंदी लगायी जा रही है। जिससे गरीब तबके के एक हिस्सा का रोजगार बंद हो गया है। दलितों पर अत्याचारों में कई गुना इजाफा हुआ है। सहारनपुर के दलितों पर अत्याचार इसकी ताजा मिसाल है।

मोदी सरकार के आने के बाद भारत की विस्तारवादी भूमिका को और व्यापक रूप से बढ़ा दिया गया है। पड़ोसी देशों के साथ पारस्परिक संबंध में और

ज्यादा खटास आयी है। अमरीकी साम्राज्यवादी महाशक्ति द्वारा चीन को घेरने की नीति को आगे बढ़ाने के स्वार्थ में ही मोदी सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजना व कार्यक्रम अपनाया गया है। फिलहाल, प्रधानमंत्री मोदी द्वारा असम के ब्रहमपुत्र नदी पर 9 किलोमीटर सेतु का उद्घाटन दरअसल अरुणाचल के साथ द्रुत कॉन्टैक्ट स्थापित करना है ताकि अमेरिका की 'चीन को घेरो' की योजना को आगे बढ़ाया जा सके। दरअसल भारत के राजनीतिक-आर्थिक-सांस्कृतिक -सामरिक-विदेश नीति-शासन प्रणाली सभी क्षेत्रों में फासीवादी नीति व तौर-तरीके अपनाया जा रहा है। सच कहा जाये तो पूरे भारत में पुलिस व बंदूक का राज चल रहा है।

हमारे कर्तव्य

कामरेडो, हमें यह समझ लेना होगा कि मोदी सरकार द्वारा माओवादी पार्टी व माओवादी आंदोलन को पूरी तरह कुचल डालने की योजना, निश्चित रूप से मोदी सरकार का एक प्रमुख काम के बतौर उजागर हुआ है। लेकिन, यह केवल भारत की किसी एक पार्टी की सरकार का अपना मनमौजी निर्णय नहीं है और ऐसा हो भी नहीं सकता है। क्योंकि भारत के शासक पार्टियां सामंतवाद व साम्राज्यवाद के दलाल हैं। इसलिए चाहे कोई भी पार्टी हो या किसी भी रंग की सरकार क्यों न हो, साम्राज्यवाद खासकर अमरीकी साम्राज्यवाद का निर्देशन-अनुसार एलआईसी पॉलिसी (या कम तीव्रता वाला युद्ध) के विभिन्न पहलुओं को पूरी तरह लागू कर रहे हैं। यूपीए जमाने की तुलना में अभी एनडीए जमाने में भी इन नीतियों पर और आक्रामक ढंग से अमल हो रहा है। इसलिए यह केवल मोदी सरकार गद्दी पर बैठने के बाद ही सरकार का प्रमुख काम बन गया- ऐसा नहीं है। अगर हमलोग यूपीए-1 व यूपीए-2 सरकार के जमाने पर एकबार नजर दौड़ाते हैं तो हम देख पाते हैं कि यूपीए-1 और यूपीए-2 दोनों ने ही माओवादी पार्टी व माओवादी आंदोलन को ही 'देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा' बताकर हमारी पार्टी व आंदोलन को खत्म करने के काम को सबसे प्रमुख काम के बतौर चलाया था। 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के पहले व दूसरे चरण उन्हीं सरकारों के जमाने के थे। मगर परिणाम क्या निकाला? इतिहास गवाह देता है कि वे उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने में काफी हद तक विफल रही। उल्टे, माओवादी पार्टी व आंदोलन की जड़ जनता के अंदर तक चली गयी है और हजारों कामरेडों की शहादतों के कारण हुआ भारी नुकसान झेलने के बावजूद

पार्टी अनेकों अनुभव व सबक लेकर मजबूत हुई है।

अब ब्राह्मणीय हिन्दुत्ववादी-फासीवादी मोदी सरकार द्वारा अमरीकी साम्राज्यवाद सहित अन्य तमाम साम्राज्यवादियों व प्रतिक्रियावादियों से हर प्रकार की मदद लेकर ही क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह रौंद डालने के लिए 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के तीसरे चरण की योजना को लागू किया जा रहा है। 'घेरा डालो-विनाश करो' अभियान हो या किसी भी प्रकार के दमनात्मक अभियान, सरेंडर पॉलिसी हो या मनोवैज्ञानिक लड़ाई के बतौर दुष्प्रचार चलाने की पॉलिसी, चाहे विभिन्न प्रकार के तथाकथित सुधार कार्यक्रम हो या तथाकथित विकास का ढोल पीटने का कार्यक्रम- सभी में मोदी सरकार द्वारा आमूल-चूल बदलाव लाया गया है। मोदी सरकार गद्दी पर बैठते न बैठते ही माओवादियों को उखाड़ फेंकने की घोषणा की। और ज्यादा संख्या में अर्द्धसैनिक बलों के बटालियनों को माओवादी इलाके में तैनाती की जा रही है। फिर 'अपनी ही उंगलियों से अपनी आंखें फोड़वाने' की चरम प्रतिक्रियावादी नीति के तहत कहीं 'बस्तारिया बटालियन' तो कहीं 'पहाड़ी बटालियन' या 'स्थानीय आदिवासी बटालियन' का गठन कर 'आदिवासियों को आदिवासियों के खिलाफ लड़वाने' जैसी प्रतिक्रियावादी एलआईसी पॉलिसी को बहुत वफादारी के साथ लागू किया जा रहा है।

दूसरा घृणित तरीके के बतौर यूपीए सरकार द्वारा अपनायी गयी सरेण्डर या आत्मसमर्पण पॉलिसी को उसके कथनानुसार ''और लुभावना'' बनाने के लिए पहले की अपेक्षा बहुत ज्यादा रूपए मिलने का लोभ-लालच दिया जा रहा है। कामरेड व कार्यकर्ताओं के घर-परिवार के लोगों पर आत्मसमर्पण करवाने का दबाव दिया जा रहा है और न करने पर जुल्म सहना होगा व जेलखाना में सड़ना होगा की धमकी भी दी जा रही है, बुरी तरह से कुर्की-जब्ती की कार्रवाई चलाई जा रही है।

उपरोक्त तमाम क्रांति-विरोधी पॉलिसियों का मुकाबला करने के लिए हमारा पहला व प्रधान काम है, सीसी से एसी व जन संगठनों के नेतृत्व तक रक्षा करना, पार्टी को और बोल्शेवीकरण करना तथा दुश्मन के चौतरफा हमले का मुकाबला चौमुखी जवाबी हमला के जरिए करने के लिए पूरी पार्टी कतार व लड़ाकू जनता को हर प्रकार से शिक्षित-दीक्षित करना व और बेहतर प्रतिरोधी कार्रवाई चला सके, इसलिए सैनिक प्रशिक्षण बढ़ाएं ताकि जवाबी हमले को सही मायने में जनयुद्ध के रूप में बदल दिया जा सके। हमें अवश्य-ही राजनीतिक-सांगठनिक

व सैनिक तैयारियों के काम को एक अभियान के बतौर आगे बढ़ाना होगा, सैनिक हमले का जवाबी प्रतिरोधी लड़ाई, दुष्प्रचार का जवाबी प्रचार अभियान व ज्वलंत जन-समस्याओं को लेकर जन-आंदोलन का निर्माण आदि के लिए हमें जी-तोड़ प्रयास चलाना होगा। साथ ही साथ तमाम प्रगतिशील-जनवादी शक्तियों सहित ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी शक्तियों के खिलाफ तमाम मित्र शक्तियों से मिलकर आंदोलन के निर्माण के लिए प्रयास करते रहना होगा। अखिल भारतीय स्तर पर यथासंभव शीघ्र एक संयुक्त मोर्चा या विशाल मंच का गठन कर देश की जनता के सामने रखने की जरूरत है।

कामरेडो, भारतीय क्रांति की अग्रगति के अगले दौर को भारी चुनौतीभरी परिस्थिति का सफलतापूर्वक मुकाबला करके ही हम आगे बढ़ा सकते हैं। इसलिए हमें हर प्रकार की चुनौती का मुकाबला करने हेतु सभी प्रकार की तैयारियों को पूरी करनी होगी। इसका मतलब है, उल्लिखित जितने किस्म की कर्तव्यों की बातों का जिक्र किया गया है तथा उसे पूरी तरह से कार्यान्वित करना हमारा फौरी व अहम् कर्तव्य है।

ऐसा करके ही हम क्रांति के तीन जादुई हथियार यानी पार्टी, जनसेना व संयुक्त मोर्चा के निर्माणों को सुदृढ़ व लगातार मजबूती प्रदान कर सकते हैं। हमें याद रखना है कि पार्टी को सही अर्थ में बोल्शेवीकरण किये बिना एक कदम भी हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं। आवें, हर प्रकार की कमी-कमजोरी को केवल कथनी में ही नहीं, करनी में दूर हटाने के लिए संकल्पबद्ध हो जाएं और पार्टी की अन्दरूनी एकता को आंख की पुतली जैसी रक्षा करते हुए उसे और मजबूत बनाएं तथा हर प्रकार के संशोधनवाद, चाहे 'वाम' संशोधनवाद हो या दक्षिण, उसे परास्त करते हुए पार्टी की सही लाइन, नीति व कार्यशैली का दृढ़तापूर्वक अनुसरण करें।

निस्संदेह, रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा, कठिन व जटिल है, पर मालेमा व पार्टी लाइन पर अडिग रहने से हम सारी बाधाओं को लांघते हुए भारत की नई जनवादी क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए आधार इलाकों के निर्माण के लिए 'गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध' में बदल डालो, 'पीएलजीए को पीएलए' में बदल डालो' जैसे अहम् व फौरी कर्तव्य को तेज गति से आगे बढ़ा सकते हैं।

आवें, महान शहीदों के अधूरे कार्यों व सपनों को पूरा करने हेतु साहस के साथ वर्गयुद्ध के मैदान में कूद पड़ें।

इतिहास गवाह है कि अन्तिम जीत जनता की ही होगी। रात के अंधेरे के बाद भोर की उजाला होगी ही। भारतीय क्रांति सफल होगी ही यानी पहले नव जनवादी क्रांति और इसके तुरन्त बाद समाजवादी क्रांति भी सफल होगी ही।

रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ के तात्पर्य को सही मायने में केवल भारत की नई जनवादी क्रांति में तेजी लाकर व उसे सफल बनाकर ही तथा क्रांति का अगला कदम समाजवादी समाज की स्थापना की ओर आगे बढ़ाकर ही सही रूप से मनाया जा सकता है। यही पार्टी का आह्वान है।

बोल्शेविक क्रांति - समकालीन इतिहास में उसकी महत्व

- बीआर

रूस में 25 अक्टूबर 1917 को बोल्शेविक क्रांति हुई। इस अक्टूबर क्रांति के सौवें वर्षगांठ के अवसर पर समाजवाद की स्थापन के लक्ष्य से विश्व पूंजीवादी साम्राज्यवाद का ध्वस्त करने की अक्टूबर क्रांति की स्फूर्ति को विश्व भर में मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवदी, सर्वहारा वर्ग और क्रांतिकारी जनता ऊंचा उठाते हुए मनाया जा रहा है। इस अवसर पर समाजवाद-साम्यवाद हासिल करने के लक्ष्य से मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन और माओ, पार्टी के नेता और कार्यकर्ता और क्रांतिकारी मजदूर व किसान जनता करोड़ों संख्या में अपनी जान न्योछावर किया। उन सभी अमर शहीदों के विनम्रतापूर्वक सिर झुकाकर श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे। उनकी अरमानों को पूरा करने के लिए आखरी दम तक संघर्ष को आगे बढ़ाएंगे।

इस अवसर पर आधुनिक संशोधनवादी [भाकपा, माकापा, भाकपा (मा-ले)], अवसरवाद सुधारवादी, काउट्स्कीवादी, मेन्शेविक, ट्राट्स्कीवादी और प्रतिक्रियावादी बड़े पैमाने पर दुष्प्रचार कर रहे हैं। इन सभी के दुष्प्रचार को हराना आज बहुत ही जरूरत है। क्रांति एक लगातार और गंभीर संघर्ष है। इस संघर्ष के जरिए ही ''मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद'' विकसित हुआ और भी विकसित होगा। ''मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद'' द्वारा सूत्रित वैज्ञानिक मौलिक उसूल मानव समाज में हर एक नया बदलाव का मार्गदर्शन करते रहेंगे। मालेमा उसूल और ज्ञान को आधार बनाकर, नए सामाजिक प्रयोग जब का तब नए चीजों का ग्रहण करते हुए सैद्धांतिक ज्ञान को विकसित करते हुए समय-समय पर जरूरी नए चीजों को रेखांकित करना होगा। अगर पिछले सिद्धांतों व उसूलों का आधार नहीं तो नए प्रयोगों के लिए कोई बुनियादी नहीं बनता। अगर नए प्रयोग ही नहीं तो सिद्धांत की विकास नहीं होगी। इस तरह पारिस कम्यून और रूस में अक्टूबर क्रांति, चीन में जनक्रांति, आदि कई क्रांतियां उभर कर आयी थी।

1917 अक्टूबर क्रांति की स्फूर्ति को ऊंचा उठाएं! समाजवाद की स्थापना के लक्ष्य से विश्व पूंजीवादी साम्राज्यवाद को ध्वस्त करें!

कामरेड्स लेनिन और स्तालिन अपनी रचनाओं में अक्टूबर क्रांति की महत्व के बारे में संक्षिप्त रूप से इस तरह बताया : रूस में सर्वहारा पार्टी ने कैसे

अक्टूबर क्रांति की नेतृत्व प्रदान की? वह सतही तौर पर मार्क्सवाद से सहमति जताना नहीं, बल्कि उसे वास्तविक रूप से अमल करने पर, व्यवहार से जोड़ने पर मुख्य प्राथमिकता दी। मार्क्सवाद को वास्तविक रूप से अमल करने के लिए रास्ते और पद्धतियां निर्धारण करने पर और परिस्थिति में बदलाव के साथ-साथ उन रास्तों और पद्धतियों को बदलने पर मुख्य रूप से वह अपनी ध्यान केन्द्रित किया। वह अपने निर्देशों और सूचनाओं और हिदायतों को ऐतिहासिक संदर्भों से या समानताओं से नहीं, बल्कि अपनी आसपास की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों के बारे में अध्ययन करने द्वारा रेखांकित किया। अपने गतिविधियां उल्लेखनों और कहावतों से नहीं, बल्कि व्यवहार से हासिल अनुभव पर और हर कदम को व्यवहार से जांच-पड़ताल करने पर, अपने गलतियों से सीख लेने पर, नयी जीवन का निर्माण में दूसरों को शिक्षा देने पर निर्भर होकर संचालित करती थी। यही उनके गतिविधियों में कथनों व कार्यों में अंतर नहीं होने और मार्क्स की शिक्षाओं को पूरी तरह अपनी सजीव क्रांतिकारी शक्ति के रूप में सोखने की कारण रही थी। महान शिक्षक मार्क्स ने कहा, ''मार्क्सवादी विश्व सारतत्व की विवरण देकर नहीं रुकते, वे और आगे बढ़कर उसे बदल देते हैं''। उस पार्टी की नाम थी बोल्शेविक पार्टी या कम्युनिस्ट पार्टी और उस पार्टी की नेता थे लेनिन और स्तालिन।

रूस में सर्वहारा पार्टी का गठन किन विशेष परिस्थितियों में हुआ? वे ऐसी परिस्थितियां नहीं थी जोकि यूरोप (पश्चिमी) देशों में जब मजदूरों की पार्टी स्थापना हो रही थी। यूरोप देशों में - फ्रांस और जर्मनी में - ट्रेड यूनियनों और पार्टियों को जब कानूनी दर्जा प्राप्त थी, बुर्जुआ वर्ग अधिकार को कब्जा करने के बाद वह सर्वहारा वर्ग से लोहा ले रही थी, तब मजदूरों की पार्टी का गठन हुआ। इसके विपरीत, जब रूस में क्रूर तानाशाही जारी थी, बुर्जुआ जनवादी क्रांति होने की आसार थी, तब सर्वहारा वर्ग की पार्टी का गठन हुआ। एक तरफ पार्टी के इकाइयां बुर्जुआ ''कानूनी मार्क्सवदियों से'' कचाकच भरी हुई थी और वे बुर्जुआ क्रांति के लिए सर्वहारा वर्ग को बढ़ा रहे थे। दूसरी तरफ, स्वत:प्रवृर्ती क्रांतिकारी आंदोलन की वृद्धि होने के कारण, जब तानाशाह को उखाड़ फेंखने के लिए आंदोलन को दक्षता से निर्देशित करने की एक दृढ़, मजबूत और उचित मात्रा में गुप्त संघर्षरत केन्द्रीय भाग (core) की जरूरत पड़ी थी, जारशाही सरकार के भाड़े की पुलिस ने उत्तम मजदूरों से आए हुए पार्टी कतारों का अपहरण कर रहा था।

इस तरह की परिस्थितियों में बोल्शेविकों कर्तव्य है सच्चे मार्क्सवादियों से झूठे मार्क्सवादियों को अलग करना, संघर्ष के व्यवहार से अच्छे और बुरे तत्वों को अलग करना, ठोस इलाकों में अनुभवी क्रांतिकारी कतारों को संगठित करना, उन्हें स्पष्ट कार्यक्रम और दृढ़ कार्यनीति बनाकर उपलब्ध कराना, अंत में इन कतारों को पेशेवर क्रांतिकारियों से युक्त, उचित रूप से गुप्तता का पालन करते हुए पुलिस बलों के हमलों से बचा पाने, उसी समय, उचित रूप से जनसमुदायों से संबंध रखकर, जरूरी समय पर उन्हें संघर्ष में नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम एक ही संघर्षरत संगठन में संगठित करना।

लेकिन मार्क्सवादी दृष्टिकोण से अलग रूख रखने वाले मेन्शेविकों ने समस्या को बहुत ही सरलता से निपट लिया। उनका कहना है, यूरोप देशों में सर्वहारा वर्ग के अर्थिक परिस्थितियों को बेहतर करने के लिए संघर्ष करने के क्रम में जिस तरह नान-पार्टी ट्रेड यूनियनों से मजदूरों की पार्टी उभर कर आयी है, उसी तरह रूस में भी उभर कर आएगी, ''पूंजीवादियों और सरकार के खिलाफ सिर्फ मजदूरों के आर्थिक संघर्ष'' ही पर्याप्त है, अखिल रूसी संघर्षरत संगठन का गठन करने की कोई जरूरत नहीं, समय पर अगर ट्रेड यूनियनें जागरूक नहीं होने पर नान-पार्टी लेबर कांग्रेस बुलाकर उसी को पार्टी के रूप में गठन कर सकते हैं। इस तरह की मार्क्सवादी विरोधी योजना पर अमल करने के लिए रूस की परिस्थितियों में भी कोई आधार नहीं थी।

रूस के मजदूर वर्ग और बोल्शेविक पार्टी के लिए लेनिन की महान सेवा यही थी कि वे उस समय के मेन्शेविकों के सांगठनिक ''योजना'' से उत्पन्न होने वाली खतरे को शुरूआत में ही भण्डाफोड़ कर लिया। सांगठनिक विषयों में मेन्शेविकों की ढीलापन पर उन्होंने तीव्र रूप से हमला शुरू किया। इस समस्या पर पार्टी में कार्यरत कार्यकर्ताओं की पूरी ध्यान केन्द्रित किया। पार्टी की अस्तित्व खतरे में पड़ गयी। वह पार्टी के लिए एक जीवन-मरण समस्या थी।

इस तरह की परिस्थितियों में पार्टी शक्तियों को इकट्ठा करने की केन्द्र के रूप में अखिल रूसी स्तर पर एक राजनीतिक पत्रिका निकालना, विभिन्न इलाकों में पार्टी के दृढ़ कतारों को पार्टी के नियमित ईकाइयों के रूप में संगठित करना, समाचार अखबार के मध्यम से इन कतारों को एक ही संगठन के रूप में संगठित करना, यानी उन्हें स्पष्ट रूप से परिभाषित सीमाओं में, स्पष्ट कार्यक्रम, दृढ़ कार्यनीति और एक ही लक्ष्य के साथ अखिल रूसी संघर्षरत पार्टी

के अंदर शामिल करना – यह थी लेनिन अपने प्रमुख ग्रंथों – ''क्या करना है'', ''एक कदम आगे और दो कदम पीछे'' – द्वारा विकसित की गयी योजना। इस योजना की विशेषता यही थी कि यह पूरी तरह रूसी वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप होना। व्यवहार में निमग्न बेहतरीन कार्यकर्ताओं की सांगठनिक अनुभव को लेकर दक्षता से उस योजना में साधारीकरण किया गया था। इस योजना के लिए जारी संघर्ष में बहुसंख्यक रूसी कार्यकर्ताओं ने लेनिन का अनुसरण किया। किसी दरार का मौका नहीं देते हुए एकजुटता दर्शाया। इस योजना की सफलता आपस में सहयोगिता से, फौलादी बने, विश्व में असमान कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के लिए नींव रखी।

बोल्शेविक पार्टी खुद उसकी अंदर से गैरसर्वहारा और अवसरवादी शक्तियों को निकाल नहीं देते, तो वह आंतरिक कमजोरियों से और निराशा से उबर नहीं पाते। अपनी स्फूर्ति और शक्ति को फिर से हासिल नहीं कर पाते। बोल्शेविक पार्टी की इतिहास ने साबित कर दिखाया कि बुर्जुआ शासन काल में सर्वहारा वर्ग की पार्टी अपनी अंदर और सर्वहारा के अंदर मौजूद अवसरवादी, क्रांति विरोधी और पार्टी विरोधी शक्तियों के खिलाफ जिस हद तक लड़ पाती है, उस हद तक वह बढ़कर मजबूत हो सकती है। लेनिन पार्टी विरोधी और क्रांति विरोधी शक्तियों के खिलाफ समझौता-विहीन संघर्षरत रास्ते में पार्टी का संचालित करना हजार बार सही है। उस तरह की सांगठनिक दिशा के जरिए ही बोल्शेविक पार्टी ने आंतरिक एकता और चकित कर देने वाली सम्बद्धता हासिल कर पायी थी। केरेन्स्की के शासन काल में उभरने वाली जुलाई संकट से आसानी से उबर पायी थी। अक्टूबर बगावत में मुख्य शक्ति के रूप में खड़ी हो पायी थी। किसी हिचकिचाहट से ब्रेस्ट-लिटोवस्क संधी काल के संकट से उबर पायी थी। एनटेंटे पर जीत हासिल कर पायी थी। अंत में किसी भी समय पर अपनी कतारों को पुनरगठित कर पाने की असमान लचीलता हासिल कर पायी थी। बोल्शेविक पार्टी चाहे किसी भी बड़े कर्तव्य हासिल करने के लिए हो, किसी गड़बड़ से दूर रहते हुए अपने सैकड़ो हजार सदस्यों को केन्द्रीकृत कर पायी थी।

बोल्शेविक पार्टी के अपनी प्रयास में, अपनी कार्यक्रम (रणनीति) में और कार्यनीति में राजनीतिक सारतत्व अगर रूसी वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप नहीं होते तो, उसकी नारे मजदूर-किसान जनसमुदायों को अगर जागरूक नहीं किए तो और क्रांतिकारी आंदोलन को अगर आगे नहीं बढ़ा पाए तो, वह तेजी से वृद्धि होकर मजबूत नहीं हो पाती थी। अभी इस पहलू के बारे में देखेंगे।

रूसी बुर्जुआ जनवादी क्रांति (1905) ऐसी परिस्थितियों में हुई जो कि यूरोप देशों में - उदाहरण के लिए फ्रांस और जर्मनी में - क्रांतिकारी उभारों की काल के परिस्थितियों से विपरीत थी। यूरोप देशों में क्रांतियां उस समय हुई, जब वहां पूंजीवाद के माल उत्पादन की दशा थी, वर्ग संघर्ष की विकास नहीं हुई थी, सर्वहारा वर्ग कमजोर थी, वह राशी में कम, अपने लिए अपनी पार्टी नहीं होने, अपने मांगों को तय करने में अक्षम थी, बुर्जुआ वर्ग में उचित क्रांतिकारी रूझान मौजूद थी, उनके द्वारा मजदूर-किसान जनसमुदायों के विश्वास में लेने और उन्हें राजशाह के खिलाफ संघर्ष में नेतृत्व प्रदान कर पाने की परिस्थितियां थी। इसके विपरीत रूस में क्रांति (1905) पूंजीवाद की यात्रीकारण (machine industry) की काल में, वर्ग संघर्ष की विकसित काल में, रूस के सर्वहारा वर्ग सापेक्षिक तौर पर राशी में वृद्धि होने, पूंजीवाद के जरिए संगठित होने की काल में, पहले से बुर्जुआ वर्ग के साथ उनके द्वारा कई लड़ाइयां किए जाने की स्थिति में, वह अपने लिए एक पार्टी होने की काल में, बुर्जुआ पार्टी से और एकता हासिल कर पाने की काल में, अपने वर्ग के लिए अपने मांग होने, उसी समय, रूसी बुर्जुआ वर्ग ज्यादातर सरकार के ठेकों पर निर्भर रहने की काल में, सर्वहारा वर्ग की क्रांतिकारी जोश को देखकर आतंकित होकर मजदूर-किसानों के खिलाफ सरकार और जमींदारों के साथ बुर्जुआ वर्ग एकताबद्ध हो जाने की स्थिति में हुई थी।

इस तरह की परिस्थितियों में बोल्शेविक पार्टी ने निर्णय लिया था कि सर्वहारा वर्ग रूसी क्रांति का नेतृत्व प्रदान करना होगा, किसानों को अपने इर्दगिर्द गोलबंद करना होगा, देश में संपूर्ण जनवाद की स्थापना के लक्ष्य से, अपने वर्ग हितों का भरोसा देते हुए, जारशाही और बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ एक ही समय में निर्णयात्मक संघर्ष संचालित करना होगा।

इसके विपरीत मार्क्सवाद की तिलांजलि देकर बुर्जुआ वर्ग की पिछलग्गू बनने वाले मेन्शेविकों ने समस्या को अपने हिसाब से निपट लिया : चूंकि रूसी क्रांति एक बुर्जुआ क्रांति था, इसका नेतृत्व बुर्जुआ ही करना होगा (फ्रांस और जर्मनी के क्रांतियों की ''इतिहास'' देखें), इस क्रांति पर मजदूर वर्ग अपनी प्रभुत्व कायम नहीं रख सकती। वह समझना होगा कि (क्रांति का) नेतृत्व रूसी बुर्जुआ वर्ग (जो क्रांति की गद्दारी करने वाले बुर्जुआ वर्ग को) छोड़ देना होगा। किसान जनता को भी बुर्जुआ वर्ग के देखरेख में छोड़ना होगा। सर्वहारा वर्ग सिर्फ एक अतिवामदल-विपक्षि दल के रूप में रहना होगा।

रूसी क्रांति के लिए लेनिन द्वारा की गयी महान सेवा यह थी कि उन्होंने मेन्शेविकों द्वारा उल्लेखित ऐतिहासिक संदर्भों की निरर्थकता, बुर्जुआ दया-कटाक्षों पर मजदूरों को छोड़ने वाली उनकी (मेन्शेविकों की) ''क्रांतिकारी योजना'' से बैठे हुए खतरे को भण्डाफोड़ किया। बुर्जुआ तानाशाह नहीं बल्कि मजदूर-किसानों क्रांतिकारी जनवादी अधिनायकत्व; बुलिगिन ड्युमा में भाग लेना नहीं बल्कि ड्युमा को बहिष्कार करना, सशस्त्र बगावत; इस ढांचे में सांगठनिक प्रयास जारी रखना; ड्युमा शुरू होने के बाद ''वामपंथी गठजोड़'' की भावना; केडेटों की मंत्री पद स्वीकार करना या प्रतिक्रियावादी ड्युमा को ''आसमान'' में उठाना नहीं बल्कि ड्युमा से बाहर संघर्ष के लिए ड्युमा मंच को इस्तेमाल करना; केडेट पार्टी के साथ ''गठजोड़'' बनाना नहीं बल्कि प्रतिक्रांतिकारी शक्ति के रूप में रही उस पार्टी के खिलाफ संघर्ष करना - इस तरह की कार्यनीतिक योजना को लेनिन अपने प्रमुख पर्चे - जनवादी क्रांति में सामाजिक जनवाद के दो कार्यनीति, केडेटों की विजय और मजदूरों की पार्टी के कर्तव्य - में विकसित किया।

इस योजना विशेषता यह था कि वह रूस में बुर्जुआ जनवादी क्रांति में मजदूरों के वर्ग मांगों को धारदार बनाकर मजबूत किया। समाजवादी क्रांति की मार्ग को सुगम बनाया। उसमें अंकुरित होने वाली सर्वहारा के अधिनायकत्व की भावना निहित थी। बहुसंख्यक रूसी मजदूरों ने दृढ़, स्थिर और किसी बदलाव किए बिना इस कार्यनीतिक योजना को अमल करने की संघर्ष में लेनिन को अनुसरण किया। बोल्शेविक पार्टी उस क्रांतिकारी कार्यनीति की नींव रखने के कारण ही इस योजना सफल होकर वर्तमान वह विश्व पूंजीवादी साम्राज्यवाद की आधार शिलाओं को हिला रही है।

उसके बाद हुई बदलावों; चार वर्ष के साम्राज्यवाद युद्ध, पूरे देश (रूस) की अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो जाना; फरवरी क्रांति, द्वंद्वाधिकार उभर कर सामने आना; अस्थायी सरकार बुर्जुआ प्रतिक्रांतिकारी गतिविधियों के केन्द्र के रूप में तब्दील हो जाना; सर्वहारा अधिनायकत्व के शुरूआत के रूप में पेत्रोग्राद के सोवियत प्रतिनिधि उभर कर आना; अक्टूबर क्रांति, संविधान संभा तितर-बितर हो जाना; बुर्जुआ संसदवाद की खत्मा; सोवियत संघ की घोषणा; साम्राज्यवाद युद्ध गृहयुद्ध में परिवर्तित हो जाना; सर्वहारा क्रांति के खिलाफ विश्व साम्राज्यवाद मार्क्सवादी गद्दारों से मिलकर हमला करना; संविधान सभा से चिपक जाने वाले मेन्शेविकों की दयनीय स्थिति - ये सब इसे साबित कर दिखाया कि लेनिन अपनी ''दो कार्यनीति'' में बनायी गई क्रांतिकारी उसूल सही थी। उस तरह की

विरासत को ऊंचा उठाने वाली बोल्शेविक पार्टी ने पानी में डुबे हुए बड़े-बड़े पत्थरों से डरे बिना, उसे बचते हुए हिम्मत के साथ तैरते हुए आगे बढ़ी। अक्टूबर क्रांति ने सर्वहारा क्रांति की जीत के लिए एक स्पष्ट लक्ष्य (एक कार्यक्रम) और दृढ़तापूर्ण कार्यदिशा (कार्यनीति) के साथ सही नेतृत्वकारी भूमिका को विकसित किया। उसी तरह बुर्जुआ वर्ग और साम्राज्यवाद की पक्ष का समर्थन करने वाली दूसरी इंटरनेशनल और मेन्शेविक की संशोधनवादी नेतृत्वकारी भूमिका को हरा कर उसे नकार दिया। सर्वहारा क्रांति में और सर्वहारा की पार्टी में नेतृत्वकारी भूमिका को कायम करने के लिए सैद्धांतिक पकड़ होने के साथ-साथ उसे सर्वहारा के संगठन के व्यवहार से मिलने वाली अनुभव से जरूर जोड़ देना चाहिए। ऐसा करने के साथ-साथ व्यवहार में सर्वहारा वर्ग के गुण - जैसे फौलादी बनाना, बगावतों के अवसर पर दृढ़तापूर्वक आत्मबलिदान देना और धैर्य - को परीक्षण में लगाया गये थे।

इसलिए सभी क्रांतियों की किरीटमान है 1917 में रूसी हुई अक्टूबर क्रांति। उससे पहले इतिहास में हुई सभी क्रांति से राशी में और गुण में गुणात्मक रूप से वह उच्च स्तर के क्रांति के रूप में खड़ी है। बोल्शेवीवाद न सिर्फ रूसी क्रांति की, बल्कि विश्व के सभी क्रांतियों का ठोस और सही मार्गदर्शन किया। इसलिए लेनिन ने कहा : ''बोल्शेवीवाद न सिर्फ विश्व बोल्शेवीवाद के रूप में उभर कर आयी, बल्कि वह एक विचार, एक सिद्धांत, एक कार्यक्रम और कार्यनीति को - सामाजिक अंधराष्ट्रवाद और सामाजिक शांतिवाद के विकल्प में बनाया।'' ''बोल्शेवीवाद तीसरी इंटरनेशनल रूप में तब्दील हुई, सही सर्वहारा कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के रूप में उसके सैद्धांतिक और कार्यनीतिक आधारों को बनाया।'' ''बोल्शेवीवाद साम्राज्यवाद की युद्ध वीभत्सों से सही मुक्ति पाने की रास्ता दर्शाया''।

''सिर्फ बोल्शेविकों ने ही बुर्जुआ जनवादी क्रांति और समाजवादी क्रांति के बीच अंतर ठोस रूप से पहचान किया, पहली क्रांति को अंतिम तक पहुंचाकर, दूसरी क्रांति की द्वारों को खोल दिया। सिर्फ यही है क्रांतिकारी मार्क्सवाद''। (लेनिन, सर्वहारा क्रांति-क्रांति का गद्दार काउटस्की)।

मार्क्स और एंगेल्स के निधन के बाद, लेनिन अंतराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के महान नेता के रूप में, विश्व सर्वहारा वर्ग-उत्पीड़ित जनता के महान शिक्षक के रूप में उभर कर आए थे। 19वीं सदी की अंत और 20वीं सदी के शुरूआत में लेनिन जब अपनी क्रांतिकारी गतिविधियां शुरू की, तब

दुनिया साम्राज्यवाद, सर्वहारा क्रांति युग में प्रवेश कर रही थी। लेनिन, साम्राज्यवाद और सभी तरह के अवसरवादों, विशेषकर दूसरी इंटरनेशनल की संशोधनवाद के खिलाफ कई संघर्ष चलाया, मार्क्सवाद की विरासत को खड़ा कर, उसे बचाया और विकसित किया एवं उसे नयी और उच्च चरण लेनिनवाद के रूप में विकसित किया। इसके बारे में स्तालिन ने कहा, ''लेनिनवाद साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांतिकारी युग की मार्क्सवाद है''। लेनिन, साम्राज्यवाद के अंदर अंतरविरोधों का विश्लेषण कर, उसे संचालित करने वाली उसूल का भण्डाफोड़ किया। साम्राज्यवादी युग में सर्वहारा क्रांति से संबंधित कई मुख्य समस्याओं को सुलझा लिया। ''एक या उससे ज्यादा देशों में जीत हासिल करने'' द्वारा समाजवाद की समस्या को सुलझा लिया। मानव इतिहास में एक नया युग का शुरूआत किया। सर्वहारा क्रांति के लक्ष्य के लिए लेनिन द्वारा की गयी सैद्धांतिक और व्यावहारिक संशोधन बहुत ही महत्वपूर्ण है।

लेनिन का निधन के बाद, स्तालिन देश और विदेशों के वर्ग दुश्मनों और पार्टी में दक्षिणपंथी और वामपंथी अवसरवादियों के खिलाफ संचालित संघर्षों में लेनिनवाद की विरासत को ऊंचा उठाया और उसे बचा लिया। उन्होंने समाजवादी रास्ते में सोवियत जनता को आगे बढ़ाते हुए महान सफलताएं हासिल किया। दूसरी विश्व युद्ध के काल में सोवियत जनता स्तालिन के मातहत फासीवादी दुराक्रमण को हराने में मुख्य शक्ति बनी। मानव इतिहास में लम्बे समय तक खड़े होने वाली महान प्रयास किया।

माओ स्ते-तुङ ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद सिद्धांत को जोड़ते हुए चीनी क्रांति की मुख्य समस्याओं को रचनात्मक रूप से सुलझा लिया। बहुत ही लम्बे, गम्भीर, कठिन और जटिलतापूर्ण क्रांतिकारी आंदोलनों में और क्रांतिकारी युद्धों में जनता को नेतृत्व प्रदान किया। विश्व सर्वहारा के क्रांतिकारी इतिहास में अभूतपूर्व तरीके से पूर्वी एशिया इलाके के विशाल देश चीन में जनक्रांति में जीत हासिल किया। मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सार्वजनिक सच्चाई और चीनी क्रांति के ठोस व्यवहार के बीच एकता पर निर्भर होकर माओ ने चीनी इतिहास, उसकी वास्तविक परिस्थितियों को समकालीन चीनी सामाज की मौलिक अंतरविरोधों को विश्लेषण किया। चीनी क्रांति की आक्रमण के लक्ष्य, उसकी कार्यभार, उसकी प्रेरक शक्तियां, उसकी स्वरूप, उसकी भविष्य, भविष्य में उसकी दिशा आदि समस्याओं का सही जवाब दिया। माओ ने बताया कि चीनी क्रांति 1917 अक्टूबर क्रांति का ही अगला रूप है और वह विश्व सर्वहारा समाजवादी क्रांति

का हिस्सा है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा (अभी माओवाद) की समयकाल में समाजवाद को संगठित करना, आधुनिक संशोधनवाद के साथ लड़ना, पूंजीवाद की पुनःस्थापना को रोकने के लिए महान सर्वहारा के सांस्कृतिक क्रांति को संचालित करने वाले माओ की प्रयास महत्वपूर्ण था। इस तरह उन्होंने समाजवाद से सर्वहारा अधिनायकत्व में कई सांस्कृतिक क्रांतियों (वर्ग संघर्षों) द्वारा समाजवाद तक पहुंचने का रास्ता सुमग बनाया।

दूसरी विश्व युद्ध के बाद दुनिया के परिस्थितियों में कई बदलाव आए थे। उस युद्ध में बहुत बड़ा साम्राज्यवादी शक्तियों (अमेरिका को छोड़कर) के अर्थव्यवस्थाएं बड़े पैमाने पर ध्वस्त हुई। उन्होंने अमेरिकी साम्राज्यवाद अर्थव्यवस्था पर निर्भर होकर 1950 के बीच तक फिर से बहाली हो गयी। 1955-1970 के बीच विश्व पूंजीवादी व्यवस्था में आंशिक तौर पर स्थिरता कायम हुआ। अमेरिकी साम्राज्यवाद महाशक्ति के रूप में उभर कर आयी। समाजवादी शिविर अस्तित्व में आयी। दूसरी विश्व युद्ध के बाद, एक दशक तक चली आयी क्रांतिकारी संकट की पृष्ठभूमि में उपनिवेशों और अर्धउपनिवेशों में अभूतपूर्व ढंग से जन-उभार आया, जिससे साम्राज्यवाद परेशान होकर अपनी दुम दबाकर भागना पड़ा। वह प्रत्यक्ष रूप से औपनिवेशिक शासन और बटमारी लूट के स्थान में उत्पीड़ित देशों की सम्पदाओं को लूटने के लिए परोक्ष शासन, लूट और नियंत्रण के नए औपनिवेशिक नीतियों को सामने लाया। इन उत्पीड़ित देशों के दलाल शासक वर्गों के अपने पिछलग्गुओं द्वारा साम्राज्यवाद ने व्यापक उत्पीड़ित जनता के पीठ पर अपनी संकट के बोझ लगाकर सारे के सारे देशों की शोषण जोर किया।

लेकिन, इतिहास का अपनी ही उतार-चढ़ाव, हार-जीत, टेढ़ा-मोड़ा, वापस आना-आगे बढ़ाना, पीछे हटना-छलांग लगाना होगा। इसके तहत मार्क्सवाद महान शिक्षक एंगेल्स का निधन के बाद मार्क्सवाद की तिलांजलि देकर विश्वासघाती बेरनेस्टीन-काउटस्की की संशोधवाद का उद्‌भव हुआ। स्तालिन का निधन के बाद मार्क्सवाद-लेनिनवाद की तिलांजलि देकर विश्वाघाती ख्रुश्चेव-ब्रेजनेव ने सशोनवादी बनकर, सोवियत यूनियन में पूंजीवाद की पुनःस्थापना करते हुए, लेनिन के नाम पर, 'सामाजवाद-युक्त' साम्राज्यवाद, सामाजिक-फासीवाद और सामाजिक-सैनिकवाद को सामने लाया। वह एक महाशक्ति के रूप में तब्दील होकर, पूरी तरह अधिपत्यवाद को लेकर नयी औपनिवेशिक तरह की लूट को आगे बढ़ाया। माओ का निधन के बाद मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा

को तिलांजलि देकर विश्वासघाती हुआ-डेङ ने संशोधनवादी बनकर चीन में पूंजीवाद की पुनःस्थापना किया। वह अभी माओ विचारधारा नाम को जप-माला की तरह जपते हुए एक नयी सामाजिक-साम्राज्यवाद के रूप में बदल गयी। वह विश्व के मजदूर-किसान आदि उत्पीड़ित जनता और राष्ट्रों का दुश्मन बन गयी।

पूंजीवाद में सार्वजनिक संकट 1973 से तेज हो जाने की पृष्ठभूमि में विश्व राजनीति में महान बदलाव हुई हैं। इसके तहत आखरी समाजवादी स्थावर के रूप में रही चीन पीछे हटने के कारण समाजवादी स्थावर को खो गए थे। महाशक्ति के रूप में सोवियत संघ की पतन और उसकी राजनीतिक पतन हुई थी। अमेरिकी महाशक्ति कमजोर होती आई है। रूसी साम्राज्यवाद आर्थिक और राजनीतिक तौर पर थोड़ा बहाल हो गया है। चीन एक नयी सामाजिक-साम्राज्यवाद के रूप में पटल पर आ चुकी है। साम्राज्यवादी देशों में और पूंजीवादी देशों में आर्थिक क्षेत्र में रक्षात्मक नीति (protectinism), राजनीतिक क्षेत्र में रंगभेद (नस्लवाद), फासीवाद बढ़ गया है। पिछड़े देशों के संसाधनों और बाजारों को लूटने के लिए साम्राज्यवादी देशों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ गया है। दुनिया को फिर से विभाजित करने के लिए अमेरीका और चीन के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ गया है। यूरोप में अपनी प्रभुत्व को कायम रखने के लिए जर्मनी और फ्रांस के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ गया है। विश्व भर में फासीवाद बढ़ रही है। विश्व बाजार पर और संसाधनों पर अपने ही विशेष नियंत्रण के लिए अमेरिकी नेतृत्व में साम्राज्यवादी दुराक्रमण युद्ध और परोक्ष युद्ध जारी है। परिणास्वरूप विश्व भर में विकसित हो रहे क्रांतिकारी आंदोलनों के लिए अनुकूल परिस्थितियां दिन ब दिन बढ़ते जा रहे हैं। दूसरी विश्व युद्ध के बाद देश आजादी, राष्ट्र मुक्ति और जनता क्रांति चाहने की समय में क्रांतियों से भटकाने के लिए साम्राज्यवादियों और उनके पिछलग्गुओं एंव उनके हितों के लिए प्रयासरत कुछ बुद्धिजीवी ''कल्याणकारी राज्य'', ''सम्पदाओं से भरे-पड़े समाज या ऐश्वर्य समाज'', ''जनता की पूंजीवाद'', ''विशेष कल्याण-कार्य'' जैसे कई तरह के नामों से सामने लाए गए सभी धोखेबाजी सुधारवादी लाइनों (कार्य-दिशा) का जन आंदोलन में भण्डाफोड़ और विफल हो चुकी हैं।

इस तरह दूसरी विश्व युद्ध के बाद अभी तक कई बदलाव आने के बावजूद, साम्राज्यवाद कमजोर हो जाने के बावजूद साम्राज्यवाद चरण की अंत नहीं हुई। उसी तरह साम्राज्यवाद जैसे काउट्स्की ने कहा 'अति-साम्राज्यवाद' या 'उत्कृष्ट साम्राज्यवाद' के रूप में, बिना-युद्धवाली साम्राज्यवाद के रूप में तब्दील

नहीं हुई। लेकिन वर्तमान दुनिया में इस तरह काउट्स्कीवादी, आधुनिक संशोध नवादी, सुधारवादी, कुछ बुर्जुआ व पेटीबुर्जुआ बुद्धिजीवियों में ऐसा भ्रम एक रूझान की रूप में जारी है। विश्व पूंजीवादी साम्राज्यवाद को जब तक पूरी तरह नष्ट नहीं करेंगे, तब तक उसकी अंत नहीं होगी। जब तक साम्राज्यवाद रहेगी, तब तक उसकी स्वभाव कभी नहीं बदलेगी। इस अवसर पर माओ द्वारा उल्लेखित निम्न लिखित इस उसूल को याद रखना उचित होगा, ''हम अभी भी साम्राज्यवादी चरण और सर्वहारा क्रांति के चरण से गुजर रहे हैं। मार्क्सवाद के मौलिक उसूलों पर निर्भर होकर साम्राज्यवाद के बारे में लेनिन द्वारा सूत्रबद्ध वैज्ञानिक विश्लेषण पूरी तरह सही है। लेनिनवाद के इस मौलिक उसूल अभी पुराना नहीं हुई''। मार्क्सवाद के महान शिक्षक लेनिन और माओ द्वारा शिक्षित इस उसूल अभी भी हमारे सिद्धांत और कार्यप्रणाली का अधार बनी हुई है।

आज भारत वर्ष में लेनिनवाद की तिलांजलि देनेवाली गलत संशोधनवादी सिद्धांत को हराएंगे!

भारत वर्ष में पुराने और नए संशोधनवादियों द्वारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद के नाम पर सामने लाने वाली सिद्धांत निम्न लिखित बिन्दिुओं पर आधारित है : 1) वह साम्राज्यवादी युद्ध को क्रांति की सन्निकटता का एक जरूरी शर्त मानती है। वह कहती है कि वही लेनिनवाद सिद्धांत का आधार है। 2) वह कहती है कि साम्राज्यवादी विश्व युद्ध नहीं होने और क्रांति का सन्निकटता नहीं होने की आज की स्थिति में, लेनिनवाद अमान्य या पुराना हो गयी है। 3) वह कहती है कि वर्तमान परिस्थिति में भारतीय वामदल, माओवादियों सहित, अवसरवाद, गैरक्रांतिकारी और गठजोड़ों के आधार पर सुधारवादी कार्य-दिशा पर अमल करना है।

इस सुधारवादी कार्य-दिशा पहली विश्व युद्ध के समयकाल में काउट्स्की द्वारा सामने लायी गयी विश्वासघाती 'अति-साम्राज्यवादी' सिद्धांत के सिवा और कुछ नहीं है। इसके जरिए वे क्रांति को अनन्त काल तक टालना चाहते हैं। इस संशोधनवादी कार्य-दिशा सुधारवादी विचारों और अवसरवादी व्यवहार का एक नमूना के रूप में रहेगा। भारतीय संशोधनवादी बुद्धिजीवि प्रभात पट्नायक 2016 में 'साम्राज्यवाद के एक सिद्धांत' (A Theory of Imperialism) के नाम पर लिखित एक निबंध में इसी सिद्धांत का ही वकालत किया। पश्चिम बंगाल राज्य के विधान सभा चुनावों में वामदल-कांग्रेस गठजोड़ पूरी तरह पतन हो जाने के कुछ दिन बाद प्रकाशित उनकी इस निबंध को इस पराजयवाद की राजनीतिक

पृष्ठभूमि में ही समझना होगा। इसलिए इस सिद्धांति के जरिए प्रस्तावित विभिन्न दृष्टिकोणों और उससे जारी किए जाने वाले हिदायतों को सर्वहारा के क्रांतिकारी दृष्टिकोण से विश्लेषण कर भण्डाफोड़ करना जरूरी है। इसके लिए इस सिद्धांत के जरिए सामने लाने वाले विचारों को गहराई से जांच कर विश्लेषण करेंगे। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद की समझ से उसकी खोखलेपन को भण्डाफोड़ करेंगे।

1) साम्राज्यवादी युद्ध क्रांति का सन्निकटता का जरूरी शर्त बताकर वह सर्वहारा आंदोलन में चोरीछिपे चरणबद्ध सिद्धांत का घुसाना चाहती है : क्रांति का सन्निकटता लेनिनवादी सिद्धांत का आधार बताकर इस सिद्धांत खुद अपनी दकियानूसी और घटिया मार्क्सवादी-संशोधनवादी दृष्टिकोण का उजागर किया है। लेनिनवादी सिद्धांत के मौलिक विचार के अनुसार क्रांति का सन्निकटता होना चाहिए, लेकिन भारत वर्ष में किसी क्रांति का उभार दिखाई नहीं पड़ रहा है, इसलिए क्रांति का सन्निकटता होने तक सर्वहारा पार्टी अपनी क्रांतिकारी पद्धति में गतिविधियां नहीं करना चाहिए, कहते हुए वह सर्वहारा के आंदोलन में चोरीछिपे चरणबद्ध को घुसाना चाहती है। इस चाहती है : ''क्रांति का सन्निकटता होने तक क्रांतिकारियों ने अपना क्रांतिकारी कार्य-दिशा (लाइन) को छोड़कर, व्यवहारात्मक संसदीय राजनीति को अपनाना होगा (कमांड में रखना होगा)। बुर्जुआ और पेटीबुर्जुआ पार्टियों के साथ 'आंदोलनों और मंचों पर एकताबद्ध हो जाना चाहिए और सरकार में भी शामिल होना चाहिए'। शीघ्र ही क्रांति होगी कहकर बैठे रहना सही क्रांतिकारी व्यवहार का आधार होगा। क्रांति निकट तक पहुंचने के बाद आंदोलन को क्रांतिकारी 'पद्धति' (mode) में बदलना होगा। यानी, क्रांति का सन्निकटता का पिछले चरण में अवसरवादी समझौते, कल्याणकारी कार्यक्रमों में डुबी हुई एक क्रांतिकारी पार्टी अचानक आंदोलन की प्रणाली अपनाना होगा। क्रांति का दावत देने के बाद, 'उस दावत का पात्र होने के लिए' दूसरों को पीछे धखेलते हुए जबरदस्ती से घुसकर सामने आना होगा।'' क्रांति का सन्निकटता के बारे में इस चरणबद्ध सिद्धांत एक ऐसी पक्की रणनीति है कि वह यह कायम कर देती है कि क्रांति कभी भी सम्भव नहीं होगा। लेनिनवादी सिद्धांत के आधार के बारे में अगर सही रूप से जाना है तो, क्रांति का सन्निकटता के बारे में नहीं बल्कि, क्रांति का वास्तविकता के बारे में लेनिन की विचारधारा का सारतत्व को समझना होगा।

क्रांति का सन्निकटता एक निश्चल भावना है। वह किसी ऐतिहासिक क्रमों

से संबंध रखे बिना क्रांति निकट हो जाने की सूचना देती है। क्रांति का वास्तवितका एक गतिशील भावना है। यह इतिहास में स्थिर रूप से आने वाली बदलाव का हिस्सा है। यह - एक ऐतिहासिक क्रम में पूंजीवाद में निहित अंतरविरोध क्रमशः और स्थिर रूप से परिपक्व हो जाता है और सर्वहारा की ऐतिहासिक पार्टी का विकासित हो जाता है - इस वास्तविकता से संबंधित आत्मगत शक्ति के रूप में उसकी सर्वहारा के वर्गचेतना को सूचित करता है। क्रांति का वास्तविकता के बारे अगर जाना है तो, पूरी सामाजिक इतिहास में एक हिस्से के तौर पर हर दिन आने वाली हर एक समस्या को सर्वहारा की मुक्ति के तहत ही ठोस रूप से अध्ययन करना होगा। इसके विपरीत, क्रांति का सन्निकटता सिद्धांत क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह सामग्रिक रूप से न देखकर क्रांति का सन्निकटता से पहले की परिस्थितियां और निकट हो जाने के बाद की परिस्थितियां - के रूप में विभाजित करती है। वह इन परिस्थितियों के बीच (संबंध या) धारावाहिकता के बारे में नहीं बताती है। इन परिस्थितियों के सीमाओं पर आंदोलन उंगली से बटन दबाने के साथ-साथ सुधारवाद से क्रांतिकारी प्रणाली पर बदल जाती है। वास्तविकता क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह सामग्रिक रूप से देखती है। सन्निकटता उसको अलग-अलग भागों में विभाजित करता है और निष्क्रिय कर देता है। सन्निकटता सिद्धांत सन्निकटता से पहले की चरण में हर एक राजनीतिक समस्या को सिर्फ सुधारवादी समस्या के रूप में देखती है। इसके विपरीत, वास्तविकता का मतलब है, उस दिन सामने आने वाली हर एक समस्या को उस दिन सामने आने वाली समस्या के रूप में ही नहीं बल्कि, उसे क्रांति से संबंधित मौलिक समस्या के रूप में भी देखती है। लेनिन विचारधारा यह है कि वह 'उस दिन सामने आने वाली समस्या' 'क्रांति से संबंधित मौलिक समस्या' के बीच द्वंद्वात्मक एकता को दर्शाता है। लेनिन की राजनीतिक विचारधारा पूरी तरह फौरी राजनीतिक समस्यएं और अंतिम क्रांतिकारी आंदोलन के बीच द्वंद्वात्मक एकता से संबंधित अध्ययन ही है।

लेनिन इस तरह स्पष्ट किया कि बुर्जुआ समाज के चुपचाप एक क्रम चलती रहती है, जिसमें मथना होते हुए स्वयं उसकी विध्वंस के लिए भूमिका तैयार करती है, इस वास्तविकता के बारे में चेतनाबद्ध होकर, इस वास्तविकता का साकार करने के लिए क्रांतिकारी राजनीतिक आंदोलनों द्वारा उचित रूप में फौलादी बनने वाली आत्मगत शक्ति का विकसित करने की जरूरत को समझती है। इससे खास बात यह है कि क्रांतिकारी वास्तविकता ने क्रांतिकारी मजदूरों की

पार्टी के दैनंदिन राजनीतिक प्रयास को अपनी अंतिम लक्ष्य - सर्वहारा क्रांति से जोड़ती है। पट्नायक की धोखेबाजी (क्रांति का) सन्निकटता की सिद्धांत इस तरह की प्रयास पर किसी तरह की आशा नहीं प्रकट करती है।

लेनिन की राजनीतिक रणनीति में निहित स्थिरता में दो पहलू है : एक, लेनिन की राजनीतिक रणनीति हमेशा वर्तमान आर्थिक संबंधों को व्यापक रूप से वर्ग विश्लेषण करने पर निर्भर होती है। दो, लेनिन द्वारा तय करने वाली हर एक रणनीति उसकी अंतिम लक्ष्य के वास्तविकता यानी सर्वहारा के क्रांति का वास्तविकता द्वारा ही प्रकट होती है। लेनिन के अनुसार, सर्वहारा के अगली दस्ता के मुख्य कार्यभार ये हैं : हर एक राजनीतिक परिस्थिति में सामने आने वाले अवसरों को सामाजिक आर्थिक वास्तविकता से संबंधित वर्ग विश्लेषण पर निर्भर होकर पक्की आकलन करना, सर्वहारा आंदोलन को बहुत ही मौलिक विकास का साकार करने की दिशा में मोड़ना, वह मौलिक बदलाव हासिल करने की स्थिति तक पहुंचने में बाधा बनने वाले बुर्जुआ और पेटी बुर्जुआ वर्गों के प्रयासों के खिलाफ उसको सीधे तौर पर लक्ष्य बनाना।

लेनिन ने जब क्रांतिकारी परिस्थिति नहीं है, उस समय में कम्युनिस्टों की क्रांतिकारी कार्यभारों के बारे में सही रूप से, एक शब्द भी चुटे बिना इस तरह बताये थे : ''... गैर-क्रांतिकारी (non-revolutionary) संगठनों में क्रांतिकारी हितों (प्रचार, आंदोलन और निर्माण के जरिए) को पूरा करने की योद्धा के रूप में खड़ा होना ... वास्तविक, निर्णायक और अंतिम क्रांतिकारी संघर्ष के लिए जनता को आगे ले जाने वाली ठोस कार्य-दिशा (लाइन) या घटनाक्रम किस तरफ मोड़ती है, उस ठोस क्रम को जांच करना है, पहचान करना है, सही रूप से निर्धारण करना है।'' (लेनिन, Left-Wing Communism: an Infantile Disorder) कम्युनिस्टों ने ''जनता को वास्तविक, निर्णायक और अंतिम क्रांतिकारी संघर्ष की तरफ ले जाने वाली ठोस कार्य-दिशा (लाइन) या घटनाक्रम किस तरफ मोड़ती है, उस ठोस क्रम को जांच करने और पहचान करने के लिए'' इसपर निर्भर होकर आंदोलन की ठोस रणनीति का निर्देशन करने की प्रयास करते हैं; वही सुधारवादी सामाजिक जनवादियों ने अपनी पेटी बुर्जुआ वर्ग दृष्टिकोण के कारण अंधेरे में ढूंढने के कारण, वर्तमान को ही देखने कारण, ढुलमुल हो जाने के कारण, समझौता करने की विभिन्न विकल्पों को चुनने के कारण, 'अंतिम क्रांतिकारी संघर्ष' का वास्तविकता के प्रति किसी भी तरह की सकारात्मक विचार होने के बावजूद, उन सभी विचारों को खो जाते हैं, यथासंभव

शीघ्र, किसी असाधारण घटनाएं न हो जाए, इसके लिए वर्तमान संकट की तीव्रता को कम करने की आसानी और प्रगति-निरोधक विकल्प चुन लेते हैं।

2) साम्राज्यवादी विश्व युद्ध नहीं होने, क्रांति का सन्निकटता नहीं होने की आज की स्थिति में, क्रांति को अनन्त काल तक टालने के लिए ही लेनिनवाद को पुराना बता रहे हैं : संशोधनवादी सिद्धांतकर्ताओं की और एक रूख है, ''दूसरी विश्व युद्ध के बाद, कम्युनिस्ट खतरे उबरने के लिए पूंजीवाद ने तीन मुख्य रियायती घोषणा की : औपनिवेशिक नीति को छोड़ देना, सार्वजनिक मतदान की नीति पर निर्भर होकर जनवाद को व्यवस्थित करना, अत्यधिक रोजगार अवसर मिलने की तरह 'मांग का प्रबंधन' में राज्य के द्वारा हस्तक्षेप करना। इससे ''साम्राज्यवादियों के बीच दुश्मनी का अंत होने की युग'' उभर कर आयी। 'युद्धविहीन साम्राज्यवाद' युग में वित्तीय पूंजी सामने आयी। वह विश्व भर में स्वेच्छा से चलने के लिए विभाजित दुनिया एक रूकावट के रूप में रही है। प्रतिस्पर्धी देशों के केन्द्र के रूप में रहे इजारेदार संगठनों के बीच दुनिया को विभाजित करने के लिए युद्ध लड़ने वाली युग की, उन संगठन अपनी केन्द्र स्थान को खो जाने के कारण, का अंत हो गया है। साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच वर्तमान संधी स्थायी है। वर्तमान में जारी युद्ध साम्राज्यवादी अंतरविरोधों को प्रतिबिंबित नहीं करती है। वे कम से कम परोक्ष युद्ध भी नहीं है।'' ''लेनिनवादी सिद्धांत का आधार क्रांति का सन्निकटता है। साम्राज्यवादी युद्ध ही इस (क्रांति का) सन्निकटता का कारण है। वर्तमान में वित्तीय पूंजी पूरी तरह ऐसा कर दिया कि अभी साम्राज्यवादी वैरी-भाव नहीं होगी और साम्राज्यवाद युद्ध होने का सम्भावना नहीं है। समीप में क्रांति होने का सम्भावना नहीं है। इसलिए लेनिनवाद की सिद्धांत पुराना हो गया है।''

इस विचार मार्क्सवाद-लेनिनवाद की स्फूर्ति को पूरी तरह गलत ढंग से पेश करना और क्रांतिकारी बदलाव के बारे में मार्क्स की विचारों को नग्नता से विकृत करने के सिवाय और कुछ नहीं है। यहां पहले कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों को देखें। इससे उक्त विचार की वर्ग आधार स्पष्ट हो जाती है। 1915 में, क्रांतिकारी रास्ते में, साम्राज्यवादी पहली विश्व युद्ध विरोध नहीं करने वाली अपनी 'मध्यमार्गीय' कार्य-दिशा को, एक तरफ युद्ध जारी रहने के बावजूद, हास्यास्पद तरीके से, उनके द्वारा अपनायी गयी गलत तटस्थ नीति की बचाव में कार्ल काउट्स्की 'अति-साम्राज्यवाद' नामक अपनी सिद्धांत को सामने लाया।

'अति-साम्राज्यवादी' सिद्धांत लेनिनवाद के खिलाफ है। क्योंकि, वह पूंजीवाद व्यवस्था के अंदर ही विश्व शांति के बारे में सपना करती है। पूंजीवाद की असमान वृद्धि के कारण साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच होने वाली किसी भी समझौता दुनिया को संयुक्त रूप से लूटने की उपलक्ष्य से ही होती है। वह सापेक्षिक रूप से अपने शक्तियों पर निर्भर होती है। समय बीतते ही वह पुराना हो जाता है। बल प्रयोग के जरिए और एक समझौता सामने आती है। साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच संघर्ष और युद्ध होना उसकी स्वाभाविक लक्षण है। युद्धविराम संधी होने की समयों में उनपर रोक लगाने के बावजूद वह अस्थायी विराम ही है। पूंजीवाद व्यवस्था में स्थायी शांति असम्भव है।

दूसरी विश्व युद्ध के बाद स्पष्ट रूप से यह बदलाव दिखाई पड़ रही है कि समूची दुनिया पर वित्तीय पूंजी का प्रभाव कई गुणा बढ़ी है। इससे साम्राज्यवाद में लचीलापन बढ़ी है। इससे साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच, साम्राज्यवादी शक्तियों और अन्य देशों के बीच शत्रुता में तेजी आयी है। वर्ष 2000 के बाद, बहुत छोटे कारणों से ही दुनिया में कई जगहों पर साम्राज्यवादी शक्तियां युद्ध पर युद्ध लड़ रहे हैं। इसके बावजूद, आश्चर्य रूप से इन संशोध नवादी सिद्धांतकर्ताओं ने इन युद्धों और साम्राज्यवादियों के बीच किसी तरह की संबंध नहीं होने का दावा करते हैं। एक तरफ सिरिया में लम्बे समय से संघर्ष जारी है, विभिन्न साम्राज्यवादी गठजोड़ विभिन्न कार्यनीति को अपनाते हुए, विभिन्न हितों के लिए लड़ रहे हैं, परस्पर विरोध दलों को मदद दे रहे हैं, इसके बावजूद उनकी इस तरह की रवैया हास्यास्पद है।

उन्होंने काउट्स्की के 'अति-साम्राज्यवाद सिद्धांत' को मदद देते हुए, जानबूझकर दो पहलुओं को भुलाया जा रहा है : एक, पिछड़े देशों के खिलाफ वर्तमान साम्राज्यवाद द्वारा एकजुटता से संचालित युद्ध इजारेदार पूंजीवाद में गहराते जा रहे अंतरविरोधों का ही व्यक्तीकरण है। दो, इन संशोधनवादी सिद्धांतकर्ताओं ने अपनी संशोधनवादी दुष्टिकोण से, लेनिन की इस उसूल के पीछे निहित सही स्फूर्ति को भुलाया जा रहा है कि 'पूंजीवादी इजारेदार चरण में साम्राज्यवादों के बीच संघर्षों को रोकना असम्भव है'।

उदाहरण के लिए, चाहे, सभी साम्राज्यवादी देशों ने मिलकर एशिया के विभिन्न इलाकों को शांतिपूर्ण तरीके से 'विभाजन करने' के लिए एक गठजोड़ बनायी है। यह एक 'अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत वित्तीय पूंजी' की गठजोड़ के रूप में रहेगी। इस पर 'यकीन कर' सकते हैं? इससे दबाव, संघर्ष और युद्धों

का अंत हो सकता है? असम्भव है। क्योंकि, पूंजीवाद व्यवस्था में पूंजीपतियों का प्रभाव, हित, उपनिवेश आदि को विभाजित करने के लिए विश्वसनीय आधार इसपर ही निर्भर होगी कि इसमें शामिल होने वाले देशों की आर्थिक, वित्तीय और सैनिक बल कितना है। उसी तरह पूंजीवादी व्यवस्था में विभाजन करने के लिए इन हिस्सेदारों के बल कभी भी समान स्तर पर नहीं रहेगा। क्योंकि, पूंजीवादी व्यवस्था में सभी देश एक समान विकास करना असम्भव है। हिस्सेदारी देशों में सापेक्षिक बलों में बदलाव आने के साथ-साथ पुनर-विभाजन जरूरी हो जाती है। यह जरूर युद्धों के तरफ ले जाती है। लेनिन ने साम्राज्यवादियों के बीच होने वाले समझौतों का अस्थिर स्वभाव का कारण ठीक यही बताये थे।

युद्धों के सम्भावनाओं के खिलाफ आम तौर पर सामने आने वाली रूख यह है कि उसकी साम्राज्यवादी वर्गीकरण में विदेशी भूभाग साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा सीधे तौर पर शासित नहीं है और वे विश्व भर में विस्तारित वित्तीय पूंजी पर निर्भर है। यानी अंतरराष्ट्रीय तौर पर अभी साम्राज्यवाद नहीं है, लेकिन वह उत्तर-साम्राज्यवाद भी नहीं है। वह ग्लोबल पूंजीवाद है। इसमें किसी एक देश से संबंध रखने वाली नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में गतिविधियां करने वालों (भारी कार्पोरेशनों) की भूमिका होने के कारण अलग-अलग देश इन कार्पोरेशनों के बीच युद्ध लड़ने की जरूरत नहीं होगी। वे सिर्फ उनकी गतिविधियां स्वेच्छा से होने, दुनिया भर में 'लूटने की अधिकार' कायम रखने के लिए रास्ता सुगम बनाने पर ही अपनी ध्यान केन्द्रित करते हैं। यह 'एकीकृत' साम्राज्यवादी गठजोड़ द्वारा कायम होती है। इस तरह की सोच परिस्थिति को सही तरीके से अध्ययन नहीं करने की वजह से पैदा होती है। हमारे देश में व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस तरह की रूझानें मौजूद है। इन्हें हम पूरी तरह खारीज करना चाहिए।

जब तक पूंजीवादी शासक वर्ग का युद्ध का मतलब है, दूसरों को अपने रास्ते में लाने के लिए एक प्रभावशाली मार्ग। क्रमशः दुनिया को निगलने वाले बहुराष्ट्रीय भीमकायों के जड़ अभी भी ठोस राज्य में ही मजबूती से गढ़ी हुई हैं। उसकी उच्च राजनीतिक वर्गों से वे बहुत ही नजदीकी संबंध रखते हैं। इस विषय को भुला जाने के कारण ही इस तरह की सोच पैदा हो रही है कि साम्राज्यवादियों के बीच शत्रुता का अंत करने के लिए वित्तीय पूंजी अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंच गयी है।

जैसाकि लेनिन ने बताया कि, ''.... ''अंतर-साम्राज्यवादी'' अथवा ''अति साम्राज्यवादी'' गठजोड़ - उनका रूप चाहे कुछ भी हो, चाहे एक साम्राज्यवादी

गठजोड़ के खिलाफ दूसरे साम्राज्यवादी गठजोड़ के रूप में हो या सभी साम्राज्यवादी ताकतों के आम गठजोड़ के रूप में - अनिवार्यत: युद्धों के बीच में ''युद्ध विराम'' से ज्यादा और कुछ नहीं होते। शांतिपूर्ण गठजोड़ युद्धों के लिए जमीन तैयार करते हैं और स्वयं भी इन्हीं युद्धों में से उत्पन्न होते हैं, एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं और विश्व अर्थव्यवस्था तथा विश्व राजनीति के भीतर साम्राज्यवादी बंधनों तथा संबंधों के उसी एक आधार में से संघर्ष के शांतिपूर्ण तथा अशांतिपूर्ण रूपों को बारी-बारी से जन्म देते हैं। .... बुद्धिमान काउत्स्की एक ही श्रृंखला की एक कड़ी को दूसरी कड़ी से अलग कर देते हैं, ... सभी ताकतों के वर्तमान शांतिपूर्ण गठजोड़ को कल होनेवाले उस अशांतिपूर्ण झगड़े से अलग कर देते हैं। .... साम्राज्यवादी शांति की मुद्दतों तथा साम्राज्यवादी युद्धों की मुद्दतों के बीच जो सजीव संबंध है, उसे बताने के बजाय काउत्स्की मजदूरों के सामने एक निष्प्राण विविक्ति रखते हैं, ताकि उनके निष्प्राण नेताओं से उनका मेल करा दें।'' (लेनिन संकलित रचना : ग्रंथ-2, पृष्ठ-149-150)।

साम्राज्यवाद के प्रति लेनिन की आलोचनात्मक दृष्टिकोण तीन मुख्य पहलुओं पर प्रधान रूप से आधारित है। इसमें एक युद्धों की अनिवार्यता। बाकी दो पहुओं को छूने की किसी तरह की प्रयास संशोधनवादी सिद्धांतकर्ताओं ने नहीं करते। क्योंकि, पाठकों को यह स्पष्ट होती है कि लेनिन विश्लेषण के उज्ज्वल सारतत्व क्या है? पहली विषय, साम्राज्यवाद के बारे में लेनिन की आलोचना में प्राथमिक पहलू क्या है? यही है कि उससे युद्ध होती है? नहीं। वह भी मुख्य पहलू ही है, इसके बावजूद, वह प्राथमिक पहलू नहीं है। लेनिन के समझ के अनुसार प्राथमिक पहलू यह है कि सिर्फ सामाजिक क्रांति ही साम्राज्यवादी चरण से उबर पाने का एक मात्र रास्ता है। लेनिन के अनुसार, ''यदि साम्राज्यवाद की यथासंभव संक्षिप्ततम परिभाषा करनी हो, तो हम कहेंगे कि पूंजीवाद की इजारेदाराना अवस्था साम्राज्यवाद है।'' (लेनिन संकलित रचना : ग्रंथ-2, पृष्ठ-110)। लेनिन ने घोषणा किया कि ''इजारेदारियां, अल्पतंत्र, स्वतंत्रता की चेष्टा के बजाय प्रभुत्व की चेष्टा, मुट्ठी भर सबसे धनवान तथा सबसे ताकतवर राष्ट्रों द्वारा बढ़ती हुई संख्या में छोटे या कमजोर राष्ट्रों का शोषण - इन सबने साम्राज्यवाद की उन लाक्षणिक विशेषताओं को जन्म दिया है, जिनके कारण हमें उसको परजीवी अथवा ह्रासोन्मुख पूंजीवाद कहने पर विवश होना पड़ता है'' (उक्त ग्रंथ, पृष्ठ-155)। उस अवधारणा वर्तमान साम्राज्यवादी परिस्थिति का और स्पष्ट कर देता है। जैसाकि लेनिन द्वारा परिभाषित किया गया कि 'मरणावस्था में चटपटा

रही पूंजीवाद है', जिसकी सही लिखित अर्थ वर्तमान में साबित हो जाता है।

पूंजीवाद अपनी साम्राज्यवादी चरण में अपनी सभी प्रगतिशील लक्षणों खो दिया। वर्तमान वह एक 'जीवाश्म' है। उसके पास मानव जाति को देने के लिए कुछ भी नहीं है। दरअसल यही लेनिन को इस आह्वान देने में प्रोत्साहन दिया कि सामाजिक क्रांतियों का युग आ गया है। लेनिन ने बताया, 'जब कोई बड़ा उद्यम विराट रूप धारण कर लेता है और सुनियोजित ढंग से, विपुल तथ्य-सामग्री की अचूक गणना के आधार पर मूलभूत कच्चे माल के संभरण को संगठित करता है तथा करोड़ों लोगों की जितनी कुल आवश्यकता है, उसका दो-तिहाई या तीन चौथाई भाग तक ही उन्हें सप्लाई करता है; जब कच्चा माल सुव्यवस्थित तथा संगठित ढंग से उत्पादन के लिए सबसे उपयुक्त स्थानों को, कभी-कभी सैकड़ों या हजारों मील दूर भी, भेजा जाता है; जब सामग्री के परिष्करण से लेकर विभिन्न प्रकार के तैयार माल बनाने तक की सारी अनुक्रमिक मंजिलों का निर्देशन एक ही केन्द्र से किया जाता है; जब ये चीजें एक ही योजना के अनुसार करोड़ों उपभोक्ताओं के बीच वितरित की जाती हैं (अमरीकी 'तेल ट्रस्ट' द्वारा अमरीका तथा जर्मनी में तेल का वितरण) - तब यह स्पष्ट हो जाता है कि चीजें ''अंतर्गुंथित'' ही नहीं हो गयी हैं, बल्कि उत्पादन का समाजीकरण भी हो गयाा है; यह स्पष्ट हो जाता है कि निजी आर्थिक संबंध तथा निजी संपत्ति के संबंध एक ऐसा खोल बन गये हैं, जिसके अंदर की सामग्री अब उससे मेल नहीं खाती, एक ऐसा खोल बन गये हैं, जिसके विनाश को अगर कृत्रिम उपायों द्वारा रोकने की कोशिश की गयी, तो अवश्व ही उसका क्षय हो जाएगा; एक ऐसा खोल, जो काफी दीर्घकाल तक क्षय की दशा में रह सकता है (यदि हम हद से हद यह भी मान लें कि अवसरवादी फोड़े का इलाज बहुत लंबा खिंचेगा), परंतु जो फिर भी अनिवार्य रूप से हटाया जाएगा'। (उक्त ग्रंथ, पृष्ठ-158-159)। याद रखें, इस विषय को लेनिन ने 100 वर्ष पहले ही, जब कम्प्यूटरों का आविष्कार होने की दसियों साल पहले ही लिखा। वर्तमान, ऊपर उल्लेखित सारे क्रमों की व्यापकता, तेजगति जितना है और जिस प्रभावशाली स्तर पर अमल हो रही हैं बता नहीं सकते।

साम्राज्यवाद के बारे में लेनिनवाद इस आलोचनात्मक पहलू को जानबूझकर संशोधनवादी सिद्धांतकारों ने छोड़ दिया, जिसके जरिए इस क्रांतिकारी निर्धारण छिपाने की प्रयास कर रहे हैं। इसके विपरीत, वे बेशर्म लेनिन की विचारधारा

को विकृत कर रहे हैं। वे ऐसा कहकर क्रांति को नकार रहे हैं कि वर्तमान में साम्राज्यवादी युद्ध के रूप में कोई नहीं होगी। क्रांति को अनन्त काल तक पीछे दलते हुए, वे कहते हैं कि 'जनवाद को मजबूत करने' की दिशा में हम पीछे की तरफ मूड़ना एक मुख्य पहलू होगा। क्रांति का स्थायी तौर पर टालने वाले इस तरह के लोगों को आंखों से दिखाई देने वाले सच्चाइयों को भी नहीं देखते हैं और ऐसा कहकर अंतहीन अन्वेषण को जारी रखते हैं कि वस्तुगत परिस्थितियां कब तक परिवक्व होगा। वे समाजवाद की भविष्य को किसी सुदूर, अप्रासंगिक और अस्पष्ट लक्ष्य के रूप में दर्शाता है।

इसलिए साम्राज्यवाद पर लेनिनवाद की रूख में महत्वपूर्ण पहलू ये है : साम्राज्यवाद मरणावस्था में चटपटा वाली पूंजीवाद है। वह समाजवादी क्रांति को अवश्य बनाता है। साम्राज्यवाद के जरिए परिपक्व होने वाले वस्तुगत परिस्थितियां समाजवादी क्रांति को संभव बनाता है। इजारेदारी पूंजीवाद के अंदर निहित अंतरविरोधों के जरिए फूटने वाली साम्राज्यवादी युद्धें समाजवादी क्रांति को अनिवार्य कर देती हैं।

क्रांति का सन्निकटता के लिए साम्राज्यवादियों के बीच संघर्ष को एक जरूरी शर्त बताने वाले संशोधनवादी सिद्धांतकारों की सिद्धांत से मार्क्सवाद-लेनिनवाद सहमत होती है क्या? कभी ऐसा नहीं हो सकता। साम्राज्यवादी युद्धें क्रांति को अनिवार्य कर देती हैं, लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि किसी भी तरह युद्धों जरिए ही वह अनिवार्य हो जाती है। रूस में साम्राज्यवादी युद्ध क्रांति का फौरी कारण के रूप में काम किया। लेकिन इसे वे उल्टा-सीधा करा रहे हैं।

लेनिन की रूख में, ''उदाहरण के लिए, इंग्लैंड के बारे में, वहां वास्तविक सर्वहारा क्रांति जितना शीघ्र फूट पड़ेगी, अभी सुप्त चेतनावस्था में रहे व्यापक जनता को जागरूक करने, सुलगाने और संघर्ष में उतारने के लिए सबसे असरदार होने वाली फौरी कारण क्या होगी, हम नहीं बता सकते। - पहले से कोई बता नहीं सकते। .... संसदीय संकट के कारण हो या एक दूसरे से उलझने वाले और क्रमशः दर्दभरा और गहरा होने वाले औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी अंतरविरोधों के कारण हो या यथासंभव किसी तीसरी कारण से आदि से हो, दरार पैदा करना, बरफ पिघलना संभव है।'' (लेनिन, Left-Wing Communism: an Infantile Disorder)। यह बहुत ही स्पष्ट है कि लेनिन की सोच था कि क्रांति सुलगने में ट्रिग्गर के रूप में काम करने वाली कई कारणों में एक

है साम्राज्यवादी संकट।

3) वर्तमान परिस्थिति में भारतीय वामदल, माओवादी सहित, अवसरवादी, गैरक्रांतिकारी और गठजोड़ों के आधार पर सुधारवादी कार्य-दिशा को अपनाने की दिवालियापन रूख : संशोधनवादी सिद्धांतकारों की रूख के अनुसार ''दुनिया में हर जगह पर स्वत:प्रवर्ती के तौर पर विभिन्न तबकों की अंदोलनें सामने आने के बावजूद, उसमें पूंजीवाद के खिलाफ स्थिर रूख अपनाने में कमी है। सिर्फ सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के जरिए ही वर्तमान अंतरविरोधों को सुलझाने की व्यावहारिक रास्ता है - इस तरह की चेतना उसमें नहीं है। उसमें अभी भी 'आर्थिकवाद' की स्वभाव निहित है। उसमें से ज्यादा आंदोलनों के मांग है कि उत्पादन की तरीके को बदलने के सिवाय संपदा को न्यायपूर्ण पुन:बंटवारा करने की है। इसका कारण है उत्पीड़ित वर्ग द्वारा सामना करने वाले इन आर्थिक समस्याओं की सामाजिक और राजनीतिक जड़ों को भण्डाफोड़ कर सकने वाली और स्वत:प्रवर्ती आंदोलनों को एक व्यापक और एक लक्ष्य के साथ सामाजिक संघर्ष के रूप में एकताबद्ध करने की वर्गचेतना होने वाली सर्वहारा के अगली दस्ता अस्तित्व में नहीं होना।''

वे आगे चलकर इस हद तक पहुंचे हैं कि ''साम्राज्यवादी युद्ध नहीं हैं, क्रांति का सन्निकटता नहीं है, इसलिए क्रांतिकारी वामदल की जरूरत ही नहीं है।'' इस परिस्थिति में वे कहते हैं कि ''अगर कम्युनिज्म व्यावहारिक तौर बचके रहना है तो, उत्तर-लेनिनवादी युग द्वारा लगाए गए शर्तों पर निर्भर होकर नए मार्गों को खोजना चाहिए और अपने आप को पुनरव्यवस्थित करना चाहिए। यह तो मुश्किलभरा कार्य ही है। व्यावहारिक राजनीति से अलग होने और नैतिक स्वच्छता को ऊपर रखने और इस पहलू को नकार कर कि क्रांति होने की स्थिति नहीं है, के साधारण और अवांछनीय रूझान क्रांतिकारियों में होने के कारण यह और मुश्किलभरा कार्य हो जाता है''।

विश्व में वामदल की पतन के जड़ें इस में निहित हैं कि क्रांतिकारी वास्तविकता पर निर्भर होकर समकालीन हितों को पूरा करने, मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी सिद्धांत की प्रासंगिकता को जानने और उसे बचाने में वह असमर्थ हुई; वह क्रांति का सवाल को छोड़ दिया; उसकी स्वभाव सामाजिक जनवादी के रूप में तब्दील हुई; वह 'सुधारवादी' कतारों में पतन हुई। यानी 'क्रांतिकारी वामदल' एक 'क्रम पद्धति में सामाजिक जनवादीकरण' हुई। वह सामाजिक

जनवादी की राजनीति को अपनाया। संकट को महान परिवर्तनों की दिशा में नहीं, बल्कि उसे प्रबंधन करने की तरह उसकी राजनीतिक दृष्टकोण बदलाव आया। वामदल की पार्टियां दूसरी इंटरनेशनल के सामाजिक जनवादी पार्टियों की तरह व्यवहार कर रहे हैं। उन्हें गैर-क्रांतिकारी रोजमर्रा की गतिविधियां ही सब कुछ हो गया। वे जनवादी पूंजीवादी राज्य एजेंसियों को बचाने के लिए पूंजीवादियों और मध्यम वर्ग के उदारवादियों के साथ गठजोड़ें बना रहे हैं। सामूहिक और जुझारू आंदोलनों के जरिए नहीं बल्कि संसदीय गतिविधियों के जरिए, रोजमर्रे के तौर सामूहिक सौदेबाजी करने के जरिए सुधारों पर अमल करने चाहते हैं।

इस 'सामाजिक जनवादीकारण' के पीछे स्पष्ट राजनीतिक और आर्थिक कारण मौजूद हैं। दूसरी विश्व युद्ध के बाद 1955-1970 के बीच पूंजीवादी विकास (boom) के साथ आंशिक स्थिरता उभर कर आयी। वह 'पूंजीवाद की स्वर्णिम युग' के रूप में जाना जाता है। वह कई बुद्धिजीवियों में भ्रम पैदा किया। उनकी रूख यह है कि पूंजीवाद में मार्क्स द्वारा खोज निकाली गयी अंतरविरोध का निपटारा हुआ। संकट को निपटने के लिए अर्थव्यवस्था में सरकारें हस्तक्षेप करने की जान मिनार्ड कीन्स सिद्धांत को सामने लाया गया। इसी वजह से उन्होंने क्रांति का वास्तविकता को भूल गया; मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी सिद्धांत को छोड़ दिया। पूंजी की तर्क के सामने घुटने टेक दिया और सुधारवादियों के रूप में तब्दील हुए। लेकिन, जब ऐसा एक सोच का संचालन हुआ कि इतिहास की कुड़ेदान में संकट को फेंका जा रहा है, के क्रम में, वह 1960 की दशक के अंत और 1970 दशक के शुरूआत में मुख्य फाठक को तोड़कर फिर वापसी की और सुधारवादियों की नींद हराम किया।

लेनिनवादी दृष्टिकोण के अनुसार, भौतिक परिस्थितियां परिपक्व नहीं होने के बावजूद, सर्वहारा के अगली दस्ता स्थिरता से मजदूर वर्ग में वर्गचेतना को विकसित करते हुए, क्रांति का आवश्यकता और सम्भवता के बारे में उन्हें प्रभावित करने के लिए प्रयास करना चाहिए। जैसाकि लेनिन ने बिना थके बार-बार शिक्षित किया कि सर्वहारा के अगली दस्ता की क्रांतिकारी कार्यभार है ''क्रांति की जरूरत, उसके लिए फौरी तौर पर प्रयास करने की जरूरत, उसकी अनिवार्यता'' पर उत्पीड़ित वर्ग को चेतनाबद्ध करना। एक तरफ संशोधनवादी सिद्धांतकर्ताओं ने ये कहकर मजदूर वर्ग को धोखे दे रहे हैं कि क्रांति किसी भी सूरत पर एजेंडे में नहीं है और उसे साबित करने के लिए 'घटनाओं का' 'उल्लेखित' कर रहे हैं, दूसरी तरफ लेनिन क्रांति की अनिवार्यता के बारे में उन

मजदूरों के बीच दृढ़ता से ले जा रहे हैं। संशोधनवादी सिद्धांतकर्ताओं ने मजदूर वर्ग को लोरी गाने गाते हुए सुला रहे हैं, लेनिन उन्हें कठिन वास्तविकता बताकर जागरूक कर रहे हैं। इस अंतर का लेनिन की शब्दों में ही स्पष्ट रूप से हम देख सकते हैं : क्रांति नहीं होने के बावजूद, वह होने की सिर्फ सम्भावना ही होने के बावजूद ''... परिपक्व होती जा रही क्रांति की आवश्यकता के बारे में अशिक्षित जनसमुदायों को शिक्षा दिलाने, उसकी अनिवार्यता को साबित करने, उसकी फायदों के बारे में लोगों को बताने, श्रमिक वर्ग, शारीरिक श्रम करने व शोषण झेलने वाले लोगों को उस (क्रांति) के लिए तैयार करने में एक क्रांतिकारी मार्क्सवादी अपनी काबिलियत की वजह से पेटीबुर्जुआ अबौद्धिक व्यक्ति से अलग होता है''। (लेनिन, सर्वहारा क्रांति और गद्दार काउत्स्की)। संशोधनवादी सिद्धांतकर्ताओं की यह आह्वान, जो वामदल को क्रांतिकारी के रूप में नहीं रहने की हिदायत देता है, से लेनिन की शब्दों में यह स्पष्ट हो जाती है कि वामदल को पहली श्रेणी की पेटीबुर्जुआ अबौद्धिक व्यक्ति के रूप में रहने की हिदायत देने के बराबर ही है। इस तरह बहुत ही गहरी साम्राज्यवादी संकट के बीच यथास्थितिवाद को आगे बढ़ा रहे हैं। सार्वजनिक मतदान नीति पर निर्भर होकर उदारवादी जनवाद को मजबूत करने की संसदीय रास्ते का उत्पीड़ित जनता के सामने ला रहे हैं। भारत वर्ष में केन्द्रीकृत राज्ययंत्र और बहुत ही मजबूत आधुनिक सेना होने की स्थिति में है। संसदीय जनवाद पूरी तरह भण्डाफोड़ हो गया है कि वह सिर्फ बुर्जुआ वर्ग के धोखेबाजी के सिवाय और कुछ नहीं। इस स्थिति में यह स्पष्ट है कि एक सर्वहारा क्रांतिकारी पार्टी ने संसद में बहुसंख्यक स्थान जीत कर सत्ता पर काबिज होना, वह समाजवादी संविधान को बनाना, राज्ययंत्र के दमनकारी साधनों को तटस्थ करना, अंत में उस राज्ययंत्र को उखाड़ कर सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना करना असंभव है। अगर सर्वहारा नेतृत्व के मजदूर-किसान आदि उत्पीड़ित जनता द्वारा उखाड़ने के सिवाय, साम्राज्यवादियों की मदद हासिल भारतीय शासक वर्ग अपने आप अपने सम्पदाओं और सत्ता को कभी नहीं छोड़ेंगे। 1970 और 1980 में चीली और निकरागुवा अनुभव हमारे सामने मौजूद हैं। इसिलए संशोधनवादी सिद्धांतकर्ताओं द्वारा सामने लाने वाली सभी तर्कों को बेहिचक नकारना होगा और उन्हें मुंहतोड़ जवाब देना होगा।

शस्त्र-बल द्वारा राजनीतिक सत्ता छीनने के रास्ते पर डटे रहें!

मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद की यह धारणा कि क्रांति का बुनियादी

सवाल राजनीतिक सत्ता का सवाल होता है। क्रांति का केन्द्रीय कार्य व सर्वोच्च रूप शस्त्र-बल द्वारा राजनीतिक सत्ता छीनना होता है। यह मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद की विश्वव्यापी सच्चाई है। जो कोई भी इस सच्चाई को अस्वीकार करता है या केवल जुबानी तौर पर स्वीकार करता है लेकिन वास्तव में अस्वीकार करता है, वह एक सच्चा मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी नहीं है। क्रांति को सफल बनाने के लिए भारत वर्ष की ठोस परिस्थिति क्या है? विभिन्न देशों में वहां की ठोस परिस्थितियों के अनुरूप क्रांतियां किस तरह जीत हासिल कर पायी है? लेनिन ने अक्टूबर क्रांति के महान व्यवहार के आधार पर नवम्बर 1919 में ''पूर्व की राष्ट्रों के कम्युनिस्ट संगठनों की दूसरी अखिल रूस कांग्रेस में भाषण'' में पूर्व की विभिन्न राष्ट्रों के कम्युनिस्टों को यह बताया था कि उनके लिए यह जरूरी है कि वे अपनी-अपनी जगहों की विशिष्टताओं को देखें, कम्युनिज्म के आम सिद्धांतों व व्यवहारों पर भरोसा रखते हुए अपने आपको उन विशिष्ट स्थितियों के अनुरूप बनाएं, जो यूरोपीय देशों में मौजूद नहीं है। लेनिन ने जोर देते हुए कहा था कि यह ''एक ऐसा कार्य है, जिसका सामना दुनिया के कम्युनिस्टों ने पहले कभी भी नहीं किया था।'' यह स्पष्ट है कि अगर मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद की विश्वव्यापी सच्चाई को हमारी देश की क्रांति के ठोस व्यवहार के साथ नहीं मिलाया जाता, तो राजनीतिक सत्ता छीनने और क्रांति की विजय का सवाल ही नहीं उठता। चीन में इस सिद्धांत का सृजनात्मक रूप से माओ नेतृत्ववाली सीपीसी ने अमल किया और नवजनवादी क्रांति में जीत हासिल कर कम्युनिस्ट लक्ष्य की तरफ बढ़ने के लिए समाजवाद को मजबूत करने की प्रक्रिया में कूद पड़ी थी।

भारत वर्ष में भाकपा (माओवादी) के व्यवस्थापक नेताद्वय कामरेड सी.एम. और कामरेड के.सी. के नेतृत्व में कई क्रांतिकारियों ने भाकपा, भाकपा (मा) की संशोधनवाद को हराते हुए पारिस कम्यून, अक्टूबर क्रांति और चीनी क्रांति का जारी रूप के रूप में नक्सबाड़ी रास्ता और दीर्घकालीन सशस्त्र संघर्ष के रास्ता को चुन लिया। वही आज भारत वर्ष में भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में जारी नवजनवादी क्रांति। वह विश्व सर्वहारा सामाजवादी क्रांति का एक अंग है। अर्धऔपनिवेश और अर्धसामंती व्यवस्था वाली भारतीय क्रांति अनिवार्यत: दो मंजिलों से गुजरना होगा। पहली, नवजनवादी क्रांति और दूसरी, समाजवादी क्रांति। ये भिन्न स्वरूप वाली दो ऐसी क्रांतिकारी प्रक्रियाएं हैं जो एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी आपस में सम्बन्ध रखती है। हमारी पार्टी के भारतीय क्रांति

के रणनीति-कार्यनीति शीषर्क दस्तावेज में भारत की अर्धऔपनिवेश और अर्धसामंती समाज के चार स्वाभाविक लक्षण के बारे में, भिन्न जातियों में विभाजित उसकी विशिष्टताओं के बारे में, उसके अंदर मौजूद विशेष सामाजिक तबकें और राष्ट्रों के वास्तविक परिस्थितियों के बारे में, वर्तमान भारत की अर्धऔपनिवेशिक और अर्धसामंती समाज के प्रमुख अंतरविरोध, दो मौलिक अंतरविरोध के बारे में और उसमें प्रधान अंतरविरोध के बारे में विश्लेषण किया गया। भिन्न विशेष समस्याओं को निपटने के लिए विशेष नीतियां बनायी गयी है। उसी तरह भारतीय क्रांति के लक्ष्यों के रूप में साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद और सामंतवाद को बताकर, उन्हें ध्वस्त करने के बारे में, भारतीय क्रांति की प्रेरक शक्तियों, क्रांति के मौलिक कर्तव्य, दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए राजनीतिक सत्ता को कब्जा करना, कृषि-क्रांति नवजनवादी क्रांति की धुरी, जनसेना-स्थावर इलाकें, तीन जादूई हथियारें (पार्टी, जनसेना और संयुक्तमोर्चा), क्रांति के स्वरूप और उसकी भविष्य तथा भविष्य में उसका विकास आदि विषयों के बारे में विस्तार से बताते हुए रणनीति-कार्यनीति को बनाया गया है। पिछले 50 वर्षों में भाकपा (माओवादी) ने मालेमा सिद्धांत को देश की ठोस परिस्थितियों से जोड़ने और लागू करने द्वारा सही कार्यदिशा के रूप ले लिया है। इस क्रांतिकारी व्यवहार में दक्षिणपंथी और वामपंथी अवसरवाद के गलत कार्यदिशों को हराने द्वारा ही सही कार्यदिशा की विकास हुई। इस संघर्ष के क्रम में सभी सच्चे कम्युनिस्ट एकताबद्ध होने के बाद भाकपा (माओवादी) का गठन हुआ और कांग्रेस का आयोजन कर सही कार्यदिशा को अपनाया। कई हत्याकांडों से डरपोक होकर वह कभी आत्मसमर्पण नहीं किया और हथियार नहीं डाला। कुछ नकारात्मक शिक्षकों के उदाहरणों से सीख लेते हुए, इस सच्चाई को ऊंचा उठाते हुए कि सशस्त्र संघर्ष के सिवाय क्रांति को सफल बनाना असंभव है, आज वह देश में क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ा रही है। चाङ काई-शेक के खिलाफ जनमुक्ति युद्ध में माओ ने कहा, ''जनता की हथियारबंद ताकतें, हरेक बंदूक और हरेक कारतूस सबके सब सुरक्षित रखे जाने होंगे, उन्हें कतई समर्पित नहीं किया जाना चाहिए।''

समाज में और क्रांतिकारी आंदोलन में बदलती परिस्थिति के अनुरूप उचित कार्यनीतियों को विकसित करना चाहिए। लेकिन क्रांतिकारी आंदोलन से दूर कमरे में बैठे कुछ मुट्ठीभर लोग कम्युनिस्ट पार्टी के लिए सही और दृढ़ कार्यनीति को बनाना सभव नहीं है। तीव्र वर्ग संघर्षों में जनयुद्ध में-जनसंघर्षों में

भाग लेने के क्रम में ही कार्यनीति को बना सकते हैं। यानी व्यावहारिक अनुभव से ही, वर्गशक्तियों के बारे में सही आकलन से ही सही और दृढ़ सघर्षरत कार्यनीति को बना सकते हैं। ऐसी कार्यनीति क्रांति की जीत के लिए भरोसा देती है। इसके लिए सभी संदर्भों में समाज के परिस्थितियों को हमें समझने की जरूरत है। सीधे तौर पर जांच-पड़ताल करने की जरूरत है। यही सिद्धांत को व्यवहार से जोड़ने की मार्क्सवादी-लेनिनवादी- माओवादी शैली है, वास्तविक विषयों से सच्चाई को निकालने की शैली है।

जनयुद्ध का आधार भारतीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था में ही निहित है। छोटी शक्ति कई गुणा मजबूत दुश्मन का मुकाबला करने के क्रम में ही आज भाकपा (माओवादी) कई उतार-चढ़ावों का शिकार हो सकती है। कई ज्वार-भाटें होने के बावजूद, यह एक समझौताविहीन मौलिक संघर्ष है। इस क्रम में वह अपने लिए होने वाले सही और गलत पहलुओं से सबक लेकर कमी-कमजोरी-सीमितताओं से उबरने के लिए भूल सुधार अभियानों के जरिए वर्गसंघर्ष के विश्व दृष्टिकोण से, वचनबद्धता और आत्मबलिदान की चेतना से आंदोलन को आगे बढ़ा रही है।

साम्राज्यवाद, आधुनिक संशोधनवाद और देश के प्रतिक्रियावादियों (सामंतवाद और दलाल नौकरशाही पूंजीवाद) के खिलाफ हम मजबूत होने में काबिलियत हासिल करना चाहिए। हमारी गतिविधियों को परिमाणात्मक और गुणात्मक तौर पर बढ़ाना चाहिए। नयी उदारीकरण, बढ़ती राज्यहिंसा (राज्य आतंक), साम्राज्यवादियों के दुराक्रमण युद्धों और परोक्ष युद्धों के पृष्ठभूमि में इजारेदार पूंजीवादी वर्ग और वित्तीय अल्पतंत्र (financial oligarchy) की सीमाहीन लोभ-लालच से वर्गीकृत दीर्घकालीन और पहले के मुकाबले तेज होती जा रही विश्व पूंजीवादी साम्राज्यवाद की आर्थिक संकट हमें मांग करती है कि हम और दृढ़ता और जुझारू तरीके से लड़े और जनता की नवजनवादी क्रांति को पूरा कर, समाजवादी क्रांति की तरफ आगे बढ़े।

11 नवम्बर, 2017.

आंदोलन के शक्ति-संतुलन में बदलावों के अनुसार फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य को बदलने के बारे में

– डीजे

नक्सलबाड़ी, श्रीकाकुलम आदि आंदोलनों के उपरान्त क्रांतिकारी आंदोलन के दौरान पिछले 45 वर्षों के इतिहास पर सरसरी नजर डालें तो हम पाते हैं कि हमारे पार्टी समय-समय पर तत्कालीन देशीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए आंदोलन के शक्ति-संतुलन के अनुसार फौरी व प्रधान कर्तव्यों को ठीक से रेखांकित करते हुए उन्हें दृढ़ता से लागू करती आ रही है। फलतः भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन आज की स्थिति तक विकसित हुई है।

भारतीय क्रांति के निर्माता और हमारी पार्टी के संस्थापक नेताओं में से एक कामरेड चारू मजुमदार के शहादत के बाद, नक्सलबाड़ी उभार के पीछे हटने के बाद देशभर में भूतपूर्व भाकपा (मा-ले) के एक हिस्से में पार्टी लाइन के बारे में संदेह जताना; व्यवहार का सही तरीके से विश्लेषण कर सफलताओं और विफलताओं को अलग कर, सफलताओं के आधार पर आगे बढ़ने की योजनाओं को तय करने में विफलता; निराशा-हताशा और अविश्वास की स्थिति जारी रहा था। इस स्थिति में भूतपूर्व भाकपा (मा-ले) के आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी (एपी एससी) (इस ने 1980 में भाकपा (मा-ले) (पीपुल्सवार) के गठन का नीव डाला था) 1972 से 1977 तेलंगाना रीजनल अधिवेशन संपन्न होने तक पार्टी कतारों में मौजूद सैद्धांतिक और राजनीतिक उलझन से उबार कर सही क्रांतिकारी लाइन के तहत गोलबंद करने का ही प्रधान कर्तव्य के रूप में लेकर प्रयास किया गया था। हमारी पार्टी के 8वीं कांग्रेस द्वारा तय सही लाइन और नक्सलबाड़ी, श्रीकाकुलम आदि क्रांतिकारी आंदोलनों के सकारात्मक पहलुओं को ऊंचा उठाने के साथ-साथ, तत्कालीन हमारी वामपंथी कार्यनीति के वजह से भारतीय क्रांति के लिए हुई नुकसान के बारे में हमारे नेतृत्व ने विस्तार से चर्चा की। 'पिलुपु' पत्रिका (तत्कालीन एपी एससी के मुखपत्र) में कई निबंध लिखने के साथ-साथ 'अतीत का मूल्यांकन करते हुए हथियारबंद संघर्ष की राह पर विजयी होकर आगे बढ़ें' नामक आत्मालोचना-सिंहावलोकन दस्तावेज तैयार की।

इस दस्तावेज ने तत्कालीन सच्ची और ईमानदारी क्रांतिकारी ताकतों को गोलबंद करने तथा सही कार्यनीति को तय कर जनता में जाकर वर्गसंघर्षों का शुरुआत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यनीति पर अगस्त 1977 में एपी एससी द्वारा बनायी गयी दस्तावेज (वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति-हमारे कर्तव्य) ने वर्ग दुश्मन के सफाये के दिशा (लाइन) के बारे में जारी संकीर्णतावादी गलतियों को सुधारकर, पार्टी को जनदिशा की तरफ मोड़ लिया। इसके परिणामस्वरूप ही करीमनगर-आदिलाबाद किसान संघर्षों का उभार और आंध्रप्रदेश में सशस्त्र कृषि-क्रांतिकारी संघर्षों का विस्तार हुआ। करीमनगर-आदिलाबाद किसान संघर्ष का उभार के बुनियाद पर 1980 में हमारी पार्टी ने गुरिल्ला जोन दस्तावेज बनायी और उत्तर तेलंगाना किसान संघर्षों को गुरिल्ला जोन स्तर पर विकसित करने का प्रधान कर्तव्य को पार्टी के सामने रखा। इसके तहत आंदोलन को दण्डकारण्य में विस्तार कर लिया। 1985 में आंध्रप्रदेश और दण्डकारण्य के आंदोलनों पर केन्द्र व राज्य सरकारों ने जब प्रतिक्रांतिकारी हमले तेज की, तब 'सरकारी हमले को हराएं' के सर्कुलर के जरिए दुश्मन के सशस्त्र बलों पर गुरिल्ला युद्ध चलाने का कर्तव्य प्रधान कर्तव्य के रूप में लिया गया। इसके बाद समय-समय पर आयोजित आंध्रप्रदेश राज्य और दण्डकारण्य के अधिवेशनों और प्लीनमों तथा 1995 में आयोजित अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन (All India Special Conference) में आंदोलन की समीक्षा कर फौरी व प्रधान कर्तव्यों को तय किया गया। नक्सलबाड़ी उभार के समय की मार्क्सवादी-लेनिनवादी आंदोलन (1967-72) की समीक्षा कर, इसमें मुख्य रूप में रहे सकारात्मक पहलुओं को ऊंचा उठा कर, गौण रूप में रहे नकारात्मक पहलुओं को दिखाकर, इस समझ के आधार पर क्रांतिकारी शक्तियों को एकताबद्ध करने के साथ-साथ आंदोलन का निर्माण करने के लक्ष्य से नवंबर 1978 में भूतपूर्व भाकपा(मा-ले)पार्टी यूनिटी (पी.यू.) का गठन हुआ। भूतपूर्व पी.यू. पार्टी द्वारा 1983, 1987 और 1997 में संचालित केन्द्रीय अधिवेशन इसकी इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इन अधिवेशनों में सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक, सांगठनिक और कार्यनीतिक पहलुओं की समीक्षा की गयी। फौरी और प्रधान कर्तव्यों को तय किया गया। पहली अधिवेशन द्वारा भूतपूर्व पी.यू. ने जड़ जमा लिया। दूसरी अधिवेशन द्वारा आंतरिक संघर्ष के जरिए विघटनकारी लाइन को खारीज कर पार्टी लाइन को बचा लिया गया। तीसरा अधिवेशन ने आंतरिक संघर्ष के जरिए पार्टी लाइन को संपन्न बनाने के साथ-साथ सैद्धांतिक, राजनीतिक और सांगठनिक कमजोरियों को

पहचान कर सुधारने के लिए मदद किया। इस तरह नेतृत्व के तरफ से तीसरी अधिवेशन को सफलतापूर्वक संपन्न करने द्वारा भूतपूर्व पीपुल्सवार पार्टी-पी.यू. के वियल के लिए सही बुनियादी बनकर, शीघ्र ही (सितंबर 1998) में उनके बीच एकता हो गयी। इस विलय से भूतपूर्व एकताबद्ध पीपुल्सवार पार्टी की अखिल भारतीय स्वरूप का विस्तार हुआ। 2001 में आयोजित भूतपूर्व पीपुल्सवार की 9वीं कांग्रेस में आंदोलन की समीक्षा कर फौरी व प्रधान कर्तव्यों को तय किया गया। इन कर्तव्यों के रोशनी में हमारे क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ी।

भारतीय क्रांति के निर्माता और हमारी पार्टी के संस्थापक नेताओं में से एक कामरेड कन्हाई चटर्जी द्वारा मई 1969 में ही तैयार की गयी 'रणनीति-कार्यनीति' दस्तावेज, उनके द्वारा 1970 में लिखी गयी और एक महत्वपूर्ण निबंध 'कृषि-क्रांति को आगे बढ़ाएं, सेना और आधार इलाकों का निर्माण कार्य को तेज करें' के बुनियादी पर भूतपूर्व एमसीसी के नेतृत्व में पहले पश्चिम बंग के 24 परगना जिले में डीही-सोनारपुर किसान संघर्ष शुरू हुई। दुश्मन के भीषण हमले के वजह से यह संघर्ष गुणात्मक स्तर पर विकसित नहीं हो पाया। लेकिन इस संघर्ष से हमें ग्रामीण इलाकों के कार्य के बारे में कुछ अच्छी अनुभव मिली। इन अनुभवों का विश्लेषण कर उसके अनुसार पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले के कुछ थाना क्षेत्रों में, बर्धमान जिले के कांकसा-बुदबुद-आउसग्राम इलाके में सामंती विरोधी किसान संघर्ष शुरू किया गया। पहले के मुकाबले विकसित रूप में एक नया उभार सामने आया। गया-हजारीबाग संघर्ष 1968 में शुरू हुआ तथा कांकसा संघर्ष 1970 में शुरू हुआ। दुश्मन के भारी हमलों को कारगर ढंग से सामने करने लायक हमारी राजनीतिक और सांगठनिक (आत्मगत) तैयारियां नहीं होने के वजह से और इलाके का दायरा गुरिल्ला युद्ध विन्यास के लिए पर्याप्त नहीं होने के वजह से कांकसा संघर्ष को अनिवार्य रूप से पीछे हटना पड़ा। लेकिन कांकसा संघर्ष से हासिल अनुभव ने बाद में बिहार-झारखण्ड-बंगाल स्पेशल एरिया में विकसित हुई कृषि-क्रांति गुरिल्ला संघर्ष के लिए नीव डाला। 1978-1980 तक ये संघर्ष गुरिल्ला जोन स्तर तक विकसित हुई। 1990 से 2004 तक बिहार-झारखण्ड इलाके के आंदोलन के स्थिति पर निर्भर होकर समय-समय पर फौरी और प्रधान कर्तव्यों को तय करते आए हैं।

भाकपा (माओवादी) के गठन के बाद केन्द्रीय कमेटी की पहली बैठक ने अगले दो वर्षों के लिए चार मुख्य कर्तव्य तय किये। इसमें पहला कर्तव्य **प्रधान कर्तव्य** है। ''समूचे देश में जनयुद्ध को विकसित कर तेज करना, गुरिल्ला

जोनों को आधार इलाकों के रूप में परिवर्तित करने ठोस समयावधि के तहत योजनाएं बनाना, राजनीतिक सत्ता के इकाइयों और क्रांतिकारी संयुक्तमोर्चा का निर्माण करना, जन आंदोलन और जन संगठनों सहित सभी कार्यों को केन्द्रीय कर्तव्य को पूरा करने की दिशा में मोड़ लेना, पार्टी, पीएलजीए और संयुक्तमोर्चा को मजबूत करना और आधार इलाके की स्थापना के लक्ष्य से उस दिशा में इलाकों को सीढ़ी दर सीढ़ी विकसित करना ही **प्रधान कर्तव्य** है।''

एकीकृत पार्टी के गठन के बाद तय चार मुख्य कर्तव्यों के आधार पर संचालित दो साल तीन महीनों के अपने व्यवहार की हमने जनवरी 2007 में हुई 9वीं कांग्रेस-एकता कांग्रेस में समीक्षा की और आगामी कांग्रेस तक (आम तौर पर 5 वर्ष तक) फौरी कर्तव्यों को तय किये। इन फौरी कर्तव्यों के तहत निम्नांकित **प्रधान व केन्द्रीय कर्तव्य** को तय किये :

''पार्टी के सामने हमारी क्रान्ति के तीन हथियारों को मजबूत करते हुए **प्रधान और केन्द्रीय कार्यभार** हमारे रणनीतिक क्षेत्रों में आधार क्षेत्र स्थापित करने के लिए छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध की गुणात्मक रूप से उन्नत मंजिल तक पहुँचाने तथा पीएलजीए को पीएलए में रूपान्तरित करने, अन्य छापामार जोनों में छापामार युद्ध को तेज करने, परिप्रेक्ष्य क्षेत्रों में लाल प्रतिरोध क्षेत्र विकसित करने और इन क्षेत्रों में छापामार जोन के निर्माण के लिए तैयारियाँ पूरी करने का है।'' (भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के गठन के बाद 2007 में एकता-कांग्रेस-9वीं कांग्रेस की राजनीतिक-सांगठनिक समीक्षा से)

इस प्रधान व केन्द्रीय कर्तव्य को पूरा करने के लिए हमने 11 राजनीतिक कर्तव्यों, 6 सैनिक कर्तव्यों, 9 संयुक्तमोर्चा संबंधित कर्तव्यों, 4 सांगठनिक कर्तव्यों और 4 शहरी आंदोलन के कर्तव्यों को तय किये।

एकता कांग्रेस द्वारा तय प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य के साथ-साथ अन्य फौरी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए देशभर में ग्रामीण, जंगल और शहरी इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए प्रयास किया। फलतः 2007 से 2011 तक भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन ने क्रमशः वृद्धि दर्ज की। इस स्थिति में क्रांतिकारी आंदोलन पर केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा एकताबद्ध पार्टी का गठन के तुरंत बाद देशभर में शुरू की गयी प्रतिक्रांतिकारी हमले के साथ-साथ, लम्बे समय से हमारे पार्टी में जारी कमी-कमजोरियों की वजह से 2013 तक भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ा। प्रध

ान व केन्द्रीय कर्तव्य को तय करने में मुख्य बुनियाद के तौर पर रहे दण्डकारण्य आंदोलन 2011 के अंत तक कठिन दौर में दाखिल हो गयी और 2013 के शुरुआत तक बिहार-झारखण्ड के आंदोलन अस्थायी तौर पर पीछे हट गयी। इस स्थिति में डीके और बीजे को आधार इलाकों के रूप में विकसित करने के लिए पीएलजीए को पीएलए के रूप में, गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध के रूप में विकसित करने का केन्द्रीय कर्तव्य फौरी कार्यभार होगा या नहीं इस सवाल को पार्टी के अंदर कुछ कतारों द्वारा उठायी गयी है। इस विषय पर हमारी केन्द्रीय कमेटी बीच-बीच में स्पष्टकीरण देती आ रही है। इसके साथ-साथ इस पर पार्टी में एक स्पष्ट समझदारी बनाने के लिए इस अवसर पर फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्यों के बारे में कुछ विस्तार से चर्चा करेंगे। कुछ सवालों के रूप में इस समस्या को कुछ विस्तार से समझने के लिए प्रयास करेंगे।

1. किस आधार पर फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य को चयन किया जाता है? क्या यह रणनीतिक पहलू है या कार्यनीतिक संबंधित पहलू?

2. पार्टी कांग्रेस द्वारा केन्द्रीय कर्तव्य तय किये जाने के बावजूद, आंदोलन के शक्ति-संतुलन में होने वाले बदलावों के अनुसार फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य को बदलना क्या सही है?

3. केन्द्रीय कर्तव्य समूचे देश के लिए क्या एक ही रहेगा या स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनल/राज्य कमेटियां क्या अलग से केन्द्रीय कर्तव्य को तय कर सकती हैं या इन कमेटियों द्वारा फौरी कर्तव्यों को तय करने का मानदण्ड या पद्धति क्या है?

1. किस आधार पर फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य को चयन किया जाता है? यह क्या रणनीतिक पहलू है या कार्यनीति संबंधित पहलू?

फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्यों को तय करना कार्यनीति संबंधित पहलू है। निर्धारित समयकाल में, निर्धारित इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन के स्थिति पर निर्भर होकर, आंदोलन के शक्ति-संतुलन पर निर्भर होकर, पार्टी, सेना और संयुक्तमोर्चा के क्षेत्रों से संबंधित फौरी कार्यभारों को तय करते हैं। इन फौरी कर्तव्यों में से किसी एक प्रधान कर्तव्य के रूप में रहेगा। देशभर के आंदोलन को ध्यान में रखकर तय की जाने वाले सबसे प्रधान कर्तव्य को ही केन्द्रीय कर्तव्य हो सकता है।

मार्क्सवादी महान शिक्षक स्तालिन ने अपने ग्रंथ 'लेनिनवाद के मूल सिद्धांत' में अच्छी तरह से चर्चा किया कि फौरी और प्रधान कर्तव्यों को किस मानदण्ड पर निर्धारित करना चाहिए। स्तालिन का कहना है कि फौरी और प्रधान कर्तव्यों को तय करना कार्यनीति संबंधित नेतृत्व का **प्रधान कर्तव्य** है। कार्यनीति संबंधि त नेतृत्व के **प्रधान कर्तव्यों में** ''..... (1) आंदोलन के उतार या चढ़ाव की अवस्था के किसी निश्चित समय में संघर्ष और संगठन के जो रूप सबसे अधि क अनुकूल हों, अर्थात संघर्ष और संगठन के जो रूप जनता को क्रांति की परिधि में लाने में, देश की करोड़ों जनता की फौज को क्रांति के विभिन्न ठिकानों पर भेजने में, सबसे अधिक सहायक हों, उन्हीं रूपों का प्रयोग करना इस संबंध की पहली शर्त है।''

....

''(2) किसी निश्चित क्षण में घटना श्रृंखला की उस ऐसी कड़ी की निशानदेही करना जो यदि हाथ में आ जाए तो उसके द्वारा पूरी घटना श्रृंखला को ही प्रभावित किया जा सकता है और सामरिक सफलता के अनुकूल परिस्थिति तैयार की जा सकती है। घटना श्रृंखला की इस कड़ी को परखना संघर्ष और संगठन के रूपों के समुचित प्रयोग की दूसरी शर्त है।

इस संबंध में मुख्य बात यह है कि पार्टी के सामने जितने भी कर्तव्य हों उनमें से उस ठोस और फौरी कर्तव्य को चुन लिया जाए जिसका समाधान अन्य सभी कर्तव्यों के समाधान का भी आधार बन सके और जिसका हल निकाल लेने से अन्य सभी फौरी कर्तव्यों के हल का भी रास्ता निकल आए।

इस सिद्धांत का महत्व दो उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है। उनमें से एक का संबंध तो पार्टी के निर्माण काल से है और दूसरे का नई आर्थिक नीति की वर्तमान परिस्थितियों से।'' (उक्त ग्रंथ में रणनीति-कार्यनीति शीर्षक के अंदर कार्यनीति संबंधित विषय, राहुल फाउण्डेशन के प्रकाशन, जनवरी 2004, पृष्ठ-73 और 75)।

किस सिद्धांत के आधार पर फौरी और प्रधान कर्तव्यों को तय करना है, यह बात कहने के बाद, स्तालिन ने प्रधान कर्तव्य के बारे में रूसी कम्युनिस्ट आंदोलन से और पार्टी अनुभवों से दो उदाहरण दिए हैं। उसमें से पहला अनुभव उन्होंने बताया कि रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी के गठन से पहले की परिस्थिति में, अखिल रूसी गुप्त समाचार पत्र (इस्क्रा) का संचालन **प्रधान**

कड़ी थी और वह **प्रधान कर्तव्य** था। ''क्योंकि, उस समय की परिस्थितियों में एक गुप्त अखिल रूसी समाचार पत्र के द्वारा ही पार्टी का एक सुसंगत ढांचा खड़ा किया जा सकता था। ऐसा ढांचा जिसके सहारे उस समय की अनगिनत समूहों और संगठनों को पार्टी संगठन में लाया जा सकता था। जिसके द्वारा सिद्धांत और कार्यनीति की एकता के लिए भूमि तैयार की जा सकती थी। इस प्रकार वास्तविक पार्टी के निर्माण की नींव डाली जा सकती थी'' (उक्त ग्रंथ में रणनीति-कार्यनीति शीर्षक के अंदर कार्यनीति संबंधित विषय, राहुल फाउण्डेशन के प्रकाशन, जनवरी 2004, पृष्ठ-76)। अक्टूबर 1917 में समाजवादी क्रांति की जीत के बाद युद्ध में देश की अर्थव्यवस्था क्षतिग्रस्त हो जाने की परिस्थिति में समाजवादी राज्य ने कई कर्तव्य लिये। उन्होंने बताया कि व्यापार का विकास करना ही उस चरण के घटना श्रृंखला की **मुख्य कड़ी** थी और कई कर्तव्यों में **प्रधान कर्तव्य** था। ''क्योंकि - व्यापार के विकास द्वारा चीजों की बिक्री बढ़ा करके ही उस समय उद्योग-धंधों का भी विकास किया जा सकता था। व्यापार के क्षेत्र में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर लेने और व्यापार को अपने हाथ में ले लेने के बाद ही उद्योग-धंधों का खेती-किसानी के साथ संबंध जोड़ने और **दूसरे फौरी कर्तव्यों को सफलतापूर्वक संपादित करने की आशा की जा सकती थी।** समाजवादी आर्थिक व्यवस्था के निर्माण के लिए अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करने का यही एक मार्ग था'' (उक्त ग्रंथ में रणनीति-कार्यनीति शीर्षक के अंदर कार्यनीति संबंधित विषय, राहुल फाउण्डेशन के प्रकाशन, जनवरी 2004, पृष्ठ-76)।

उक्त उद्धरण के अनुसार एक निर्धारित समय में, निर्धारित इलाके में (वह राज्य हो या देश हो) घटना श्रृंखला की किस कड़ी को परखने द्वारा पूरे घटना श्रृंखला अपने हाथों में आ सकती है, रणनीतिक सफलताएं हासिल करने की परिस्थितियां तैयार की जा सकती है ठीक वही कड़ी ही **प्रधान कर्तव्य है**। जो कर्तव्य अन्य फौरी कर्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा कर सकने की परिस्थितियां पैदा कर सकती है वही **प्रधान कर्तव्य है**। यानी एक जोन में/डिविजन में/जिले में हो, एक स्पेशल एरिया में/स्पेशल जोन में/राज्य में हो एक निर्धारित समय में पार्टी, फौज और संयुक्तमोर्चा से संबंधित जो कर्तव्य जिन्हें फौरी तौर पर अमल करना जरूरी है, उन सभी को **फौरी कर्तव्य** कहा जा सकता है। उनमें से जिस एक कर्तव्य पर अधिक प्राथमिकता देते हुए, उसके अमल पर पार्टी, फौज और संयुक्तमोर्चा से संबंधित सभी नेतृत्व और कैडर द्वारा एकजुटता से विशेष ध्यान

देकर प्रयास कर अन्य फौरी कर्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने की परिस्थितियां पैदा की जा सकती है उस कर्तव्य को **प्रधान कर्तव्य** कहा जा सकता है।

लेकिन केन्द्रीय स्तर पर (यानी समूचे देश के लिए) केन्द्रीय कर्तव्य को किस आधार पर निर्धारित किया जा सकता है?

केन्द्रीय कर्तव्य भी फौरी कर्तव्यों के अंदर ही आता है, इसके बावजूद वह प्रधान कर्तव्य से भी अधिक महत्व रखता है। जिस कर्तव्य को अमल करने से रणनीतिक हितों को पूरा किया जा सकता है, उस फौरी व प्रधान कर्तव्य को ही **केन्द्रीय कर्तव्य** कहा जा सकता है। देशभर के आंदोलन को ध्यान में रखकर एक निर्धारित समयकाल में एक ही केन्द्रीय कर्तव्य होगा। एक समय में कई केन्द्रीय कर्तव्य नहीं होंगे। इसलिए हमने एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस में दण्डकारण्य और बिहार-झारखण्ड को आधार इलाके के रूप में विकसित करने के लिए, गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में, पीएलजीए को पीएलए में विकसित करने का प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य को निर्देशित किए हैं। इस कर्तव्य के अमल में हमें मिली विकास और अवनति के आधार पर उस कांग्रेस में तय अन्य फौरी कर्तव्यों के अमल में उल्लेखनीय और प्रमुख बदलाव देखने को मिलती हैं। इस कर्तव्य के अमल में अगर हम विकास प्राप्त करते हैं, वह देश में कई जगहों पर जनउभार ला सकता है; सेटबैक हुए इलाकों को पुनर्जीवित (revive) करने में मदद कर सकता है; कार्यनीतिक और रणनीतिक संयुक्तमोर्चा संगठित होने के लिए मजबूत आधार तैयार हो सकती है; शहरी आंदोलन संगठित हो सकती है। इन सभी के कारण पार्टी, फौज और संयुक्तमोर्चा के क्षेत्रों में दीर्घकालीन असर दर्शाने वाले सकारात्मक परिणाम (रणनीतिक फायदें) हासिल की जा सकती है। इस केन्द्रीय कर्तव्य को पूरा करने में हासिल हुई विकास/प्रगति कांग्रेस द्वारा निर्देशित अन्य कर्तव्यों को जिस तरह प्रभावित करती है, उसी तरह उसमें होने वाली पीछे हट/अवनति कांग्रेस द्वारा निर्देशित अन्य कर्तव्यों (राजनीतिक, सैनिक, संयुक्तमोर्चा, सांगठनिक और शहरी कर्तव्य) को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यानी भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन और हमारी पार्टी कई प्रतिकूलताओं का सामना कर सकता है। केन्द्रीय कर्तव्य और अन्य फौरी कर्तव्य परस्पर पूरक हैं और परस्पर असर डालती हैं। इसलिए केन्द्रीय कर्तव्य का उत्थान और अवनति जिस तरह अन्य कर्तव्यों को प्रभावित करते हैं, उसी तरह अन्य कर्तव्यों के उत्थान और अवनति केन्द्रीय कर्तव्य को प्रभावित कर सकते हैं।

लेकिन, हमारी पार्टी के दस्तावेज 'भारतीय क्रांति के रणनीति-कार्यनीति' ने बताया है कि ''दीर्घकालीन लोकयुद्ध की आम लाइन हमें बताती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में खासकर, सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में (जो क्षेत्र छापामार युद्ध, जनसेना और आधार इलाकों के निर्माण के लिए सबसे ज्यादा अनुकूल हों) सुनियोजित रूप से कृषि-क्रांतिकारी छापामार युद्ध के लिए जनता को जागृत और संगठित करना तथा छापामार युद्ध के जरिए जनसेना और ग्रामीण लाल आधार क्षेत्रों का निर्माण करना क्रांति के **वर्तमान चरण** का बुनियादी, प्रधान और फौरी कार्यभार है'' (पृष्ठ-67)। इसे कैसे समझना है?

गौरतलब है कि फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्यों को कार्यनीतिक संबंधित पहलू बताया गया है। लेकिन उक्त बुनियादी, प्रधान और फौरी कर्तव्य जब **वर्तमान पूरे चरण में** लागू होती है, तो हर किसी में सवाल उठता है कि क्या यह एक रणनीतक पहलू है?

भारतीय समाज में वर्गों के वस्तुगत विश्लेषण पर, भारतीय राज के चरित्र पर, बुनियादी अंतरविरोधों पर, प्रधान अंतरविरोध पर निर्भर होकर, भारत के विशिष्ट स्वाभाविक लक्षणों और विशेष लक्षणों को ध्यान में रखकर हमने राजनीतिक रणनीति और फौजी रणनीति तय किए हैं। इन सभी के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि भारतीय क्रांति का वर्तमान चरण नवजनवादी चरण के रूप में होगा। भारतवर्ष में नवजनवादी क्रांति के जीत के लिए जब हम इस पूरे चरण को लेकर सोचते हैं, तब निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण इलाकों में कृषि क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध के जरिए जनसेना का गठन कर, आधार इलाकों का निर्माण करना ही बुनियादी, फौरी और प्रधान कर्तव्य होगा। अर्थात यह विषय **भारत के नवजनवादी क्रांति के पूरे चरण में** लागू होने वाला विषय है। इसे हम रणनीतिक पहलू कहते हैं। नवजनवादी क्रांति के पूरे चरण में हमारी राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक प्रयास में पैदा होने वाले गलत रूझानों से बचने के लिए हमने रणनीतिक दिशानिर्देशन देते हुए इस विषय के बारे में बताए हैं। तैयारियों के नाम पर लम्बे समय तक टाल देने से बचने के लिए ही फौरी तौर पर इस कर्तव्य को पूरा करने पर ध्यान देने हेतु इसे फौरी कर्तव्य के रूप में बताया गया है। इसलिए जनसेना और आधार इलाके का निर्माण भारतीय क्रांति के बुनियादी व आम कर्तव्य और रणनीतिक कर्तव्य के रूप में समझना होगा और उसे लागू करने के क्रम में समय-समय पर आंदोलन के शक्ति-संतुलन के आधार पर फौरी कर्तव्यों को और प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य को तय करना

कार्यनीतिक पहलू के रूप में समझना होगा। रणनीतिक नेतृत्व के अंतर्गत ही कार्यनीतिक नेतृत्व होती है। इसलिए यह रणनीतिक नेतृत्व के कर्तव्यों और जरूरतों के अधीन होती है। इसलिए इस तरह के महत्वपूर्ण कर्तव्यों को तय करना केन्द्रीय कमेटी की जिम्मेदारी होती है।

2. पार्टी कांग्रेस द्वारा केन्द्रीय कर्तव्य तय करने के बावजूद, आंदोलन के शक्ति-संतुलन में होने वाले बदलावों के अनुसार फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य को बदलना क्या सही है?

इस विषय को समझने के लिए पहले दार्शनिक/सैद्धांतिक धारणाओं को देखेंगे।

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद बताती है कि हर एक चीज (entity) उसमें निहित विपरीत पहलुओं के बीच अंतरविरोधों के कारण लगातार चलन में (बदलती) रहती है। इसलिए एक समस्या को, एक विषय को जब अध्ययन करते हैं, हमें मनोगतवाद, एकपक्षता और अल्पदृष्टि को छोड़ना होगा। इसके बिना भौतिक परिस्थितियों में होने वाले बदलावों को अध्ययन करने में हम गलतियां करते हैं। यह मनोगतवाद एक रूझान के रूप में होने पर, वह राजनीतिक दक्षिणपंथ या वामपंथ के रूप में अभिव्यक्त होता है। इससे हमारे क्रांतिकारी आंदोलन के समस्याओं को हल करने के लिए दिये जाने वाले दिशानिर्देशन नुकसानदेह हो सकते हैं।

''क्रान्तिकारियों की पांतों में हम उन कट्टरतावादियों का विरोध करते हैं जिनके विचार बदलती हुई वस्तुगत परिस्थितियों के अनुसार आगे नहीं बढ़ पाते तथा इतिहास में दक्षिणपंथी अवसरवाद के रूप में प्रकट होते हैं। वे लोग यह नहीं देख पाते कि अन्तरविरोधों का संघर्ष पहले ही वस्तुगत प्रक्रिया को आगे बढ़ा चुका है, जबकि उनका अपना ज्ञान पुरानी मंजिल पर ही रुक गया है। सभी कट्टरतावादियों के विचारों की यही विशेषता होती है। उनके विचार सामाजिक व्यवहार से अलग होते हैं, और वे समाज के रथचक्रों का पथ-प्रदर्शन नहीं कर सकते....''

''हम लोग "वामपंथियों" की लफ्फाजी का भी विरोध करते हैं। उनके विचार वस्तुगत प्रक्रिया के विकास की एक निश्चित मंजिल से आगे होते हैं; उनमें से कुछ लोग अपनी कल्पना की उड़ान को ही सत्य समझते हैं, और कुछ अन्य लोग तो एक ऐसे आदर्श को आज ही जबरदस्ती अमल में लाना चाहते

हैं जिसे सिर्फ कल ही अमल में लाया जा सकता है। वे बहुसंख्यक लोगों के सामयिक व्यवहार से और तात्कालिक वास्तविकता से अपने को अलग कर लेते हैं तथा अपनी कार्यवाही में अपने आपको दुस्साहसवादी जाहिर कर देते हैं।'' (माओ संकलित रचनाएं, ग्रंथ-1, 'व्यवहार के बारे में', जुलाई 1937, पृष्ठ-152, पैराग्राफ-3 और 4, पेजमेकर फाइल)।

माओ के उक्त बातों का मतलब यह है कि एक वस्तु (entity) को ऐसे देखना होगा कि लगातार चलन के तहत उसमें बदलावें होती हैं, उसके अनुसार ही वर्गसंघर्ष, जनयुद्ध और क्रांतिकारी आंदोलन का विश्लेषण कर, ठोस जगह और समय के मुताबिक आंदोलनों का वास्तविक रूप से आकलन कर, दिशानिर्देशन देना होगा, ठोस जगह और समय के मुताबिक क्रांतिकारी आंदोलन की गति को मनोगत ढंग से विश्लेषण करने पर, उसमें हुई बदलाव को सही रूप से पहचान करने के बजाय वास्तविक स्थिति से उलट देने वाली दिशानिर्देशन से राजनीतिक तौर पर वामपंथी और दक्षिणपंथी गलतियां हो सकती है।

क्रांतिकारी दौर में हालात बहुत जल्दी से बदलते हैं। इसलिए माओ कहते हैं कि जब एक भौतिक क्रम पहले से ही शुरू होकर, उसका विकास में एक चरण से दूसरा चरण में दाखिल हो जाती है, तब सामाजिक आंदोलनों का दिशानिर्देशन करने वाले क्रांतिकारी नेताएं उसके अनुरूप खुद अपने आप और उनके साथ-साथ सभी साथियों का भी अपने-अपने आत्मगत ज्ञान को बढ़ाने और उसे विकसित करने में भी महारत हासिल करना होगा, यानी उन्हें जरूर ऐसी सावधानी बरतनी होगी जिससे क्रांति से संबंधित प्रस्तावित नए कर्तव्य और नए कार्यक्रम परिस्थितियों में आने वाले नए बदलावों के अनुरूप हो।

लेकिन क्रांतिकारी दौर में बदलती परिस्थितियों को द्वंद्वात्मक भौतिकवादी पद्धति से अध्ययन नहीं करने से मनोगतवाद का शिकर हो जाएंगे। यह एक रूझान रूप में तब्दील हो जाने से राजनीतिक रूप से वामपंथी और दक्षिणपंथी गलतियां कर सकते हैं। इसलिए जल्दबाजी से, मनोगतवाद का शिकार होने के बजाय द्वंद्वात्मक भौतिकवादी पद्धति से अध्ययन कर राजनीतिक तौर पर उचित कर्तव्यों और कार्यनीति तय करना जरूरी है।

वर्ष 2007 में भारत की क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ने की स्थिति में थी, 2013 तक जो कठिन दौर में दाखिल हो गयी। अभी भी वह सामग्रिक रूप से

कठिन दौर से ही गुजर रही है। भारत की क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ने की स्थिति में जो फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य तय की गयी थी, वस्तुगत परिस्थिति में आए हुए बदलाव के अनुसार उसे बदलने के द्वारा ही क्रांतिकारी आंदोलन को हमने सटीक चला सकते हैं। लेकिन जो बदलाव आए हैं, वे सिर्फ मात्रात्मक बदलाव ही हैं। इसलिए सिर्फ कार्यनीति में ही बदलाव लाना चाहिए।

भारत की क्रांतिकारी आंदोलन/जनयुद्ध, प्रतिक्रांतिकारी युद्ध का सामना कर रही है। इन दो विपरीतों के बीच संघर्ष के कारण जो वस्तुगत स्थिति (क्रांतिकारी आंदोलन की स्थिति) उभरती है, उसके बारे में मनोगतवादी आकलन, उसके तहत दक्षिणपंथी और वामपंथी आकलन करने से बचने के लिए, हर दो-चार वर्षों में एक बार स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनल/राज्यों के प्लीनमों, रीजनल ब्यूरो के बैठकों-विस्तारित बैठकों, लगभग तीन-चार वर्षों में एक बार केन्द्रीय कमेटी बैठकों का आयोजन करते हुए आंदोलन की स्थिति का आकलन कर रहे हैं। 2010 में केन्द्रीय कमेटी की तीसरी बैठक के प्रस्ताव के मुताबिक अक्टूबर 2011 में दण्डकारण्य प्लीनम, 2012 में मध्य रीजनल ब्यूरो का बैठक, 2012 में बिहार-झारखण्ड स्पेशल एरिया के प्लीनम का आयोजन हुई। 2013 में केन्द्रीय कमेटी की चौथी बैठक संपन्न हुई। इस बैठक के प्रस्ताव के अनुसार 2014 में पूर्वी रीजनल ब्यूरो का बैठक, 2014 में मध्य रीजनल ब्यूरो का विस्तारित बैठक, 2015 में पूर्वी रीजनल ब्यरूो का विस्तारित बैठक, 2017 में पूर्वी बिहार-पूर्रोत्तर झारखण्ड स्पेशल एरिया प्लीनम संपन्न हुई। अपने-अपने स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य, रीजनल ब्यरूो के आंदोलन की स्थिति पर संबंधित एसएसी/एसजेडसी/एससी, रीजनल ब्यूरो अपने आकलन के साथ, उन आकलनों के आधार पर फौरी कर्तव्यों को भी निर्देशित किये। इसी तरह केन्द्रीय कमेटी ने भी वर्ष 2013 तक समीक्षा की कि देशभर में आंदोलन की स्थिति कठिन दौर से गुजर रही है। इस आकलन के साथ-साथ, उस स्थिति से उबरने के लिए लिए जाने वाले कर्तव्यों को भी तय किये। इसी तरह 2017 के केन्द्रीय कमेटी बैठक ने भी लिए जाने वाले कर्तव्यों को तय किये।

आम तौर पर, कांग्रेस द्वारा तय कर्तव्यों के मुताबिक ही, अगले कांग्रेस तक समूचे देश में पार्टी अपनी गतिविधियां चलाती है। लेकिन वस्तुगत विकास के क्रम के चरणों के मुताबिक अगर हम अपने कर्तव्यों को नहीं बदलते हैं, तो क्रांतिकारी आंदोलन को नुकसान झेलना पड़ता है। इसलिए समय-समय पर क्रांतिकारी आंदोलन के वास्तविक विकास क्रम को वास्तविक रूप से आकलन

करने के लिए स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों के प्लीनमों, रीजनल ब्यूरों के विस्तारित बैठकों, यथासंभव केन्द्रीय प्लीनमों का आयोजन करते हुए, कांग्रेस द्वारा निर्देशित कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए ही, उनमें जरूरी बदलावें करना ही ठीक होगा। कांग्रेस द्वारा निर्देशित कर्तव्यों को फिर से कांग्रेस में ही बदल सकते हैं की अवधारणा यांत्रिकतावाद होगी।

क्रांतिकारी आंदोलन नामक एक वस्तु (entity) में दो विपरीत पहलुएं, यानी दुश्मन के हमले और हमारे जवाबी हमले (क्रांतिकारी युद्ध और प्रतिक्रांतिकारी युद्ध) के बीच जारी संघर्ष के परिणामस्वरूप होने वाले बदलावों के अनुरूप कर्तव्यों को बदलना वैचारिक और राजनीतिक रूप से ठीक होगा। जब यह दार्शनिक और राजनीतिक तौर पर ठीक है तो, इसके अधीन एक सांगठनिक तरीका होना चाहिए या उस सारतत्व के अधीन एक तरीका (मंच) होना चाहिए। प्रतिक्रांतिकारी हमला गंभीर रूप से जारी रहने के परिस्थितियों में स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों के प्लीनमों, रीजनल स्तर के विस्तरित बैठकों/विशेष बैठकों/प्लीनमों द्वारा अपने-अपने स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों और रीजियनों में कांग्रेस निर्देशित कर्तव्यों को पूरा करने के लिए की जाने वाली राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक प्रयास, उसमें उत्थान-पतन या सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को चर्चा कर, केन्द्रीय कमेटी के पास अपने आकलन के साथ-साथ, अपने प्रस्तावों (proposals) को भेजने से, तब केन्द्रीय कमेटी द्वारा जनवादी केन्द्रीयता के उसूल के अनुसार लिए जाने वाले सभी निर्णय समूचे पार्टी के लिए ठीक होगा। यह तरीका यांत्रिक अवधारणा के विपरीत न सिर्फ वैज्ञानिक होगा, बल्कि इससे जनवादी केन्द्रीयता के उसूल का भी पालन किया जा सकता है।

चीन में वर्ष 1928 में 6वीं कांग्रेस हुई थी। फिर 17 वर्ष के बाद ही 1945 में 7वीं कांग्रेस हुई थी। इस अंतराल में पार्टी ने अपनी दिशा (लाइन) को ही मौलिक रूप से बदलकर दीर्घकालीन जनयुद्ध की दिशा को अपनाया। जब जापान चीन पर दुराक्रमण कर उसे एक उपनिवेश के रूप में बदलने की कोशिशें कर रही थी, तब क्वमिङताङ के खिलाफ जारी गुहयुद्ध के स्थान पर जापान विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध के लिए सुन्यी अधिवेशन (पोलिटिकल ब्यूरो के विस्तृत बैठक) द्वारा नयी कार्यक्रम अपनायी गयी थी। इसलिए क्रांतिकारी आंदोलन की स्थिति में उभर कर आने वाले बदलावों पर, आंदोलन के शक्ति-संतुलन में आए बदलावों पर, देशीय-अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति में होने वाले बदलावों पर निर्भर होकर फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य को बदलने द्वारा ही

क्रांतिकारी आंदोलनों को हम सही तरीके से संचालन कर सकते हैं। इसके विपरीत आंदोलन के स्थिति को मनोगत ढंग से (वामपंथी या दक्षिणपंथी रूझानों से ग्रसित होकर) आकलन करने से या सिर्फ औपचारिकता (पद्धति) को प्राथमिकता देकर यांत्रिक दृष्टि से आंदोलन का दिशानिर्देशन करने से नुकसान झेलना पड़ सकता है।

हमारी पार्टी की पहली (8वीं) कांग्रेस के बाद दूसरी कांग्रेस-एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस का आयोजन तक 37 वर्ष बीत चुके थे। इस दूसरी कांग्रेस के आयोजन का अब तक 10 वर्ष बीत चुके है। पिछले दशक के परिस्थिति की जांच-पड़ताल करने से हम पाते हैं कि भारत के क्रांतिकारी आंदोलन पर शासक वर्गों द्वारा थोपे गए बहुत ही भीषण प्रतिक्रांतिकारी हमले के कारण निकट भविष्य में कांग्रेस का आयोजन करने का अवसर नहीं दिखाई पड़ रहा है। 1960 के अंत से विश्व में विभिन्न देशों में जारी क्रांतिकारी आंदोलनों का इतिहास हमारे इतिहास एक ही तरह है। इस स्थिति में भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को सही मार्गदर्शन देने के लिए केन्द्रीय कमेटी को पहलकदमी के साथ अपने कार्य संभालना होगा।

स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनल/राज्य कमेटियों द्वारा नियमित रूप से बैठकों का आयोजन करते हुए, विभिन्न राज्यों में जोनल/जिला/डिविजनल, स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनल/राज्य और रीजनल ब्यूरों के प्लीनमों को संपन्न करने के परिस्थितियों में कांग्रेस या केन्द्रीय प्लीनम का आयोजन नहीं करने पर भी, केन्द्रीय कमेटी और पोलिटिकल ब्यूरो द्वारा आंदोलन की स्थिति का आकलन कर कार्यनीति बनाया जा सकता है। नयी कार्यनीति तय की जा सकती है। राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक विषयों में महत्वपूर्ण निर्णय ली जा सकती है। रीजनल ब्यूरों और स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनल/राज्य कमेटियों द्वारा की जाने वाली आंदोलन के समीक्षाओं और कार्यनीतिक बदलावों का दिशानिर्देशन केन्द्रीय कमेटी/पोलिट ब्यूरो कर सकती है। यह भी जनवादी केन्द्रीयता के दायरे में ही आता है।

कठिन दौर में समूचे केन्द्रीय कमेटी की बैठक नहीं होने पर भी, रीजनल ब्यूरों और विभिन्न स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों में कार्यरत केन्द्रीय कमेटी सदस्य सामूहिक टीमों के तौर पर केन्द्रीय कमेटी के तरफ से विभिन्न आंदोलनों का दिशानिर्देशन करना चाहिए। जहां इस तरह के टीम नहीं है, विभिन्न स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों का निर्देशन देने वाले केन्द्रीय कमेटी के एक ही सदस्य है, वहां भी, उन्हें हमारे दिशा (लाइन) के आधार पर पहलकदमी के साथ कार्य

करना होगा।

गृहयुद्ध के परिस्थितियों में, कठिन दौर में क्रांतिकारी आंदोलन को बचाने के लिए उक्त तरीकों को अपनाते हुए केन्द्रीय कमेटी अपनी काम-काज को जारी रखना न केवल जरूरी है, बल्कि सही भी है। कठिन परिस्थितियों में रीजियनों और इलाकों के तौर पर केन्द्रीय कमेटी सदस्य सामूहिक टीमों के रूप में रहते हुए आंदोलन का उचित दिशानिर्देशन और कमान का कार्य नहीं करने से आंदोलन में तालमेल-हीनता उभर कर आ सकती है; पहलकदमी कम हो जाने, उसपर चोट पहुंचने और हार का सामना करने की परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसलिए कांग्रेस और केन्द्रीय प्लीनमों का आयोजन नहीं होने पर भी केन्द्रीय कमेटी जनवादी केन्द्रीयता के पद्धति पर अमल करने के दौरान की जाने वाली आंदोलन की समीक्षाएं, तय की जाने वाली कार्यनीति, लिये जाने वाले महत्वपूर्ण निर्णयों को समूचे पार्टी को अमल करना होगा। जनवादी केन्द्रीयता की पद्धति के अनुसार पूरी पार्टी उक्त निर्णयों को अमल करते हुए ही, उसपर अपने मत या सोच-विचारों को केन्द्रीय कमेटी के पास भेज सकती है। समूचे पार्टी से व्यक्त होने वाले मतों की केन्द्रीय कमेटी द्वारा समीक्षा कर, फिर से नए कर्तव्य और कार्यनीति तय की जाती है। जब तक कठिन दौर से उबर कर अनुकूल स्थिति उभर कर नहीं आएगी, तब तक राज्य प्लीनमों और ब्यूरो प्लीनमों का आयोजन करने के साथ-साथ उक्त पद्धति पर अमल करना भी जरूरी है।

हमारे व्यवहार में आंदोलन की स्थिति को अध्ययन करने (आकलन करने) में हो, उचित कर्तव्य तय करने में हो, हम मनोगतवाद, दक्षिणपंथ और वामपंथ एवं यांत्रिकता का शिकार नहीं हुए हैं। अक्टूबर 2011 में संपन्न दण्डकारण्य प्लीनम ने अपने स्पेशल जोन के आंदोलन का आकलन किया कि वह कठिन दौर से गुजर रहा है। दरअसल एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस के केन्द्रीय कर्तव्य तय करने में महत्वपूर्ण आधारों में से एक है डीके आंदोलन। फिर भी डीके आंदोलन कठिन दौर में दाखिल हो जाने की प्लीनम के आकलन के मुताबिक पीएलजीए फारमेशनों के बारे में, युद्ध स्तर के बारे में, युद्ध संसाधनों को प्राप्त करने के बारे में, आंदोलन का विस्तार के बारे में अगस्त 2012 के सीआरबी बैठक में निम्नांकित प्रस्ताव किया गया था :

''डीके में जन आधार कमजोर हो जाने के कारण मध्य रीजियन भर में आगामी दो वर्षों में कंबाट बलों का संगठितीकरण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। डीके सहित अन्य इलाकों में कंबाट बलों के फारमेशनों का विस्तार नहीं

करना चाहिए और उच्च स्तर के फारमेशनों का गठित नहीं करना चाहिए। अनिवार्यत: जरूरी जगहों पर कुछ इकाइयां/यूनिटों (एलजीएस और प्लाटून) का गठन कर सकते हैं। नए भर्ती कम हो जाने के परिस्थितियों में, कंबाट यूनिटों में संख्या को बढ़ा नहीं सकने के परिस्थितियों में, उन्हें राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक तौर पर संगठित करते हुए, उनकी प्रतिरोध क्षमता को बेहतर करना होगा। बटालियन में दो-दो कंपनियां, कंपनियों में दो-दो प्लाटून, प्लाटूनों में दो-दो सेक्शन होने पर ध्यान देना चाहिए। इसी तरह एक-एक सेक्शन में कम से कम चार-चार साथी से दो ग्रुप होना चाहिए। इस तरह संख्या को बरकरार रख नहीं पाने से यूनिटों का स्तर घटा सकते हैं। पर रद्द नहीं करना है।

रीजनल बलों में भी उक्त पद्धति पर अमल करना है। (इस पद्धति के मुताबिक पहला (सेन्ट्रल रीजनल) कंपनी को कंपनी के तौर पर संचालित नहीं कर पाने की स्थिति में, उसे दो सेक्शन और एक हेडक्वार्टर के साथ प्लाटून के रूप में संचालित करना चाहिए।)

इस स्थिति में मुख्य रूप से छोटे और मध्यम किस्म के युद्ध कार्रवाइयों के जरिए गुरिल्ला युद्ध को जारी रखना चाहिए। छोटे टीमों के जरिए बड़े कार्रवाइयों को अंजाम देने के कार्यनीति पर अमल करना चाहिए। नाइट एम्बुशों के जरिए दुश्मन पर यथासंभव चोट पहुंचाना चाहिए। पुलिस की गतिविधियां अधिक रहने के जगहों और रास्तों को पहचान कर उचित तैयारियां कर, एक्शन टीमों (एटी) और रेक्की टीमों (आरटी) को इस्तेमाल कर दुश्मन पर चोट पहुंचाना चाहिए। सभी संसाधनों को एकत्रित कर दुश्मन के कमजोरियों को पहचान कर कुछ बड़े कार्रवाइयों का अंजाम देना चाहिए।

जनता और मिलिशिया को व्यापक तौर पर गोलबंद कर माइन युद्धतंत्र को विस्तृत करना चाहिए। इसके लिए अन्य संसाधनों का इस्तेमाल करने के साथ-साथ स्थानीय संसाधनों पर निर्भर होकर गन पॉउडर को बड़े पैमाने पर बनाना चाहिए। इसके लिए गन पॉउडर तैयारी कैंपों को संचालित करना चाहिए।

गुरिल्ला युद्ध संचालन के लिए जरूरी ए एण्ड ए एण्ड इ के लिए स्थानीय संसाधनों का खोजबीन करना चाहिए। स्थानीय संसाधनों पर निर्भर होकर मिलिशिया को हथियारबंद करना है। हथियारबंद मिलिशिया का तादाद बढ़ाना चाहिए।

....

डीके-सीओबी-ओएस-एओबी के बीच के इलाके में (हमारे आंदोलन का) विस्तार करना चाहिए। सीओबी से दो रास्तों से बीजे को जोड़ना है। उत्तर गढ़चिरोली डिविजन के दायरे को बढ़ाने के लिए गोंदिया डिविजन के दायरे को गढ़चिरोली-देवरी सड़क के उस पार तक ही सीमित रखना है''।

कांग्रेस द्वारा निर्देशित केन्द्रीय कर्तव्य को बदलने के बजाय बदली हुई आंदोलन की शक्ति-संतुलन को ध्यान में रखकर किस तरह इस कर्तव्य को अमल करना- इस संबंध में ठोस दिशानिर्देशन देते हुए सीआरबी द्वारा फौरी कर्तव्य तय किए गए हैं। इसी तरह मार्च 2013 में हुई केन्द्रीय कमेटी की चौथी बैठक ने डीके आंदोलन कठिन दौर में दाखिल हो जाने, बीजे आंदोलन अस्थायी तौर पर पीछे हटने (temporary) की स्थिति के साथ-साथ देशभर के आंदोलन की स्थिति को विश्लेषण कर यह आकलन किया कि समूचे देश में आंदोलन कठिन दौर से गुजर रहा है। इस वास्तविक आकलन पर निर्भर होकर आंदोलन को कठिन दौर से बाहर लाकर, उत्थान की स्थिति तक पहुंचाने अगले दो वर्षों के लिए आम बुनियादी कार्यनीति के साथ रणनीतिक योजना बनायी। इस कार्यनीति को इस लक्ष्य से बनायी गयी कि ऑपरेशन ग्रीन हंट के नाम पर देशभर में दुश्मन द्वारा संचालित चौतरफा हमले को प्रतिरोध कर हराने और आंदोलन को बचाते हुए, एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित कर्तव्यों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ सके। सीआरबी हो या केन्द्रीय कमेटी हो, कांग्रेस द्वारा निर्देशित केन्द्रीय कर्तव्य को बदलने के बजाय, बदली हुई आंदोलन के शक्ति-संतुलन के परिस्थितियों में कांग्रेस द्वारा निर्देशित कर्तव्यों के अमल में यांत्रिकता और मनोगतवाद का शिकार होने के बजाय द्वंद्वात्मक वैज्ञानिक दृष्टि से ठोस रूप से फौरी कर्तव्यों को तय किया। इन कार्यनीति पर निर्भर होकर हमारे प्रतिरोध को जारी रखते हुए इस युद्ध को लंबा खींचने (drag on) द्वारा दुश्मन के योजनाओं को विफल किए हैं।

3. केन्द्रीय कर्तव्य समूचे देश के लिए क्या एक ही रहेगा या स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनल/राज्य कमेटियां क्या अलग से केन्द्रीय कर्तव्य तय कर सकती हैं या इन कमेटियां फौरी कर्तव्यों को तय करने का मानदण्ड या पद्धति क्या है?

अगर भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को एक (single) ही वस्तु (entity) के रूप में लिया जाय, तो केन्द्रीय कर्तव्य एक ही रहेगा। अगर हर एक स्पेशल

एरिया/स्पेशल जोन/राज्य अपने केन्द्रीय कर्तव्य को तय करते हैं तो, देशभर के क्रांतिकारी आंदोलन में कई केन्द्रीय कर्तव्य अस्तित्व में आ जाएंगे और आत्मगत शक्तियों और भौतिक संसाधनों के तैनाती में, उनके केन्द्रीकरण में और युद्ध संचालन में अव्यवस्था सामने आ जाएगा और वस्तुगत स्थिति में (जनयुद्ध में) कहीं भी गुणात्मक बदलाव नहीं ला सकेंगे। कहीं भी गुरिल्ला बेसों-आधार इलाके का निर्माण नहीं कर सकेंगे। इसलिए भारत के क्रांतिकारी आंदोलन में निर्धारित रणनीतिक इलाकों में गुरिल्ला बेसों-आधार इलाके की स्थापना करने का केन्द्रीय कर्तव्य को चयन करने द्वारा ही परिस्थिति में गुणात्मक बदलाव ला सकते हैं। इसलिए स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य के आंदोलन खुद अपने लिए अलग से केन्द्रीय कर्तव्य तय नहीं कर सकते/नहीं करना चाहिए। सभी स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों को अपने इलाके के आंदोलन जितने भी सीमित हो, केन्द्रीय कर्तव्य को पूरा करने के लिए उन्हें अपने स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्यों में अपने ताकत के मुताबिक वर्गसंघर्ष और जनयुद्ध को संचालित करते हुए, अपने इलाकों से आत्मगत शक्तियों और भौतिक संसाधनों को केन्द्रीय कर्तव्य को पूरा करने के लिए आबंटित करना चाहिए। केन्द्रीय कर्तव्य का मतलब ही है देश के सभी स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनों/राज्यों और सभी विभागों को उसे पूरा करने के लिए प्रयास करना। सभी स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य केन्द्रीय कर्तव्य को सामने रखकर प्रयास करते हुए ही अपने इलाकों में आंदोलन का विकास करने के लिए **एक प्रधान कर्तव्य**, उस प्रधान कर्तव्य को पूरा करने के लिए पार्टी, सैनिक और संयुक्तमोर्चा के क्षेत्रों से संबंधित **फौरी कर्तव्यों** को या राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक तौर पर फौरी कर्तव्यों को तय करना चाहिए। सभी स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य पहले केन्द्रीय कर्तव्य को सामने रखकर, उसको पूरा करने के लिए मददगार साबित होने वाला एक प्रधान कर्तव्य और अन्य फौरी कर्तव्यों को अपने-अपने इलाकों में तय करना ही सही पद्धति है।

लेकिन, स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनों/राज्यों को अपने-अपने इलाकों में प्रधान कर्तव्यों और अन्य फौरी कर्तव्यों को किस मानदण्ड के आधार पर निर्णय करना है? किस पद्धति के मुताबिक तय करना है?

क्रांति का मतलब ही सशस्त्र शक्ति द्वारा सत्ता पर कब्जा करना है। इसलिए क्रांति के लिए तैयारियों से लेकर सभी चरणों और सभी क्षेत्रों में सत्ता पर कब्जा करने के केन्द्रीय कर्तव्य के साथ ही आंदोलनों को विकसित करना चाहिए। इस

आम उसूल पर अमल करने के लिए हमारी पार्टी द्वारा तय 'भारतीय क्रांति के रणनीति-कार्यनीति' दस्तावेज हमें स्पष्ट दिशानिर्देशन देती है। इस दस्तावेज के मुताबिक असमान आर्थिक और राजनीतिक विकास से ग्रस्त अर्धऔपनिवेशिक और अर्धसामंती स्वभाव ही भारतीय समाज का स्वभाव है। यही प्रमुख स्वाभाविक लक्षण हमारी राजनीतिक रणनीति-कार्यनीति और सैनिक रणनीति-कार्यनीति को बुनियादी तौर पर निर्धारित करता है।

भारत के असमान आर्थिक और राजनीतिक विकास तथा अर्धऔपनिवेशिक और अर्धसामंती समाज के स्वभाव के कारण ही हमारे देश में इलाके के आधार पर सत्ता दखल की दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन को लागू कर रहे हैं। भारत के असमान विकास के कारण वर्गसंघर्ष में, जनयुद्ध में भी असमानताएं बरकरार रहेगी। वर्गसंघर्ष-जनयुद्ध के असमानताओं के कारण कुछ इलाके लाल प्रतिरोध इलाकों के रूप में, कुछ इलाके गुरिल्ला जोनों के रूप में, और कुछ इलाके गुरिल्ला बेसों-आधार इलाके के रूप में होंगे। राजसत्ता को केन्द्र में रखकर ही संघर्षरत इलाकों के स्तर को इस तरीके से विभाजित की गयी है। हमने यह वर्गीकरण किया है कि लाल प्रतिरोध इलाकों में दुश्मन की सत्ता जारी रहेगी, इन इलाकों में गुरिल्ला जोनों का निर्माण करने के लिए तैयारियां करते हैं; गुरिल्ला जोन इलाकों में राजसत्ता के दखल के लिए दुश्मन और हमारे बीच छीना-झपटी होती रहेगी; जन राजनीतिक सत्ता निर्माण होकर-कार्यरत होने वाले इलाके गुरिल्ला बेसों-आधार इलाके के रूप में रहेंगे।

इस विषय को ध्यान में रखकर विभिन्न इलाकों में प्रधान और फौरी कर्तव्यों को तय करना चाहिए। जहां नए सिरे से आंदोलन की शुरुआत हुई हैं, उन इलाकों को लाल प्रतिरोध इलाकों के रूप में विकसित करना फौरी और **प्रधान कर्तव्य** के रूप में रहेगा। उस प्रधान कर्तव्य को पूरा करने में मदद करने के लिए पार्टी, जनसेना और संयुक्तमोर्चा के क्षेत्रों से संबंधित अन्य फौरी कर्तव्यों को तय करना चाहिए। जो इलाके लाल प्रतिरोध इलाकों के रूप में विकसित हुई हैं, उनमें गुरिल्ला जोन निर्माण करना ही फौरी और **प्रधान कर्तव्य** के रूप में रहेगा। इस प्रधान कर्तव्य को पूरा करने के समर्थन में पार्टी, जनसेना और संयुक्तमोर्चा के क्षेत्रों से संबंधित अन्य फौरी कर्तव्यों को तय करने होंगे। एक इलाका गुरिल्ला जोन के रूप में विकसित हुए तो, उस इलाके को गुरिल्ला बेसों-आधार इलाके के रूप में विकसित करने को ही फौरी और **प्रधान कर्तव्य** के रूप में निर्णय करना होगा। इस प्रधान कर्तव्य को पूरा करने के समर्थन में अन्य फौरी कर्तव्यों

को तय करेंगे।

जनयुद्ध में जीत, हार, फिर जीत, फिर हार, अंत में जीत के आम उसूल के अनुसार आधार इलाकें गुरिल्ला जोनों के रूप में परिवर्तित हो सकती हैं; गुरिल्ला जोनें लाल प्रतिरोध इलाकों में तब्दील हो सकती हैं; जहां हमारे सैनिक क्षमता से परे दुश्मन भारी सैनिक हमले करते हो, हमारे द्वारा लागू कार्यनीति में गलतियां होने के कारण हो, गुरिल्ला जोनें सफेद इलाकों के रूप में, दुश्मन के कब्जे वाले इलाकों के रूप में भी तब्दील हो सकती हैं। इस तरह पीछे हटे हुए इलाकों में फिर से आगे बढ़ने की प्रयास करना ही प्रधान कर्तव्य होगी।

वर्तमान तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, एओबी, उत्तर छत्तीसगढ़, पश्चिम बंग इलाके अस्थाई रूप से पीछेहट की स्थिति में (temporary setback में) हैं। इन इलाकों में कुछ मैदानी धरातल में हैं और कुछ रणनीतिक इलाके हैं। तेलंगाना और एओबी वितग में राजसत्ता दखल करने के लिए दुश्मन और हमारे बीच छीना-झपटी हुए गुरिल्ला इलाकों के रूप में कुछ वर्षों तक अस्तित्व में रहे और पश्चिम बंग के बीजेओ इलाके ने कुछ ही देर तक गुरिल्ला जोन के रूप में अपनी अस्तित्व दर्ज की। उत्तर छत्तीसगढ़ एक लाल प्रतिरोध इलाका के रूप में रहते हुए ही दुश्मन के हमले को संभाल नहीं पाने के वजह से पीछेहट का शिकार हो गयी है। इसलिए अस्थायी तौर पर पीछे हटने वाले इलाकों में प्रधान, फौरी कर्तव्यों को तय करने के संदर्भ में हमने कुछ विषयों पर चर्चा करने की आवश्यकता है और उन्हें ध्यान में रखना चाहिए।

वे हैं -

1. अस्थायी तौर पर पीछेहट को किस तरह समझना होगा और किस तरह परिभाषित करना होगा?

2. विभिन्न इलाकों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धरातल (टेरेन) के परिस्थिति का आकलन करना।

3. ये इलाकें प्रधान गुरिल्ला जोनों-गुरिल्ला बेसों के इर्दगिर्द हैं या नहीं? - इन विषयों को ध्यान में रखना।

इन विषयों को एक-एक कर कुछ विस्तार यहां चर्चा करेंगे :

चीनी क्रांतिकारी युद्ध के अनुभवों के आधार पर माओ ने जनयुद्ध के विज्ञान का विकसित किया। माओ द्वारा बनायी गयी दीर्घकालीन लोकयुद्ध के लाइन के अनुसार रणनीतिक रक्षा की मंजिल, रणनीतिक ठहराव की मंजिल और

रणनीतिक प्रत्याक्रमण की मंजिल से जनयुद्ध गुजरता है।

इन रणनीतिक मंजिलों में भी जनयुद्ध कई बार कार्यनीतिक तौर पर जीत, हार, फिर जीत, फिर हार, अंत में जीत से गुजरते हुए आत्मगत शक्ति को बढ़ाने के साथ-साथ दुश्मन की शक्ति को नष्ट करते हुए दुश्मन और हमारे बीच शक्ति-संतुलन में रणनीतिक बदलाव लाते हुए, रणनीतिक मंजिलों में परिवर्तन हासिल करते हुए आगे बढ़ती है। इन तीन रणनीतिक मंजिलों के युद्धतंत्रों में भी प्रत्याक्रमण-आत्तरक्षा, आगे बढ़ना-पीछे हटना, जीत-हार होती हैं। ये कार्यनीतिक तौर पर होती हैं और रणनीतिक तौर पर होती हैं। ''चीनी क्रांतिकारी युद्ध में रणनीतिक संबंधित समस्याएं'' के निबंध में लाल सेना के लिए हार का मतलब क्या होता है- इसके बारे में माओ ने बताया, ''रणनीति की दृष्टि से, ... जवाबी मुहिम पूरी तरह असफल हो जाती है, सिर्फ तभी उसे हार कहा जाएगा; फिर भी इस हार को आंशिक और अस्थाई ही कहा जाएगा। कारण यह कि गृहयुद्ध की पूर्ण पराजय का अर्थ होगा लाल सेना का पूर्ण विनाश, लेकिन ऐसा कभी हुआ नहीं है। विस्तृत आधार-क्षेत्रों का हाथ से निकल जाना और लाल सेना का स्थानान्तरित होना आंशिक और अस्थाई पराजय ही है, अन्तिम और पूर्ण पराजय नहीं ....'' इस तरह माओ ने लालसेना के लिए कार्यनीतिक हार का मतलब क्या होता है और रणनीतिक हार का मतलब क्या है - इसके बारे में बताया था।

वर्तमान हमारे मुताबिक तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, एओबी आदि इलाके अस्थायी तौर पर पीछेहट (temporary setback) की स्थिति में हैं। यह सही है। यह रणनीतिक हार को नहीं बल्कि अस्थायी और आंशिक हार को ही सूचित करता है।

माओ ने जनयुद्ध में कार्यनीतिक हार और रणनीतिक हार के बारे में बताते हुए, यह भी कहा है कि जनयुद्ध में कई ज्वार-भाटा, उतार-चढ़ाव और घुमाव-करवट (twists and turns) भी होते हैं। ये कार्यनीति संबंधित ही है और अस्थायी ही है। इसमें ज्वार, चढ़ाव और करवट (turns) आंदोलन के विकास और उत्थान को सूचित करते हैं और भाटा, उतार और घुमाव (twists) आंदोलन का पीछे हटने (अवनति) की स्थिति को सूचित करते हैं। इसमें आंदोलन के वस्तुगत स्थिति में मात्रात्मक बदलाव ही दर्शाया जाता है। इसलिए उसके मुताबिक कार्यनीति में परिवर्तन होना चाहिए। आंदोलन की स्थिति में बदलाव का आंकलन कर उसके मुताबिक कार्यनीति को बनाना चाहिए। कार्यनीति में बदलाव नहीं लाने से इस आकलन से कोई फायदा नहीं होगा कि आंदोलन की स्थिति

में बदलाव आयी है। इस तरह की स्थिति में आंदोलन की स्थिति पर किए गए आकलन में व्यक्त किये जाने वाले शब्द सिर्फ आलंकारिक शब्द ही रह जाएंगे और आंदोलन की स्थिति में कोई विकास नहीं होगा।

हमारे जनयुद्ध अभी रणनीतिक रक्षा की मंजिल में होने के बावजूद एक निर्धारित इलाका लाल प्रतिरोध इलाके के स्तर से गुरिल्ला जोन के रूप में; गुरिल्ला जोन से गुरिल्ला बेसों-आधार इलाके के रूप में विकसित होने पर, यह आकलन कर सकते हैं कि उसके स्वभाव में परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन उत्थान और विकास का सूचक होगा। इसी तरह एक निर्धारित इलाके के आंदोलन आधार इलाका-गुरिल्ला बेसों के स्तर से गुरिल्ला जोन के रूप में; गुरिल्ला जोन से लाल प्रतिरोध इलाके के रूप में परिवर्तित हो जाने पर भी यह आकलन कर सकते हैं कि उसके स्वभाव में परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन अवनति और नकारात्मक बदलाव का सूचक होगा। लाल प्रतिरोध इलाके के स्तर में जन राजनीतिक सत्ता दखल करने के लिए दुश्मन के साथ प्रतिस्पर्धा लेने हेतु तैयारियां पूरा कर लेने पर, गुरिल्ला जोन में दुश्मन के सत्ता को ध्वस्त करते हुए सत्ता को कब्जा करने प्रतिस्पर्धा ले सकते हैं; गुरिल्ला बेसों-आधार इलाकों में जन राजसत्ता को निर्माण कर, लागू कर सकते हैं। इसमें आने वाले बदलाव उनके स्वभाव में बदलाव को ही दर्शाता है या उनके गुणात्मक स्वभाव में बदलाव को ही दर्शाता है। दुश्मन के हमले के कारण विभिन्न संघर्षरत इलाकों में जब तक गुणात्मक बदलाव नहीं आता तब तक सामना करने वाले सभी प्रतिकूलताओं (ज्वार-भाटा, उतार-चढ़ाव, टेढ़ा-मेढ़ा, कठिन दौर) को मात्रात्मक बदलाव ही कहा जा सकता है। इसलिए एक स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन/राज्य के सघर्षरत इलाकों के गुणात्मक स्वभाव में जब तक नकारात्मक बदलाव (negetive change) नहीं आती है तब तक यह परिभाषित करना उचित नहीं होगा कि वह अस्थायी तौर पर पीछे हट गया है।

इस विवरण के अनुसार एक इलाका लाल प्रतिरोध इलाके के रूप में होने की स्थिति में दुश्मन द्वारा जारी भारी सैनिक हमले को संभाल नहीं पाने से गंभीर प्रतिकूलताएं पैदा होती हैं। तब यह परिभाषित कर सकते हैं कि आंदोलन कमजोर हो गया है। उस इलाके में हमारी गतिविधियां लगभग पूरी तरह स्थगित होकर, वह पूरी तरह सफेद इलाके के रूप में परिवर्तित हो जाने के बाद ही उसे यह वर्गीकरण कर सकते हैं कि वह अस्थायी रूप से पीछे हट गया है। वैसे ही एक निर्धारित गुरिल्ला जोन में राजसत्ता दखल करने के लिए दुश्मन के साथ

प्रतिस्पर्धा ले नहीं पाने के स्तर पर हमारे आंदोलन की क्षमता/जनयुद्ध-सैनिक फारमेशनों की स्तर घट जाने पर उसे धक्का खाए हुए गुरिल्ला जोन के रूप में वर्गीकृति करना होगा। क्योंकि, इस इलाके में दुश्मन की सत्ता को ध्वस्त करते हुए, सत्ता के लिए दुश्मन के साथ प्रतिस्पर्धा लेने के स्तर पर हमारे जनयुद्ध-जनसेना की फारमेशनों का स्तर नहीं होने के बावजूद, उनके लक्षण नए तौर पर अस्तित्व में आने वाले लाल प्रतिरोध इलाकों से अलग (भिन्न लक्षण) होते हैं। जनसेना के फारमेशनों का स्तर, उनकी लड़ाकू क्षमता/उनकी अनुभव, दुश्मन पर अंजाम देने वाले युद्ध कार्रवाइयां वगैरा में ये ठोस लक्षण (भिन्न लक्षण) होते हैं। इन ठोस लक्षणों के आधार पर कार्यनीति तय करना होगा।

इस विवरण के आधार देखें तो, वर्तमान डीके, बीजे और पूर्वी बिहार-पूर्वोत्तर झारखण्ड गुरिल्ला जोनों में गुरिल्ला युद्ध अपेक्षाकृत रूप से उच्च स्तर पर जारी है। डीके में एरिया और डिविजन स्तर के क्रांतिकारी जन कमेटियों की काम-काज जारी है। बीजे और पूर्वी बिहार-पूर्वोत्तर झारखण्ड सेटबैक की स्थिति में है। लेकिन ये इलाके अभी भी गुरिल्ला जोनों के रूप में अपनी गुणात्मक स्वभाव को बचाकर रखी हुई हैं, पर वहां ठोस रूप से देखा जाए तो कठिन दौर का प्रभाव गंभीर है। इस स्थिति को नजर में रखते हुए इस स्थिति से उबरने पर प्राथमिकता देते हुए राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक प्रयास वहां जारी रखना चाहिए। इस ठोस स्थिति के आधार पर 2013 और 2017 में केन्द्रीय कमेटी द्वारा तय कार्यनीति पर अमल करना चाहिए।

धक्का खाए हुए गुरिल्ला जोनों के रूप में मौजूद तेलंगाना, एओबी और बीजेओ के ठोस परिस्थितियों के आधार पर वहां फौरी और प्रधान कर्तव्यों को तय करना चाहिए। विभिन्न इलाकों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और ध रातल की स्थिति को और संबंधित इलाकों के सीमा के इर्दगिर्द प्रधान गुरिल्ला जोन-गुरिल्ला बेस इलाके मौजूद है या नहीं- इस ठोस परिस्थिति के आधार पर उन इलाकों के फौरी और प्रधान कर्तव्यों होना चाहिए। **आम तौर पर धक्का खाए हुए गुरिल्ला जोन इलाकों को फिर से गुरिल्ला जोनों के रूप में विकसित करना ही फौरी और प्रधान कर्तव्य होना चाहिए।** लेकिन तेलंगाना का व्यापक धरातल मैदान इलाका है। बीजेओ के संघर्षरत इलाके का दायरा छोटा है और उस इलाके के पार्टी, पीएलजीए और जनता का लड़ाकू अनुभव अपेक्षाकृत रूप से कम है एवं पीएलजीए की लड़ाकू क्षमता कम है। एओबी का धरातल ज्यादातर रणनीतिक इलाका है। वहां के बहुसंख्यक आबादी आदिवासी

है। तेलंगाना, एओबी और बीजेओ सीमा के इर्दगिर्द प्रधान गुरिल्ला जोनें होने के बावजूद, तेलंगाना के पार्टी और पीएलजीए के बल सीजनल (seasonal) रिट्रीटों के साथ-साथ अन्य समयों में पृष्ठभूमि (rear) के रूप में जिस तरह दण्डकारण्य को इस्तेमाल कर रही हैं, उसी तरह बाकी इलाके द्वारा इस्तेमाल करने में कुछ प्रतिकूलताएं हैं। इन सभी को नजर में रखकर इन इलाकों को फिर से गुरिल्ला जोनों के रूप में विकसित करने के प्रधान कर्तव्यों को हासिल करने में मदद देने के लिए फौरी कर्तव्य होना चाहिए।

लाल प्रतिरोध इलाकों के रूप में **जारी ओड़िशा और 2यू राज्यों** को गुरिल्ला जोनों के रूप में विकसित करना **फौरी और प्रधान कर्तव्य** के रूप में होना चाहिए। नए सिरे से आंदोलन को प्रारंभ किए गए और विस्तार इलाकों को लाल प्रतिरोध इलाकों के रूप में विकसित करना **फौरी और प्रधान कर्तव्य** होना चाहिए।

2007 में आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी के दायरे में आने वाले हमारे जन छापामार बलों को रिट्रीट करने के बाद पिछले दस वर्षों से वहां का आंदोलन सेटबैक की स्थिति में ही है। इस इलाके में क्रांतिकारी आंदोलनों का पुरर्निर्माण करने की दृष्टि से वर्तमान हमारे पार्टी द्वारा प्रचार-आंदोलन कार्यक्रम जारी है। इस प्रयास के जरिए जुझारू पार्टी शक्तियों और छापामार शक्तियों को तैयार कर नयी पद्धति से फिर से लाल प्रतिरोध इलाकों का निर्माण करने का कर्तव्य हमें लेना होगा।

साम्राज्यवाद अपने आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक हितों के लिए दूसरी विश्व युद्ध के उपरान्त नयी-औपनिवेशिक नीतियां लागू करते आ रहा है। इसके तहत, 1991 से भूमण्डलीकरण के तहत बेहद कपटतापूर्ण, धोखेबाजी और खतरनाक तरीके से एशिया, अफ्रीका और लातीन अमेरिका के पिछड़े देशों में सड़क, यातायात, संचार, सूचना प्रौद्योगिकी व्यवस्थाओं और सरकारी तंत्र का आधुनिकीकरण कर मजबूत कर रहे हैं। जब से भूमण्डलीकरण की नीतियां लागू है तब से साम्राज्यवादी एकाधिकार पूंजी के हितों के मुताबिक साम्राज्यवादी देशों के साथ-साथ विश्व के सभी देशों में राज्य (state) का फासीवादी स्वभाव बढ़ रहा है। इसके तहत अर्धऔपनिवेशिक, अर्धसामंती देशों में पुलिस, अर्धसैनिक बल और सैन्य बलों का बड़े पैमाने पर आधुनिकीकरण करते हुए उनकी संख्या भी बढ़ा रहे हैं। साम्राज्यवाद और स्थानीय दलाल नौकरशाही पूंजीपति वर्ग (सी. बी.बी.) मिलकर संसाधनों का लूट और श्रम का शोषण तेज करने के कारण, इस लूट के पीछे-पीछे सामाजिक असंतोष को, बगावतों को, गुरिल्ला युद्धों को,

क्रांतिकारी आंदोलनों को क्रूरता से कुचल कर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों को नियंत्रित करने के लिए काउण्टर-इन्सर्जेन्सी और काउण्टर-गुरिल्ला वार को प्रभावशाली ढंग से संचालित करने के लिए सरकारी तंत्र को, विशेष खुफिया एजेन्सियों को और काउण्टर-गुरिल्ला बलों का निर्माण कर आधुनिकीकरण कर रहे हैं। इसलिए हमारे देश में जब से भूमण्डलीकरण की नीतियां (1991) शुरू हुई तब से राज्य का और भी फासीवादीकरण होने का प्रभाव नए विस्तार इलाकों के साथ-साथ सभी क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में बहुत ही स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। इन पहलुओं को ध्यान में रखकर नए तौर पर विस्तारित इलाकों के साथ-साथ आंदोलन के सभी इलाकों में हमारे राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक प्रयास होना चाहिए। हमारी पार्टी, पीएलजीए, जनसंगठन और क्रांतिकारी जन कमेटियों को भी इस स्थिति का सामना करने के लिए उचित राजनीतिक चेतना और युद्ध तैयारी को बढ़ाने पर विशेष ध्यान व प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके अनुरूप सभी क्षेत्रों के विभिन्न स्तरों के नेतृत्व व केडर को अपने ताकत और क्षमता को बढ़ाना चाहिए।

फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्यों को उक्त पद्धति के अनुसार तय करने के बावजूद, विभिन्न इलाकों के आंदोलन की स्थिति में निहित प्रतिकूलताओं से उबर कर, अनुकूलताएं हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए दो महत्वपूर्ण पहलू है। उसमें एक है - आंदोलन के सभी इलाकों में सामाजिक शोध (जांच-पड़ताल) करना और उसके आधार पर वर्गसंघर्ष के लिए उचित कार्यनीति तय कर जनता को राजनीतिक रूप से गोलबंद कर विभिन्न जनसंगठनों में और जनमिलिशिया में संगठित करते हुए साम्राज्यवाद-विरोधी और सामंतवाद-विरोधी संघर्षों को तेज करते हुए जन-आधार को बढ़ाना। दूसरा पहलू है - आंदोलन के सभी इलाकों में पीएलजीए के फारमेशनों के स्तर, जन-आधार, टेरेन के पहलुओं के आधार पर गुरिल्ला युद्ध को तेज व विस्तृत करते हुए क्रांतिकारी जन कमेटियों का निर्माण कर संगठित करना। इन दोनों पहलुओं में कमी-कमजोरियों को सुधारना और उनसे उबरना जरूरी है।

केन्द्रीय कर्तव्य और अन्य फौरी कर्तव्य एक दूसरे पर आधारित है और एक दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं - इन दोनों के बीच के संबंध पर हमारे पार्टी के नेतृत्व और कैडर सही रूप से पकड़ हासिल नहीं करने के कारण, व्यवहार में इन दो कर्तव्यों को अमल करने में सही प्रयास नहीं किया गया है। डीके और बीजे में उन इलाकों के लिए निर्देशित उच्च कर्तव्यों को पूरा करने

हेतु किये जाने वाले प्रयास बेहतरीन ढंग से करने में कमी-कमजोरी जारी है। डीके और बीजे इलाकों को छोड़कर बाकी सभी इलाकों में वर्गसंघर्ष तेज और व्यापक नहीं कर पाए हैं। इससे उन इलाकों में राजनीतिक, सांगठनिक और सैनिक गतिविधियों में विकास नहीं हुआ है, आत्मगत शक्तियों की संख्या और गुण में भी विकास नहीं हासिल कर पाये हैं। इससे उन इलाकों के आंदोलन भी विकास नहीं हो पाये हैं। डीके और बीजे इलाकों के मदद में कैडर हो या भौतिक सहायता हो उपलब्ध नहीं कर पाये हैं। देशभर में क्रांतिकारी आंदोलन कठिन दौर में दाखिल होने में यह विफतलता मुख्य कारणों में से एक है।

अगर अभी भी केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा तीव्र रूप से जारी प्रतिक्रांतिकारी 'समाधान' हमले को हरा कर भारतीय क्रांति को आगे बढ़ना है तो, सिर्फ डीके, बीजे, पूर्वी बिहार-पूर्वोत्तर झारखण्ड और एओबी में ही वर्गसंघर्ष और गुरिल्ला युद्ध को तेज करना पर्याप्त नहीं है। इन इलाकों के साथ-साथ देश के अन्य सभी संघर्षरत इलाकों में साम्राज्यवाद-विरोधी और सामंतवाद-विरोधी वर्गसंघर्ष को तेज करना बहुत ही जरूरी है। इन इलाकों में होने वाले वर्गसंघर्ष का विकास भारतीय क्रांति के उत्थान के लिए बहुत बढ़ा स्रोत और आधार बन सकेंगे। और दूसरी तरफ वे डीके, बीजे और पूर्वी बिहार-पूर्वोत्तर झारखण्ड के मजबूत समर्थन में खड़े रह सकेंगे। इसलिए केन्द्रीय कर्तव्य और अन्य कर्तव्यों के बीच परस्पर संबंध को सही रूप से समझ कर शहरी और ग्रामीण इलाकों के सभी क्षेत्रों में विकास हासिल करते हुए देश में वर्गसंघर्ष के और भी नए केन्द्रों का निर्माण करेंगे।

जब से देशभर का आंदोलन कठिन दौर का सामना कर रहा है तब से पार्टी में कुछ जगहों में कुछ कामरेडों द्वारा फौरी, प्रधान और केन्द्रीय कर्तव्य के बारे में उठाये गये सवालों का जवाब केन्द्रीय कमेटी द्वारा बीच में देने के बावजूद इस पूरे चर्चा का समापन करते हुए, देशभर के आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए मार्च 2017 में 'देशभर के क्रांतिकारी आंदोलन की स्थिति पर आकलन-हमारे कर्तव्य' के नाम से केन्द्रीय कमेटी द्वारा किए गए प्रस्ताव में अंतिम दो पन्नों में दिये गये विषय को इस निबंध के समापन के रूप में उल्लेख करना उचित होगा। इसे यहां यथावत् प्रकाशित कर रहे हैं। इस प्रस्ताव में आज की आंदोलन की ठोस स्थिति को लेकर तय किये गये फौरी, प्रधान कर्तव्य और कांग्रेस द्वारा निर्देशित केन्द्रीय कर्तव्य के बीच के संबंध के बारे में स्पष्टता दी गयी है।

''समूचे देश में क्रांतिकारी आंदोलन को कठिन दौर से उबारने के लिए

प्रयास करना ही आज हमारी फौरी व मुख्य कर्तव्य है। कठिन दौर से उबरने की प्रयास में हमें हासिल हुए सफलताओं और प्रगति पर निर्भर होकर 9वीं कांग्रेस द्वारा निर्देशित केन्द्रीय कर्तव्य को पूरा करने के लिए प्रयास करना होगा। भारतवर्ष के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक तौर पर असमान विकास के अनुसार क्रांतिकारी आंदोलन विभिन्न इलाकों में असमान रूप से यानी विभिन्न स्तरों में ही विकसित होती है। वर्तमान में डीके, बीजे, पूर्वी बिहार-पूर्वोत्तर झारखण्ड मुख्य छापामार इलाकें के रूप में हैं। बाकी कुछ धक्का खायी हुई छापामार इलाकों/सेटबैक के शिकार इलाकों के रूप में, कमजोर हुए इलाकों के रूप में, लाल प्रतिरोध इलाकों के रूप में/नयी विस्तार इलाकों के रूप में हैं।

समूचे देश में क्रांतिकारी आंदोलन को कठिन दौर से उबारने के लिए डीके, बीजे, पू.बि.-पू.उ.झा., एओबी, तेलंगाना, ओड़िशा, एमएमसी, लालगढ़, पश्चिमी घाटी इलाकों में पीएलजीए के फारमेशन के स्तर, जन आधार और टेरेन विषयों पर आधारित होकर **गुरिल्ला युद्ध को तेज और व्यापक करते हुए, ऑपरेशन ग्रीनहंट के नाम पर दुश्मन द्वारा संचालित प्रतिक्रांतिकारी हमले को मजबूती से प्रतिरोध करना होगा और उसे हराना होगा।**

इन इलाकों सहित, देश के सभी आंदोलनरत इलाकों में साम्राज्यवाद -विरोधी और सामंतवाद-विरोधी वर्ग संघर्ष को तेज करना होगा। वर्ग संघर्ष को तेज करने के लिए सभी आंदोलनरत इलाकों में सामाजिक शोध करना होगा, इसे निर्धारित समयावधि में पूरा करना होगा। हमने विश्लेषण की है कि हमारे देश का चरित्र अर्धऔपनिवेशिक-अर्धसामंती है और इसके तहत हमारी राजनीतिक और सैनिक लाइन को रेखांकित किये हैं। जब तक देश की सामाजिक चरित्र में मौलिक रूप से बदलाव नहीं होगी, तब तक हमारी राजनीतिक और सैनिक लाइन या राजनीतिक और सैनिक रणनीति में बदलाव नहीं होगी। लेकिन साम्राज्यवाद-विरोधी और सामंतवाद-विरोधी संघर्षों को संचालित करने के लिए लगातार बदलती सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बदलावों के आधार पर कार्यनीति में बदलाव लाते हैं और उसे विकसित करते हैं। रणनीति और कार्यनीति के बीच इस संबंध को समझ नहीं पाने के कारण, साम्राज्यवादी वित्तीय पूंजी द्वारा अपने पिटठू दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों व बड़े सामंतियों पर आधारित होकर हमारे देश में किये जा रहे व्यवस्थागत बदलावों, कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों में किये जा रहे बदलावों को द्वंद्वात्मक तरीके से अध्ययन नहीं

कर पाने के कारण या अध्ययन करने में अधिभौतिकवादी (metaphysical) पद्धति अपनाने के कारण, वर्ग संघर्ष के लिए उचित कार्यनीति तय करने में हमारे अंदर कमी-कमजोरी आ रही हैं। इससे उबरने के लिए निर्धारित समयावधि में सभी इलाकों में सामाजिक शोध पूरा कर, उसपर आधारित होकर वर्ग संघर्ष की कार्यनीति विकसित कर वर्ग संघर्ष को तेज करना होगा।

जहां बोल्शेवीकरण अभियान नहीं हुई है उन राज्यों में इसे संचालित कर वहां की पार्टी की सैद्धांतिक और राजनीतिक स्तर को बढ़ाना होगा।

'वर्तमान परिस्थिति - हमारे कर्तव्य' के नाम से सीसी द्वारा रेखांकित कर्तव्यों को विभिन्न स्पेशल एरिया/स्पेशल जोनों/राज्यों में आंदोलन की शक्ति-संतुलन के आधार पर अमल करना होगा।

इसके साथ विभिन्न आरबी, सैक/एसजेडसीयों/एससी को प्रत्येक दो साल में एक बार संबंधित राज्यों के लिए उचित कर्तव्य और कार्यनीति बनाना होगा।

इन सकारात्मक अनुभवों और नये अनुभवों के परिणामस्वरूप क्रांतिकारी आंदोलन के लिए अनुकूलताएं पैदा हो रही हैं। देश-दुनिया में मौलिक अंतरविरोध तेज होने के कारण क्रांति के लिए अनुकूल वस्तुगत स्थिति पैदा हो रही है। ये कठिन दौर से उबरने के लिए स्रोत और आधार हैं। लेकिन, भारतीय क्रांति को आने वाली ढाई सालों में उन्मूलन करने की कुटिल योजना के साथ केन्द्र और राज्य सरकारें प्रतिक्रांतिकारी हमले को आने वाली दिनों में और तेज करने की स्थिति में, इसके साथ अपनी हथियार व गोलाबारूद आदि के दृष्टि से कमजोर होने की स्थिति में हमारा क्रांतिकारी आंदोलन सापेक्षिक तौर पर लंबे समय तक कठिन दौर में ही रहेगा। इस आंकलन पर आधारित होकर, खुद अपने तरफ से संचालित किये जानेवाले राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक प्रयास में निराशा-हताशा से और जल्दबाजी से बचना होगा। दूसरी तरफ निष्क्रियता और पहलकदमी खो जाने से बचते हुए दृढ़संकल्प और पहलकदमी के साथ कठिन दौर में बदलाव लाने के लिए चेतनाबद्ध प्रयास करना होगा। इस स्थिति में पार्टी का बोल्शेवीकरण कर, युद्ध के लिए स्रोतें इकट्ठा कर, बहुत ही धैर्य और साहस के साथ, दृढ़ संकल्प के साथ छापामार युद्ध को तेज करते हुए, वर्ग संघर्ष को उचित कार्यनीति के साथ संचालित कर, मजबूत जन आधार बढ़ाकर वर्तमान के कठिन दौर से उबर कर आगे बढ़ेंगे।''

प्रेस विज्ञप्ति

लाल, क्रांतिकारी, अंतर्राष्ट्रीय मई दिवस जिंदाबाद!

(मार्क्सवादी लेनिनवादी माओवादी पार्टियों व संगठनों की ओर से जारी 2017 का बयान)

''अक्तूबर क्रांति का परचम अपराजेय है''

–माओ त्से तुंग

इस साल अक्तूबर क्रांति का 100वीं वर्षगांठ है.

साम्राज्यवादियों, प्रतिक्रांतिकारियों, संशोधनवादियों, सभी प्रकार के अवसरवादियों ने जिस तरह पिछले साल महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के साथ किया, इस साल मई दिवस को विलोपित, विस्मृत, कलंकित व उसकी अवमानना करने की वे कोशिशें कर रहे हैं.

वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे यह जानते हैं कि सर्वहारा एवं जनता को इन घटनाओं से पहुंचने वाला महान संदेश ज्यादा से ज्यादा प्रासंगिक बन गया है.

साम्राज्यवाद, पूंजीवाद, युद्ध, सर्वहारा के शोषण व जनता के उत्पीड़न से मुक्ति के लिए हमें सर्वहारा क्रांति करना होगा.

मजदूर वर्ग को शासक वर्गों की राज्यसत्ता को उखाड़ फेंकना होगा, अपनी सत्ता, अपना राज्य–सर्वहारा तानाशाही को कायम करना होगा एवं समाजवाद का निर्माण करना होगा; दुनिया भर में साम्राज्यवाद की तमाम जंजीरों से मुक्ति एवं साम्यवाद की ओर प्रस्थान के लिए प्रत्येक देश एवं दुनिया में उसे क्रांति को विकसित करना चाहिए व जारी रखना चाहिए.

साम्राज्यवादी व्यवस्था जिसका लेनिन ने अपनी महान कृति '' साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की उच्चतम अवस्था'' में विश्लेषण व वर्णन किया, एक सड़ी–गली व ह्रासोन्मुख व्यवस्था प्रतीत होती है.

साम्राज्यवाद एवं उसकी सरकारें एक गहरे आर्थिक व वित्तीय, राजनीतिक व सामाजिक संकट से पार पाने और अपने संकट के बोझ को अंदरूनी तौर पर मजदूरों व जनता पर एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्पीड़ित जनता व राष्ट्रों पर लादने की हर तरह कोशिश कर रही हैं.

साम्राज्यवाद आर्थिक युद्ध, लूट व आक्रमण के लिए दुनिया को नए सिरे से विभाजित करने वाला युद्ध है.

साम्राज्यवाद प्रतिक्रियावाद और फासीवाद है. साम्राज्यवाद पूंजीवाद की अंतिम अवस्था है जिसे परास्त करने की जरूरत दिन–ब–दिन बढ़ रहा है. **इसीलिए लेनिन और अक्तूबर क्रांति का संदेश पहले की तुलना में ज्यादा प्रासंगिक हो गया है.**

सबसे ताकतवर साम्राज्यवाद के तहत अमेरिका में ट्रंप की जीत यांकी साम्राज्यवाद के संकट एवं आर्थिक युद्ध पर जोर, सैनिक शासन, भूराजनीतिक रणनीतिक क्षेत्रों पर नियंत्रण, दुनिया भर में युद्ध के विभिन्न रंगमंचों पर गठबंधनों का फिर से जोड़–तोड़ के जरिए उससे बाहर आने के प्रयास को प्रतिबिंबित करती है.

ट्रंप की जीत तथाकथित ''अमेरिकी लोकतंत्र'' की बर्बरता; एक फासीवादी अरबपति जो अमेरिका के भीतर गरीब जनता एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्पीड़ित जनता के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया है, की राज्यसत्ता को दर्शाता है.

ट्रंप की जीत तमाम साम्राज्यवादी देशों में, प्रतिक्रियावाद, पुलिस राज, सैनिकीकरण, स्थायी आपातकालीन राज्य व अंदरूनी तौर पर सर्वहारा, महिला अधिकारों के खिलाफ, आफ्रीकी–अमेरिकी जनता के खिलाफ, दीवारों व निषकासनों के जरिए आप्रवासियों के खिलाफ, मुसलमानों व अरबों के खिलाफ, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, मास मीडियाओं, संस्कृति व कला क्षेत्र में किसी भी प्रगतिशील विचार के खिलाफ युद्ध की आपूर्ति कर रही है.

अमेरिकी साम्राज्यवाद की नयी आक्रामक अवस्था अंतर–साम्राज्यवादी अंतरविरोधों को, परमाणु महाशक्ति रूसी साम्राज्यवाद के साथ, नयी सामाजिक साम्राज्यवादी शक्ति चीन के साथ एवं वर्तमान में जर्मनी के नेतृत्व वाले साम्राज्यवादी युरोप के देशों के साथ अंतरविरोधों को तीखा बना रही है.

बाजारों के विभाजन के लिए साम्राज्यवादी देशों के बीच की वैश्विक प्रतिद्वंद्विता और ऊर्जा संसाधनों पर नियंत्रण के लिए संघर्ष दुनिया भर में आक्रमणकारी युद्धों, प्रतिक्रियावादी युद्धों के कारण बन रहे हैं व उन्हें बढ़ावा दे रहे हैं एवं मौत, नरसंहारों व विध्वंस को फैला रहे हैं.

दुनिया के हर कोने में जारी साम्राज्यवादियों के आक्रमणकारी युद्ध आप्रवास (पलायन) की महा लहर को जन्म दे रहे हैं.

यह साम्राज्यवादी युद्धों की बर्बरता और इन युद्धों के साम्राज्यवादी दुर्गों के हृदयस्थलों तक ''घर लौटने'' के ही चलते साम्राज्यवादियों के अपने देशों के पारा–मोहल्ले खून से लथपथ हो रहे हैं.

सभी साम्राज्यवादी देशों में दुनिया के मालिकों के राज्य व सरकारें सर्वहारा एवं जनता के खिलाफ एक आंतरिक युद्ध विकसित कर रहे हैं. संकट, उत्पीड़न व दमन के चलते ये मजदूर व जनता ज्यादा से ज्यादा संघर्ष व विद्रोह के लिए आगे बढ़ रहे हैं.

साम्राज्यवाद द्वारा उत्पीड़ित देशों में सर्वहारा एवं उत्पीड़ित जनता साम्राज्यवाद विरोधी व राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों को तेज कर रही हैं. विशेषकर हमें यहूदीवादी राज्य व साम्राज्यवाद के खिलाफ फिलिस्तीनी व अरब जनता के

संघर्षों एवं जनयुद्धों का समर्थन करने की आवश्यकता है.

भारत से फिलिप्पीन्स, तुर्की से पेरु तक मार्क्सवादी –लेनिनवादी–माओवादी पार्टियों के मार्गदर्शन में जारी जनयुद्ध साम्राज्यवाद, प्रतिक्रियावादी शासन व्यवस्थाओं से मुक्ति तथा नए जनवादी राज्यों के निर्माण, समाजवाद की ओर प्रस्थान के मार्ग के प्रमाण हैं.

भारत का जनयुद्ध जो आज ''नक्सलबाड़ी विद्रोह'' जिसने यह मार्ग प्रशस्त किया, की 50वीं वर्षगांठ मना रहा है, नरसंहारों, ऑपरेशन ग्रीनहंट, माओवादियों, आदिवासी जनता, जनवादी व क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों व छात्रों, मजदूरों, किसानों, महिला आंदोलनों, राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों के विरुद्ध जारी दमन के खिलाफ लड़ रहा है; इससे यही प्रतीत होता है कि जनयुद्ध एवं जनता के मुक्ति संघर्ष को कोई नहीं रोक सकता है, वैसा ही अंतर्राष्ट्रीय समर्थन को कोई नहीं रोक सकता है.

अक्तूबर क्रांति और महान लेनिन ने यह साबित किया कि संशोधनवाद और अवसरवाद के खिलाफ लड़े बगैर हम साम्राज्यावाद एवं उसके राज्यों के खिलाफ लड़ नहीं सकते और जीत नहीं सकते हैं.

वस्तुगत परिस्थितियां क्रांति के लिए अनुकूल हैं, क्योंकि दुनिया में प्रधान रुझान यही है. तमाम सामाजिक जनवादी ताकतें, भूतपूर्व कम्युनिस्ट पार्टियां संशोधनवादी एवं सुधारवादी बन गई हैं. वे जनता के बीच में अपनी विश्वसनीयता खो चुके हैं और जनता की जीवन व कार्य परिस्थितियों को बचाए रखने में, साम्राज्यवाद, युद्ध, फासीवाद एवं पुलिस राज का विरोध करने में बेकार औजार साबित हो गई हैं.

इन ताकतों के संकट के साथ ही हम यह देख रहे हैं कि प्रतिक्रियावादी लोकलुभावन प्रवृत्तियां और सांप्रदायिक प्रतिक्रियावादी आंदोलन उभर रहे हैं जो किसी न किसी साम्राज्यवाद के पहियों के साथ और अंततः उसके अत्यंत प्रतिक्रियावादी गुटों, बुर्जुआजी और उनकी सेवा करने वाली शासन व्यवस्थाओं के साथ जनता को बांधने के लिए उन्हें विभाजित कर रहे हैं.

मजदूरों और जनता को संसदीय व शांतिपूर्ण मार्ग के प्रति भ्रम जो उन्हें निशस्त्र करने के लिए उद्देश्यित है को मजबूती से इनकार करना होगा और

हिम्मत के साथ क्रांतिकारी मार्ग को अपनाना चाहिए. क्रांति को सफल बनाने के लिए अत्यंत पुरोगामी रूप है, जनयुद्ध; इसीलिए हमें उसका उन सभी देशों में समर्थन करना होगा जहां वह पहले से शुरु हो चुका है एवं बाकी सभी देशों में, प्रत्येक की ठोस परिस्थितियों में तालमेल के साथ लागू करते हुए जनयुद्ध की तैयारी करनी होगी.

असली कम्युनिस्ट पार्टियों जो मजदूर वर्ग के अगुए दस्ते व तमाम जनता के नेतृत्वकारी कोर के रूप में काम करेंगी, का निर्माण करने की जरूरत है. वास्तविकता के साथ तालमेल करते हुए जनयुद्ध को शुरु करने व विकसित करने के लिए मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद के क्रांतिकारी विज्ञान की बुनियाद पर जनता के साथ नजदीकी संबंध में रहते हुए वर्ग संघर्ष की आग में तपकर कम्युनिस्ट पार्टियों का गठन होना चाहिए.

कम्युनिस्ट पार्टियों को साम्राज्यवाद द्वारा उत्पीड़ित तमाम तबकों की शोषित जनता का संयुक्त मोर्चा का निर्माण करना होगा और राजनीतिक व सैनिक प्रभुत्व के रूप के मुताबिक आवश्यक कार्यनीति विकसित करनी होगी.

साम्राज्यवादी देशों में नए आप्रवासी मजदूरों के अति शोषण, गुलामी व नस्लवाद के खिलाफ उनके संघर्ष में कम्युनिस्ट पार्टियों को अगुआ दस्ते की भूमिका निभाते हुए उन्हें अपनी श्रेणियों में समेकित करना होगा.

कम्युनिस्ट पार्टियों को युवा विद्रोहों व महिला संघर्षों को क्रांति की शक्तिशाली बल के रूप में गोलबंद व संगठित करना होगा.

उन्हें अपने स्वयं के साम्राज्यवाद को सर्वहारा एवं उत्पीड़ित जनता के प्रधान दुश्मन मानकर, हमलों के शिकार राष्ट्रों की जनता का पक्ष दृढ़ता के साथ लेते हुए उसके खिलाफ लड़ना चाहिए.

आज खासकर हमें अफगानिस्तान के साम्राज्यवादी कब्जे, सिरिया पर साम्राज्यवादी आक्रमण एवं उत्तर कोरिया के विरुद्ध परमाणु धमकियों के खिलाफ लड़ना होगा.

साम्राज्यवादी युद्ध एवं बुर्जुआई प्रतिक्रियावादी तानाशाही ने कम्युनिस्ट पार्टियों के सामने यह आवश्यकता पैदा की कि उन्हें साम्राज्यवादी युद्ध का सामना करने के लिए स्वयं को जनयुद्ध से लैस करना होगा और लाल सेना के केंद्रक के रूप में अपनी लड़ाकू ताकत का निर्माण करना होगा.

जनयुद्धों को नरसंहारों के साथ–साथ शांति वार्ताओं के फंदों का भी सामना करना पड़ता है जो उन्हें रणनीतिक आक्रमण की नजर से मजबूत व संगठित होने से दूर रखते हैं, भटकाने के लिए उद्देश्यित हैं, उनका गला घोंटता है, आत्मसमर्पण की ओर अग्रसर करता है.

अंतर्राष्ट्रीयतावाद साझा दुश्मन के खिलाफ दुनिया के सर्वहारा और उत्पीड़ित जनता के बीच की एकता है.

'' अपने खुद के देश में क्रांतिकारी आंदोलन व क्रांतिकारी संघर्ष को विकसित करने के लिए हृदयपूर्वक काम करना एवं बिना अपवाद के हर देश में इस संघर्ष का, इसका, सिर्फ इसी लाइन का समर्थन (प्रचार, सहानुभूति व पादार्थिक मदद के जरिए) करना ही अंतर्राष्ट्रीयतावाद है.''

–लेनिन

अंतर्राष्ट्रीयतावाद एक नए अंतर्राष्ट्रीय संगठन जो साम्यवादियों की मौजूदा समस्याओं को हल करते हुए अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की साध ाारण दिशा व एक नए कम्युनिस्ट अंतर्राष्ट्रीय की ओर कदम बढ़ाने के काबिल हो, का निर्माण है.

- **महान अक्तूबर क्रांति की 100वीं वर्षगांठ जिंदाबाद!**
- **साम्राज्यवाद मुर्दाबाद! समूची दुनिया में दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते में आगे बढ़ें.**
- **दुनिया के सर्वहारा एवं उत्पीड़ित जनता के संघर्ष जिंदाबाद!**
- **सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद जिंदाबाद!**
- **लाल एवं समाजवादी भविष्य के लिए, साम्यवाद की ओर प्रस्थान!**

हस्ताक्षर

कलेक्टिव ऑफ ईरानियन माओइस्ट्स
कमेटी फॉर बिल्डिंग दि माओइस्ट कम्युनिस्ट पार्टी, गैलिसिया, स्पैनिश स्टेट
कम्युनिस्ट (माओइस्ट) पार्टी ऑफ अफगानिस्तान
कम्युनिस्ट मूवमेंट ऑफ सेर्बिया
कम्युनिस्ट न्यूक्लियस नेपाल
कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ ब्राजिल रेड फ्राक्शन
कम्यनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (माओइस्ट)
कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (रिवोल्युशनरी माओइस्ट)
डेमोक्रसी एण्ड क्लास स्ट्रगुल, ब्रिटिश स्टेट
क्लासएनस्टैंडपुंक्ट, क्लास पोजिशन, एडिटोरियल स्टा-, जर्मनी
माओइस्ट कम्युनिस्ट मूवमेंट, टुनिशिया
माओइस्ट कम्युनिस्ट पार्टी-फ्रांस
माओइस्ट कम्युनिस्ट पार्टी-इटली
माओइस्ट कम्युनिस्ट पार्टी मणिपुर
माओइस्ट रिवोल्युशनरी लीग-श्रीलंका
ऑर्गानाइजेशन डि टावेइल कम्युनिस्ट टुनिशिया,
पार्टी डेस खाडेहाइन्स-टुनिशिया
रिवोल्युशनरी कम्युनिस्ट पार्टी
रिवोल्यूशनरी प्राक्सिस-ग्रेट ब्रिटेन
युनियन ओबरेरा कम्युनिस्टा, (एमएलएम)-कोलंबिया
वर्कर्स वॉइस-मलेशिया (मजदूर आवाज-मलेशिया)
(निकग्लाइस द्वारा 30 अप्रैल, 2017 को12.17 बजे पोस्ट किया गया.)

सर्कुलर नं. 1/2018 *पार्टी सदस्यों तक*

जिनुगु नरसिंहरेड्डी के आत्मसमर्पण और विश्वासघात की भर्त्सना करें!

पार्टी औव स्वयं को बदल कर मजबूत करने के लिए इस नकारात्मक शिक्षक से सबक लें!

प्रिय कामरेडो!

23 दिसम्बर, 2017 को हमारी पार्टी के केन्द्रीय कमेटी (सीसी) के सदस्य जिनुगु नरसिंहरेड्डी उर्फ जम्पन्ना उर्फ राजेश अपनी पत्नि रजिता (जया) के साथ दुश्मन के सामने घुटने टेक दिया और इसके लिए अपनी स्वास्थ्य और सैद्धांतिक मतभेद को बहाना बनाया। विगत कुछ सालों से उनके व्यवहार शैली से नजदीक संबंध रखने वाले हमारी पार्टी के नेतृत्व और कतारों के लिए उनकी आत्मसमर्पण कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन, हमारी पार्टी के उच्च स्तर की कमेटी के सदस्य रहते हुए, इस तरह सैद्धांतिक और राजनीतिक रूप से कमजोर होना और दुश्मन के सामने घुटने टेक देना उनके बारे में अनजान कामरेडों को और क्रांतिकारी जनता के लिए जरूर एक चिन्ता की विषय होगी। लेकिन जिन लोगों को हमारी पार्टी के लम्बे इतिहास के बारे में जानकारी है, उन लोगों आसानी से समझा जा सकते हैं कि जनयुद्ध के विकास के क्रम में इस तरह के कमजोर ताकतें आखिर तक टिक नहीं पाने की वजह से पतित हो जाएंगे, गद्दार भी बन जाएंगे। जो लोग क्रांति में और पार्टी में जितने भी कठिन परिस्थितियां हो, जनता के हितों के अनुरूप अपने आप को ढालने में कमजोर और असमर्थ हो जाते हैं, उन हितों से अपने व्यक्तिगत हितों को ऊंचा रखने वाले स्वार्थ बन जाते हैं, उन लोग के लिए इस तरह घुटने टेक देना अनिवार्य है। विश्वाघाती नरसिंहरेड्डी ने इसे और एक बार साबित कर दिखाया। नरसिंहरेड्डी सीसी सदस्य होने के बावजूद, विगत दो वर्षों से उन्होंने तीव्र आतंक का शिकार होकर, राजनीतिक भ्रांति के साथ क्रांतिकारी तैयारी, आत्मबलिदान की चेतना खो जाने और ढुलमुल हो जाने के वजह से कम से कम पार्टी के एक प्राथमिक सदस्य की चेतना भी नहीं दर्शाया था। अस्वस्थता, सैद्धांतिक मतभेद अपनी पतन और विश्वासघात को छिपाने के लिए सिर्फ बहाना है। हमारी केन्द्रीय कमेटी नरसिंहारेड्डी के राजनीतिक पतन और दुश्मन के सामने उनकी

आत्मसमर्पण की घोर निन्दा करती है और इस विश्वासघाती को पार्टी से बहिष्कार किया जाता है।

नरसिंहरेड्डी की पत्नि रजिता (जया) एक दशक से ज्यादा समय से पार्टी में काम करते हुए डीवीसी स्तर तक विकसित हुई थी। लेकिन उन्हें नरसिंहरेड्डी में मौजूद कमजोरियों के बारे में स्पष्ट जानकारी होते हुए भी, साथी कामरेड लोग उन्हें आलोचना करने के बावजूद, उन्होंने इनके खिलाफ एक शब्द भी आलोचना के रूप में न रखकर, वह आम जिंदगी में एक पत्नि के रूप में व्यवहार किया। उन्होंने पितृसत्तात्मक मूल्यों का पालन करते हुए अंत में उनके साथ दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। इसलिए उनकी पार्टी सदस्यता रद किया जाता है।

हमारे देश मे नवजनवादी क्रांति को सफल बनाकर समाजवाद व साम्यवाद को हासिल करने के लक्ष्य से, विश्व समाजवादी क्रांति को हासिल करने के लिक्ष्य से हमारी पार्टी कार्यरत है। इस लक्ष्य को हासिल करने के अनुरूप वर्गसंघर्ष के क्रम में केन्द्रीय कमेटी के नेतृत्व में पार्टी के सभी इकाई मिलकर पार्टी को अपने आप को सैद्धांतिक, राजनीतिक और सांगठनिक तौर पर ढालते हुए, मजबूत करने के लिए लगातार प्रयास करना होगा। हमारे प्रत्येक साथी विभिन्न वर्ग के पृष्ठभूमि से, विभिन्न अवधारणाओं और सोच-विचारों के साथ कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो जाते हैं। हम अपने साथ-साथ अपने वर्ग चरित्र से संबंधित अपनी सोच-विचारों को भी पार्टी में लाते हैं। हमारा देश अर्धऔपनिवेशिक और अर्धसामंती देश होने के वजह से हमलोग ज्यादातर किसान और निम्नपूंजीपति वर्ग की पृष्ठभूमि से पार्टी में शामिल होते हैं। कम संख्या में ही सदस्य सर्वहारा वर्ग की पृष्ठभूमि से आते हैं। उनमें अपने वर्ग सोच-विचार के साथ समाज पर अपनी वर्चस्व रखने वाली अर्धऔपनिवेशिक और अर्धसामंती संस्कृति, विचारधारा और दृष्टिकोण के प्रभाव के साथ-साथ बुर्जुआ व संशोधनवादी पार्टियों द्वारा फैलाए जाने वाली सुधारवाद, ट्रेड यूनियनवाद और अर्थिकवाद के प्रभाव भी पार्टी में प्रवेश करती है। क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी अपनी कम्युनिस्ट लक्ष्य हासिल करने के लिए मालेमा के तर्ज पर काम करती है। हम जब कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो जाते हैं हमारे अंदर मौजूद गैरसर्वहारा सोच-विचारों और कार्य-पद्धतियों के प्रभाव के वजह से अंतरविरोध पैदा हो जाता है। कम्युनिस्ट लक्ष्य को हासिल करने के लिए सर्वहारा वर्ग के विचारधारा के अनुरूप इन्हें परिवर्तित करना होगा। इस परिवर्तन को 'फिर से ढालना' (remould) कहते हैं। इसके जरिए मालेमा के आधार पर सर्वहारा वर्ग के भावनाओं, सोच-विचारों और

दृष्टिकोणों को आत्मसात करते हुए, हमारी पुरानी सामंती, पूंजीवादी और निम्नपूंजीवादी भावनाओं, सोच-विचारों और दृष्टिकोणों को जड़ से उखाड़ना होगा। हम मनोगतवादी, उदारतावादी, व्यक्तिवादी, अराजक, नौकरशाही, स्वत:स्फूर्ती कार्यशैली से मुक्त होकर, सर्वहारा वर्ग के सामूहिक विचार, सामूहिक कार्य-पद्धति और कार्यशैली को विकसित करना होगा। हमारी कार्य-पद्धति में एक योजना के तहत बहुमत को मानना होगा। जितना भी कठिन हो, निर्णयों को अमल करने के लिए गंभीर प्रयास करना होगा। इस तरह के सोच-विचार, दृष्टिकोण व कार्यशैली को कितना गहराई और सामग्रिक रूप से आत्मसात करते हैं, अच्छे कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों का विकास उसपर निर्भर होगा। इन्हें सही तरीके से अपनाने में नरसिंहरेड्डी पूरी तरह विफल रहे।

नरसिंहरेड्डी पार्टी में शामिल होने के बाद, आंदोलन के विकास के साथ-साथ सीढ़ी दर सीढ़ी एसजेडसी तक विकसित हुआ था। तत्कालीन परिस्थितियों में उनके अंदर मौजूद सकारात्मक लक्षणों को ध्यान में रखकर 2001 में आयोजित तत्कालीन पी.डब्ल्यु. कांग्रेस में और 2007 में आयोजित एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस में उन्हें सीसी सदस्य के रूप में चुन लिया गया था। लेकिन उन जिम्मेदारियों को वे सही तरीके से समझ नहीं पाया। उनमें पहले से जारी गैरसर्वहारा रूझानें ही इसका मुख्य कारण रहा है। सीसी सहित विभिन्न कमेटियों द्वारा अनेक मंचों पर संचालित आलोचना-आत्मालोचना और एकता-संघर्ष-एकता के क्रम को एवं शुद्धीकरण व शिक्षा अभियानों को भी वे सही तरीके से इस्तेमाल करने के लिए तैयार है। पद को अधिकार के रूप में सोचने की रूझान उनमें विकसित हुआ। उनमें निम्नपूंजीपति व्यक्तिवाद, नौकारशाही बर्ताव गंभीर स्तर पर पहुंच गया। ये सर्वहारा क्रांति के लक्ष्य पर, सामूहिक चेतना पर और जनवादी केन्द्रीयता पर चोट पहुंचाने की स्तर पर पहुच गया। सही पद्धति से ठोस परिस्थितियों को जानने में विफल होना, जनता के साथ घनिष्ठ संबंध साबित करने में विफल होना, कठिन परिश्रम करने की स्वभाव खो जाना, कमेटियों में समस्याओं को सुलझाने के लक्ष्य से नहीं, बल्कि लगातार चर्चा को विवाद में तब्दील होने की तरह जारी रखने के साथ-साथ आक्रामक रूप से व्यवहार करते हुए उस समस्या को संकट में फंसा देना, सभी विषयों में व्यक्ति के तौर खुद को प्रारंभ बिंदु के रूप में लेना, अपने व्यक्तिगत हितों को सबसे ऊपर रखना, घमण्ड-अहंकार चरम सीमा तक पहुंच जाना, खुद को बड़ा समझना आदि गैरसर्वहारा बुरे लक्षण नरसिंहरेड्डी में विकसित होता गया था। वे

जब उत्तर तेलंगाना एसजेडसी सदस्य और सचिव एंव सीसीएम की जिम्मेदारियां निभा रहे थे, उस कार्यकाल में ये बुरे लक्षण उनमें क्रमशः विकसित होते गए। इसके पीछे मौजूद कारणों का गहराई से विश्लेषण कर उचित सबक लेना जरूरी है।

नक्सलबाड़ी उभार अस्थायी रूप से पीछे हटने के बाद 70वीं दशक के अंत में फूट पड़े क्रांतिकारी आंदोलनों में से उत्तर तेलंगाना आंदोलन एक प्रमुख आंदोलन के रूप में उभर कर आयी थी। 1990 दशक में शासक वर्गों द्वारा चलाए गए दुश्मन का एलआईसी हमला गंभीर स्तर तक पहुंच गया था। उस स्थिति में बहुत-ही दृढ़ रहते हुए उत्तर तेलंगाना (एनटी) आंदोलन को बचाने के लिए पार्टी के सामूहिक नेतृत्व प्रदान करना महत्वपूर्ण एवं बहुत ही जरूरी विषय हो गया था। एनटी एसजेडसी सचिव और सीसीएम के रूप में नरसिंहरेड्डी उस जिम्मेदारी को अपने कंधों पर उठाकर सही तरीके से निभाने में विफल होता गया था।

दुश्मन के हमले को मुकाबला कर आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए 2003 में सीआरबी अपनी चौंथी बैठक में ''एनटी परिस्थिति-हमारी कार्यनीति'' का प्रस्ताव पारित किया। उस दौरान एनटी आंदोलन की परिस्थिति का आंकलन पर, लिए जाने वाले कार्यनीति और कार्यपद्धति पर सीआरबी और उनके बीच भिन्नमत उभर कर आयी थी। पार्टी में उभरने वाली जो भी भिन्नमत हो, जनवादी केन्द्रीयता के आधार पर सामूहिक रूप से चर्चा कर बहुमत के आध ार पर सीआरबी को उक्त प्रस्ताव को पारित करना पड़ा। उस प्रस्ताव के तहत एनटी से संबंधित कुछ सांगठनिक विषयों पर भी सीआरबी द्वारा निर्णय लिया गया था। इसपर भी उन्होंने भिन्नमत रखा था। फिर भी जनवादी केन्द्रीयता उसूल के आधार पर सीआरबी द्वारा पारित उक्त प्रस्ताव से आत्मसात होकर, 2003 में ही हुई एनटी एसजेडसी बैठक में इस प्रस्ताव को पारित करवाने और अमल में लाने के प्रयास करने के बजाय, उन्होंने उस प्रस्ताव को कूड़ेदान में फेंक कर, विघटनकारी गतिविधियों में उतरा था। एसजेडसी बैठक आरंभ होने से पहले ही उस प्रस्ताव पर अपने भिन्नमत को अवसरवादी तरीके से एसजेडसी सदस्यों को अवगत करवाया और चर्चा किया था। सीआरबी प्रस्ताव से अपने भिन्नमत को मसौदे के रूप में लिखने के लिए एसजेडसी सदस्यों को प्रेरित किया था। उन मसौदों को एसजेडसी सदस्यों के बीच आपस में वितरण करवाया था। सांगठनिक विषयों में सीसी द्वारा निर्णय नहीं लिया जाना चाहिए - के गलत अवधारणा

एसजेडसी में पनपने में भी उनकी ही मुख्य भूमिका रही। परिणामस्वरूप एसजेडसी में ऐसे अफवाह और गलत अवधारणाएं पनपते गए थे कि सीसी गलत कार्यनीति बनाकर, गलत दिशा-निर्देशन दे रही है, इसे पहचानने के बजाय सीसी एसजेडसी के गलतियों पर आलोचना साध रही है। इससे नरसिंहरेड्डी ने सीसी और एसजेडसी के बीच गंभीर टकराव की स्थिति पैदा किया था। इस तरह सीसी के खिलाफ एसजेडसी में द्वेष बढ़ाने में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से उनकी ही भूमिका रही। यह पार्टी की जनवादी केन्द्रीयता और सांगठनिक तरीके से विपरीत है। एनटी आंदोलन को आगे बढ़ाने में अपने कमी-कमजोरी और विफलता पर परदा डालने के लिए प्रयास किया था। नरसिंहरेड्डी के पतन का इतिहास यह रहा था कि एसजेडसी की सोच की एकता (unity of thought) में फूट डालना और अपने गलत अवधारणों को एसजेडसी और सीआरबी/सीसी पर थोपते हुए सीसी की प्रतिष्ठा पर चोट पहुंचाना। एनटी आंदोलन को अध्ययन करने के लिए कभी योजनाबद्ध तरीके से प्रयास नहीं करने, स्वत:स्फूर्तता से ग्रस्त होने, मनोगत ढंग से विचार करने, चर्चाओं में अप्रजातांत्रिक तरीके अपनाते हुए गंभीर असहनशीलता से बरताव करने, आपस में अपने राय साझा करने में रुकावट बन जाने, भिन्नमत रखने पर अपने मत को ही अमल करने जैसे निम्नपूंजीवादी व्यक्तिवाद, नौकरशाही रूझान इसी क्रम में ही उनमें उच्च स्तर तक पहुंच गयी थी। इन रूझानों के खिलाफ पहली बार 1999 में आयोजित उत्तर तेलंगाना प्लीनम में एसजेडसी और केडर से गंभीर आलोचनाएं हुईं। फिर 2003 की प्लीनम के अवसर पर हुई एसजेडसी बैठक में, 2007 में हुई अधि वेशन में भी एसजेडसी और निचले स्तर से भी आलोचनाएं हईं। लंबे चर्चा करने बाद अंत में प्लीनम और अधिवेशन में आत्मालोचना करते थे।

इसके बावजूद उनके अंदर मौजूद रूझानों में कोई बड़ी बदलाव नहीं हुई। अपनी गलतियों को सुधारने के लिए और कमजोरियों से उबरने के लिए उन्होंने ईमानदारी से प्रयास नहीं किया। उसके बाद कई वर्षों भर उन्होंने सीसीएम के तौर पर अपने जिम्मेदारियां निभाने के बावजूद उनमें मौजूद उक्त बुरे रूझानों में कोई बड़ी बदलाव नहीं आया। अपने गलतियों को सुधारे और कमजोरियों से उबरने के लिए उन्होंने इमानदारी से प्रयास नहीं किया। इसके प्रमाण थे सीआरबी द्वारा 2010 में अपनी शादी के विषय पर उनपर पारित चेतावनी प्रस्ताव और 2011 में पीबी के सामने प्रस्तावित सीआरबी का निर्णय।

जुलाई 2010 में सीआरबी की 5वीं बैठक में नरसिंहरेड्डी पर पारित

प्रस्ताव निम्नप्रकार था –

''का. राजेश ने अपनी हमसफर आर.एन. आंदोलन को छोड़कर बाहर चले जाने के कुछ ही महीनों में और एक महिला कामरेड के साथ शादी का समझौता किया था। लेकिन इसके बारे में कहीं भी नहीं बताने के शर्त पर उस महिला कामरेड को नियंत्रण कर उन्होंने बहुत समय तक इस विषय को दबाकर रखा था। पार्टी (सीआरबी) को जानकारी नहीं दिया था। उसके लगभग 7-8 महीने के बाद शादी का प्रस्ताव लाकर पार्टी से अनुमति लेकर शादी करने के बावजूद, उन्होंने शादी के लिए बहुत ही कम समय में ही उस महिला के साथ समझौते करने, समयसीमा से पहले ही जल्दबाजी से शादी करने का निर्णय लेने के विषय पर उन्होंने आत्मालोचना करने के बावजूद, नैतिक पहलुओं पर नेतृत्व द्वारा पालन किए जाने वाले आदर्शों और पद्धतियों का पालन नहीं करने की वजह से सीआरबी ने उनपर गंभीर आलोचना करते हुए उनकी कमजोरी पर उन्हें गंभीर चेतावनी देती है। उनके शादी के समस्या पर निचले स्तर से आये तमाम आलोचनाओं को सीआरबी स्वीकार कर रही है।''

2011 की सीआरबी 6वीं बैठक में नरसिंहरेड्डी पर पीबी के सामने प्रस्तावित सीआरबी का निर्णय निम्नप्रकार था –

''सीसी-3 की बैठक में कामरेड जे.पी. को सीआरबी से रिलीव कर विस्तार इलाके में तबदला किया गया। वहां के विशेष कमेटी में उन्हें सदस्य के रूप में रखने का निर्णय लिया गया। इस प्रस्ताव पर उस बैठक में उपस्थित जे. पी. ने अपनी सहमति जताया। लेकिन बैठक के बाद का. जे.पी. ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। उनका राय था कि उस कमेटी में सदस्य के रूप में खुद को नहीं रखना, कमेटी से बाहर रखना, अगर उस कमेटी में सचिव के रूप में नियुक्त करेंगे तो उसमें शामिल करना।

उनके उक्त राय पर चर्चा कर कमेटी इस निष्कर्ष पर पहुंची की का. जे. पी. में आधिपत्य का स्वभाव और नौकरशाही रूझान मजबूती से जारी है। का. जे.पी. पार्टी में एक उच्चस्तर के कमेटी में रहते हुए भी, सचिव के पद पर ही रहने की बात कहने का मतलब है उस पद को एक जिम्मेदारी के तरह नहीं बल्कि एक अधिकार के रूप में देखना है – इस तरह कमेटी में एकमत से राय व्यक्त हुआ था। पार्टी के केन्द्रीय कमेटी में रहते हुए भी, इस तरह की गंभीर राजनीतिक कमजोरी से ग्रस्त होना गंभीर पहलू के रूप में लेकर, सीआरबी पी.बी. को अपील कर रही है कि उन्हें गंभीर चेतावनी दे।''

सीसीएम के रूप में रहे नरसिंहरेड्डी पर सीआरबी द्वारा पारित किए गए उक्त दोनों प्रस्ताव स्वाभाविक रूप में गंभीर थे। वे ऐसे कमजोरियों को दर्शाया जो कम्युनिस्ट पार्टी के एक नेता में किसी भी सूरत पर नहीं होना चाहिए। लेकिन उन्होंने इन्हें सुधारने के लिए तैयार नहीं होने के वजह से वे क्रमशः उनमें बढ़ता गया। सीसी को नजरअंदाज करने, संबंधित सीसी सदस्यों व राज्य कमेटी को छोटा देखना, उनकी मतों को नजरअंदाज करना, डिविजन कमेटी, एरिया कमेटियों पर ध्यान नहीं देने के साथ-साथ उन्हें दिशानिर्देशन देने पर ध्यान नहीं देना, अपने ठोस जिम्मेदारियों को निभाने के बजाय संबंधित नेतृत्वकारी कामरेडों के साथ कभी नहीं फैसला होने वाले झगड़ों में उतरना, कठिन कार्यों से पल्ला झाड़ना, समस्याओं को सुलझाए बिना टाल देते हुए समय बर्बाद करना, दिन भर कम्प्यूटर, टैब, स्मार्ट फोन और नेट से छिपक कर पूरी तरह गैरजिम्मेदाराना बरताव, कमेटियों में अनेकता को बढ़ावा देना (फूट डालना), बदला लेने की रवैया अपनाना, पार्टी निधियों को मनमाने ढंग से खर्चा कर केन्द्रीय व राज्य कमेटियों को सही लेखा-जोखा नहीं देना जैसे पेटीबुर्जुआ अराजक लक्षण जमा होकर उनमें क्रांतिकारी इच्छाशक्ति कमजोर हुआ।

2016 में दुश्मन के गंभीर हमले के बीच और बहुत-ही जटिल परिस्थितियों में प्रस्तावित सीसी बैठक को सफल बनाने के लिए उन्होंने अपने हिस्से की जिम्मेदारी को ईमानदारी और दृढ़संकल्प के साथ निभाने के लिए प्रयास करने के बजाय उसे रोकने के लिए अंतिम समय तक कई रुकावटें पैदा किए थे। क्रांतिकारी आंदोलन के सामने मौजूद कई चुनौतियों को निपटने के लिए 2017 में आयोजित केन्द्रीय रीजनल ब्यूरो (सीआरबी) और केन्द्रीय कमेटी (सीसी) के बैठकों में उनकी उपस्थिति होनी थी। लेकिन बढ़ी हुई दुश्मन के हमलों को देखकर बहुत-ही आतंकित होकर गैरहाजिर हुआ। उनको अंदाजा था कि उन बैठकों में उपस्थित होने पर उन्हें गम्भीर आलोचनाओं का सामना करना पड़ सकता है। यह भी उनकी गैरहाजरी का एक मुख्य कारण रहा।

फरवरी 2017 में आयोजित सीसी के 5वीं बैठक में नरसिंहरेड्डी के अंदर जड़ जमाए हुए व्यक्तिवाद, नौकरशाही, झूठी-प्रतिष्ठा का लालच और दुश्मन का डर बढ़ जाना जैसे गैरसर्वहारा रूझानों के बारे में, परिणामस्वरूप, पार्टी और क्रांतिकारी आंदोलन को होने वाले नुकसान के बारे में गंभीरता से चर्चा की गयी। उन्होंने अपनी कमजोरियों और गलत पद्धतियों को नहीं सुधारा था। इसे ध्यान में रखकर सीसी ने उनपर अनुशासन की कार्रवाई ली। उन्हें दो साल तक सीसी

से निलम्बित कर, ओड़िशा राज्य कमेटी के सदस्य के रूप में रहकर काम करने का निर्णय लिया गया। हमारी पार्टी के संविधान के मुताबिक निलम्बित करने की समय-सीमा एक साल से ज्यादा नहीं होने की बात स्पष्ट रूप से लिखने के बावजूद, उनके अंदर मौजूद कमजोरियों की गम्भीरता को देखते हुए सीसी ने उनकी निलम्बन की समय-सीमा दो साल तक रखने का निर्णय लिया। उनकी लम्बे क्रांतिकारी अनुभव को ध्यान में रखते उनके गलतियों के बारे में समझाकर सुधारने का प्रयास करने का निर्णय सीसी ने लिया। सीसी की प्रतिनिधि मंडल उनसे मिलकर इस प्रस्ताव के बारे में अवगत करवाने का निर्णय लिया। सीसी बैठके बाद शीघ्र ही संबंधित सीसी कामरेडों ने उनसे मिलकर सीसी प्रस्तावों के बारे में अवगत कराया। सीसी प्रतिनिधि मंडल से भेट करवाने के लिए उन्हें भिजवाया। छः महीने के बाद प्रतिनिधि मंडल से उनकी भेट हुई। उन पर सीसी द्वारा पारित निर्णय के बारे में प्रतिनिधि मंडल बहुत ही धीरता से अवगत करवाया। लेकिन सीसी द्वारा लिए गए इस अनुशासनात्मक कार्रवाई को वे पचा नहीं पाए। उनकी आत्मालोचना के लिए उनके मांग के मुताबिक एक सप्ताह का समय प्रतिनिधि मंडल द्वारा दिया गया था। उसके बाद भी अपनी आत्मालोचना पेश करने या लिखकर देने के बजाय, कुछ सीसी सदस्य और राज्य कमेटियों के कामरेडों के साथ सीसी और आंदोलन पर कुछ व्याख्याएं करते हुए, अराजक पद्धति से चर्चा में उलझाते हुए बहुत-ही गैरजिम्मेदाराना तरीके से व्यवहार किया। सीसी प्रस्ताव को अमल करने के लिए थोड़ा भी तैयार नहीं होने के बजाय, अपनी मर्जी से और योजनाबद्ध ढंग से तेलंगाना से संबंधित सीसी और एससी कामरेडों से मिलकर वहां से ही अपने परिवार जनों को बुलवाकर, उनके जरिए शासक पार्टी के नेताओं के पास पत्राचार कर, पूरी तैयारियों के साथ जाकर अपनी पत्नि के साथ दुश्मन के सामने घुटने टेक दिए।

फरवरी 2017 में हुई सीसी बैठक में नरसिंहरेड्डी पर पारित प्रस्ताव निम्नप्रकार था -

''सीसी की 5वीं बैठक की संचालन की जिम्मेदारी कामरेड रा. को दी गयी थी। लेकिन उसे अपेक्षित रूप से सीसी निभा नहीं पाई। उसके लिए अन्य मुख्य कारणों के साथ-साथ का. रा. द्वारा अपनाए गए गलत पद्धतियां और मनोगतवाद सोच से ग्रस्त होकर उन्होंने दुश्मन को ज्यादा आंकते हुए संतुलन खो देने की वजह जो जिम्मेदारियां उन्हें दी गयी थी उसे सही तरीके से निभा नहीं पाना भी एक कारण था। का. रा संतुलन से व्यवहार करने से दुश्मन के बढ़ते हमलों के

बीच के दोनों इलाकों के पीबी सदस्य (अधिक संख्या में) मिल सकते थे। इस तरह वे मिल पाने से, जटिल परिस्थितियों में बैठक को संपन्न कराकर बेहतर परिणाम हासिल कर सकते थे। लेकिन ऐसा हो नहीं पाया, इसके लिए मुख्य स्थान पर रहकर जिम्मेदारी निभाने वाले का. रा. का मुख्य जिम्मेदारी लेनी होगी।

का. रा. में पहले से मूर्तरूप में मौजूद व्यक्तिवाद, नौकरशाही, झूठी-प्रतिष्ठा से शिकार होना जारी है। वह अपने मनोगत विचारों को कमेटी पर थोपने के लिए कई तरीकों से प्रयास करते हैं। इसके लिए सर्वहारा पार्टी के अनुशासन के उल्लंघन के साथ-साथ जनवादी केन्द्रीयता को भी ध्यान में न रखकर अपनी मनमानी ढंग से जडात्मक संवाद को आगे लाना उनको आदत-सी बन गयी है। वह कमेटी बैठकों में गतिरोध पैदा करते हैं और कमेटी के सदस्यों द्वारा मजबूत विरोध जताने पर, उन बैठकों को बहिष्कार करने का भी धमकियां देते हैं। इस तरह के गैरसांगठनिक पद्धतियों और संवादों द्वारा अपने ही कमेटी में साथी सदस्यों का विश्वास हासिल कर नहीं पाने की वजह से अलगाव में पड़ रहे हैं। रा. में मौजूद गलतियों के खिलाफ विभिन्न कमेटियां संघर्ष करने के बावजूद उनमें वे ही कमजोरियां मजबूत होने के बजाय कम नहीं हुई हैं। इन कमजोरियों की पृष्ठभूमि में ही सीसी बैठक के सदर्भ में उनकी जिम्मेदारियों में हुई गलतियों को देखना चाहिए।

का. रा. में दुश्मन के प्रति डर भी बढ़ी है। वर्तमान में वह इतनी स्तर तक पहुंची कि उनके साथ रहने वाले सुरक्षा गार्ड कामरेड, उनके द्वारा नेतृत्व प्रदान करने वाले इलाके में दस्ते के आम सदस्य भी उनपर आलोचना करने की स्थिति पैदा हुई है। दरअसल आज की कठिन परिस्थितियों में, दुश्मन द्वारा भारी सैनिक हमलों के बीच पार्टी के उच्चतम स्तर के नेतृत्वकारी कामरेड बहुत-ही आत्मविश्वास के साथ रहते हुए, पहले के तुलना, अभी सैद्धांतिक, राजनीतिक और सांगठनिक तौर पर पार्टी और पीएलजीए के शक्तियों को हिम्मत के साथ खड़ा करने की जरूरत है। इसके लिए आज की परिस्थितियों में नेतृत्वकारी कामरेड सैनिक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाना - एक मुख्य आवश्यक गुण होगी। इसे का. रा. एक सीसीएम के रूप में सही तरीके से समझ नहीं पा रहे हैं। परिणामस्वरूप वहां पार्टी का बहुत नुकसान हो रहा है।

सीआरबी की 11वीं बैठक में का. रा. की उपस्थित होने का निर्णय सीसी-5 ने ली थी। उसमें शिरकत करने का वादा खुद करने के बावजूद भी

अंत में वह उपस्थित नहीं हुए। बीच रास्ते से ही वापस चले गये। उन्होंने बढ़ते दुश्मन के हमलों के बीच इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि बैठक के लिए जा नहीं सकूंगा। उनके साथ-साथ सफर करने वाले साथी सीसीएम कामरेड उन्हें समझाने के बावजूद अनसुना कर बहुत-ही आतंकित होकर वापस जाना सही नहीं था। का. रा. में व्यक्त होने वाले इन सभी कमजोरियों को गहराई से चर्चा करने के बाद सीसी उन्हें दो साल तक निलंबित करने का निर्णय ले रहा है। इस निर्णय को अमल करने के तहत इस विषय के बारे में कामरेड क और सो को का. रा. के साथ बातचीत करना है। किसी अवरोध पैदा होने या अन्य कारणों से का. रा. कांटैक्ट में पहुंच नहीं पाने की स्थिति पैदा होने से सीसी की प्रतिनिधि मंडल के रूप में कामरेड संग्राम और मनोज को उनसे बातचीत करना है। सीसी निर्णय को लागू करना है। वे अगर इस निर्णय पर सहमति नहीं जताते तो प्रतिनिधि मंडल अपने प्रस्ताव को जी.एस. के पास भेजना है।

हमारी पार्टी की संविधान में स्पष्ट रूप से लिखी गयी है कि निलंबन की समयावधि एक साल से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। इसके बावजूद का. रा. का स्तर और उससे ज्यादा उनकी गंभीर कमजोरियों को गंभीरता से ध्यान में रखकर सीसी उनके निलंबन के समयसीमा दो साल करने का निर्णय लेता है।

का. रा. को निलंबन के समयकाल में राज्य कमेटी के सदस्य के रूप में ओड़िशा में रहना होगा। उनमें व्यक्त होने वाले गंभीर गलत रूझानों पर उस राज्य कमेटी द्वारा एकता-संघर्ष-एकता की पद्धति को लागू करते हुए किसी तरह की उदारतावाद के शिकार हुये बिना व्यवहार करनी होगी। का. रा. से भी उनमें लंबे समय से मूर्तरूप लेने वाली गलत रूझानों से बाहर आने के लिए आज की परिस्थितियों में उच्चतम स्तर की चेतना को दर्शाते हुए बोल्शेविक दृढ़ता के साथ प्रयास करने की अपील सीसी करती है। यह प्रयास मुख्य रूप से उनके द्वारा ही होनी चाहिए। का. रा. को अपने कमजोरियों से बाहर आने के लिए संबंधित सीसी कामरेड मदद देने के लिए सीसी अपील करती है। आम तौर पर इस तरह के विषयों में साथी कामरेडों का मदद जरूरी होगा। का. रा. को वहां की राज्य कमेटी में क्या वर्क डिवीजन देना है- इस पर संबंधित सीआरबी सदस्य ठोस रूप से मार्गदर्शन करनी होगी।''

दरअसल पतनावस्था में पहुंचने तक, सीसी 5वीं बैठक के उपरान्त सीसी कामरेड उनसे भेंट करने तक, खासकर सीसी की प्रतिनिधि मंडल से भेंट करने

तक कभी भी उन्होंने पार्टी के लाइन (दिशा) पर और मौलिक दस्तावेजों पर, पार्टी के सामने मौजूद किसी भी एक मुख्य राजनीतिक समस्या पर उनके अंदर कोई भिन्नमत होने की सूचना उन्होंने सीसी को नहीं दिया। सीसी के 5वीं बैठक के उपरान्त उनसे मिली कुछ सीसी कामरेडों के साथ और प्रतिनिधि मंडल के के कामरेडों साथ उन्होंने बताया कि स्वयं कुछ विषयों पर अध्ययन कर रहे हैं और उनपर कोई निष्कर्ष अभी तक नहीं निकाला गया है। वास्तव में आंदोलन के सामने खड़े हुए कुछ मुख्य सैद्धांतिक, राजनीतिक समस्याओं को पहचान कर, एक योजनाबद्ध तरीके से उन्हें सुलझाने के लिए सीसी 5वीं बैठक द्वारा निर्णय लिया गया है। यह बताते हुए कि इन समस्याओं के बारे में पार्टी के सदस्य अपने मतों को पार्टी संविधान के मुताबिक चर्चा कर सकते हैं - उसके लिए सही पद्धति भी तय किया। इसके बारे में नरसिंहरेड्डी को भी प्रतिनिधि मंडल द्वारा जानकारी दी गयी। इस प्रस्ताव की रोशनी में भी प्रतिनिधि मंडल ने स्पष्ट रूप से बताया गया है कि उन्होंने किसी भी विषय पर भिन्नमत होने पर चर्चा कर सकते हैं। इस तरह नरसिंहरेड्डी की क्रांतिकारी जीवन का अंत और प्रतिक्रांतिकारी एवं विश्वासघाती जीवन का आरंभ हुआ।

नरसिंहरेड्डी के पतन और विश्वासघात के मुख्य कारण निम्नप्रकार है

पहला, नरसिंहरेड्डी तीन दशकों से ज्यादा समय से क्रांतिकारी आंदोलन में विभिन्न स्तरों में कार्यरत रहने के बावजूद उनमें व्यक्तिवाद गम्भीर रूप से बढ़ने के कारण, वह अपनी कमेटी में टीम स्पिरिट के साथ काम नहीं करने के कारण सर्वहारा के सामूहिक सोच और सामूहिक कार्यपद्धति अपनाने में विफल हुए। खुद को एक सर्वहारा क्रांतिकारी के रूप में खुद को ढाल नहीं पाया। कोई भी हो, किसी भी समस्या हो, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद पद्धति से विश्लेषण किए बिना अपनी मनमर्जी से व्यवहार करना मानोगतवाद का आधार बनता है। इससे आंदोलन और कैडरों का सही आकलन किया नहीं जा सकता। उनके बीच कामरेडाना संबंधों पर चोट पहुंचाया जा सकता है। इससे व्यक्तिगत संबंध उभर सकता है। राजनीतिक, सांगठनिक और सैनिक प्रयास नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकता है। यह मनोगतवादी रूझान आंदोलन का, कामरेडों का, उनके बीच संबंधों का आकलन करने में नरसिंहरेड्डी के अंदर गंभीर रूप से मौजूद था। उनके अंदर निहित ''मैं'', ''मेरा'' जैसे व्यक्तिवाद इसका आधार था।

दूसरा, नरसिंहरेड्डी के अंदर सैद्धांतिक, राजनीतिक और सैनिक रूप से

विकास रुक गया था। अपने कमेटी सदस्यों, कतारों और जनसमुदायों से घनिष्ठ संबंध साबित करने में विफल होने के वजह से उनके सोच-विचार जानने में अक्षम होने, सामाजिक शोध-अध्ययन शून्य हो जाने, ठोस नीतियों को समझ नहीं पाने, राजनीतिक-सैद्धांतिक प्रयास कर नहीं पाने के वजह से वह वास्तविक चीजों से अलग-थलग पड़ गया था। गैरक्रांतिकारी कार्यों में समय बिताता था। परिणामस्वरूप, लक्ष्यविहीन राजनीतिक चर्चाएं करते हुए, आंदोलन और पार्टी को नेतृत्व प्रदान करने की उनकी क्षमता क्रमशः कम होती गयी।

तीसरा, नरसिंहरेड्डी के अंदर निम्नपूंजीवादी अराजकता, नौकरशाही और गैरसांगठनिक रवैया मजबूती से मौजूद थे। ये सर्वहारा के क्रांतिकारी जीवन से पूरी तरह उलट है। ये मालेमा के खिलाफ है और द्वंद्वात्मक व ऐतिहासिक भौतिकवाद की विश्व दृष्टिकोण के खिलाफ है। लेकिन हमारे पार्टी कमेटियों के बैठकों में एक पद्धति के तौर पर जारी रखे हुए आलोचना-आत्मालोचनाओं के संदर्भ में हो, विभिन्न अवसरों पर सीसी द्वारा शुद्धीकरण अभियानों में हो, बोल्शेविक अध्ययन अभियानों में हो - अपने अंदर मौजूद गलत रूझानों से उबर कर एकता-संघर्ष-एकता के जरिए सच्ची कम्युनिस्ट के रूप में परिवर्तन नहीं हो पाया। इसलिए अपने कमी-कमजोरियों के बारे में उन्हें अच्छी समझदारी होने के बावजूद, उन्हें सुधारने की कोई भी कोशिश उन्होंने नहीं किया, बल्कि गलतियों और कम-कमजोरियों पर परदा डालने का प्रयास किया। उनके अंदर निहित झूठी-प्रतिष्ठा उनके ईमानदारी से आत्मालोचना करने में लगातार खुद के लिए रुकावट के रूप में खड़ा हुआ था। परिणामस्वरूप उनके अंदर क्रांतिकारी हिम्मत पूरी तरह खो गया।

चौथा, कोई भी क्रांतिकारी दुश्मन को देखकर जितना आतंकित होगा, उतना ही उसका जोश भी मंद पड़ेगा। वह किसी भी हालत में दुश्मन का सामना करने की तैयारी कर, निर्भीक होने से और आत्मबलिदान की चेतना होने से आंदोलन में जोश के साथ काम कर सकता है। वर्तमान में क्रांतिकारी आंदोलन कठिन दौर का सामना करने की स्थिति में गम्भीर नुकसानों और दुश्मन के हमले की तीव्रता को देखकर उनके अंदर डर चरमसीमा पर पहुंच गया। वर्तमान अनुकूल भौतिक परिस्थिति को इस्तेमाल करने के लिए पहलकदमी लेकर पार्टी कतारों और जनता को गोलबंद कर आंदोलन का निर्माण करने में और दुश्मन के हमले का सामना करते हुए आंदोलन का नेतृत्व प्रदान करने में उनका विश्वास खो गया। आंदोलन, पार्टी और जनता के हितों को अपने हितों के रूप में लेकर आत्मत्याग कर काम

करने की चेतना उन्होंने खो दिया।

सीसी और सीआरबी, नरसिंहरेड्डी के पतन के उक्त मुख्य रूझानों के खिलाफ उदारतावाद के कारण तीक्ष्ण संघर्ष नहीं कर पायी है। नेतृत्वकारी तरफ से हुई इस कमी के कारण उनके अंदर गंभीर गैरसर्वहारा रूझान होने के बावजूद लम्बे समय तक उन्होंने पार्टी में टिक पाया है। केन्द्रीय कमेटी इस नकारात्मक अनुभव से सबक लेकर पार्टी को और अपने आप को सही रूप से ढालने के लिए दृढ़ता से प्रयास करना होगा।

इस तरह अभी तक नरसिंहरेड्डी के क्रांतिकारी जीवन में द्वितीय गौण के रूप में रहे उनकी कमी-कमजोरी अब प्रधान पहलू के रूप में तब्दील हो गयी। तब वे एक क्रांतिकारी और एक क्रांतिकारी नेता रूप में थे, अब प्रतिक्रांतिकारी और गद्दार के रूप में तब्दील हो गए। कोई भी क्रांतिकारी, अतीत में जिनका इतिहास कितनी भी आदर्शनीय क्यों न हो, अपना/अपनी गैरसर्वहारा विचारों और गैरसर्वहारा गलत रूझानों के खिलाफ खुद आंतरिक संघर्ष नहीं करने से बहुत समय तक या आखिर तक क्रांति में आगे नहीं बढ़ सकेंगे। यह क्रांतिकारी द्वंद्वात्मकता है। यह नियम समाज, व्यक्तियों और क्रांतिकारियों सहित सभी पर लागू होती है। स्वार्थी और पार्टी, क्रांति व उत्पीड़ित जनता से खुद को ऊपर रखने वाले करिअरवादी नेता इतिहास के कूड़ेदान में फेंक दिया जाता है। उसी तरह नरसिंहरेड्डी भी विश्वासघातियों से एक होकर हमारी पार्टी के इतिहास में रह जाएंगे।

कम्युनिस्ट पार्टी अपने आप को और कम्युनिस्ट क्रांतिकारी के रूप में खुद को परिवर्तित करना हमेशा लगातार जारी रखने वाली एक प्रक्रिया है। इसलिए, हमेशा लगातार खुद को परिवर्तित करने के लिए हर एक साथी को कोशिशें करना जरूरी है। इसे अपने यूनिटों में सामूहिक रूप से जारी रखकर ही प्रभावशाली ढंग से निभा सकते हैं। इसे उन्हें शिक्षा-व्यवहार-समीक्षा-आत्मालोचना-आलोचना-परिवर्तन (फिर से ढालना) के क्रम का पालन करना होगा। उसी क्रम में हर एक सदस्या/सदस्य पहलकदमी के साथ, अटल होकर प्रभावशाली और दक्षतापूर्वक सामूहिक रूप से प्रयास करने से ही, कमजोरियों का जांच करना, निगरानी रखना, समीक्षा करना, शुद्धीकरण करना संभव हो पाएगा।

क्रांति को सफल बनाने के लिए मजबूत पार्टी, दक्ष नेतृत्व और कैडरों की आवश्यकता के बारे में कामरेड माओ ने कहा है, ''एक महान क्रान्ति का

मार्गदर्शन करने के लिए एक महान पार्टी और बहुत से बेहतरीन कार्यकर्ता होना चाहिए। 45 करोड़ आबादी वाले चीन में यदि नेतृत्व एक संकुचित छोटे गुट के हाथ में हो, यदि पार्टी के नेता और कार्यकर्ता संकुचित दिमाग वाले हों तथा अदूरदर्शी और असमर्थ हो, तो एक महान क्रान्ति को, जो इतिहास में अभूतपूर्व है, पूरा करना असम्भव हो जाएगा। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी बहुत दिनों से एक बड़ी राजनीतिक पार्टी रही है; और प्रतिक्रियावाद के दौर में हुए नुकसान के बावजूद वह आज भी एक बड़ी राजनीतिक पार्टी है। उसके पास बहुत से अच्छे नेता और कार्यकर्ता हैं, लेकिन उनकी संख्या अब भी काफी नहीं है। हमारे पार्टी-संगठनों को पूरे देश में फैला दिया जाना चाहिए, तथा हमें जागरूक होकर दसियों हजार कार्यकर्ताओं और सैकड़ों बेहतरीन नेताओं को प्रशिक्षित करना चाहिए। इन कार्यकर्ताओं और नेताओं में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की समझ होनी चाहिए, राजनीतिक दूरदर्शिता होनी चाहिए, काम करने की योग्यता होनी चाहिए, आत्म-त्याग की भावना होनी चाहिए, तथा उन्हें कठिनाइयों में अडिग रहने और राष्ट्र, वर्ग और पार्टी की सेवा तन-मन से और वफादारी से करने वाला होना चाहिए। इन कार्यकर्ताओं व नेताओं के भरोसे ही पार्टी अपने सदस्यों और आम जनता के साथ सम्बन्ध स्थापित करती है, तथा आम जनता पर उनके सुदृढ़ नेतृत्व के भरोसे ही पार्टी अपने दुश्मन को परास्त कर सकती है। ऐसे कार्यकर्ताओं और नेताओं की स्वार्थपरता, व्यक्तिगत पराक्रमवाद, व्यक्तिगत प्रसिद्धि की अभिलाषा, आलसीपन, निष्क्रियता और गौरवपूर्ण संकीर्णतावाद से दूर रहना चाहिए तथा उन्हें नि:स्वार्थ राष्ट्रीय वीर और वर्ग-वीर बन जाना चाहिए।'' (माओ संकलित रचनाएं, ग्रंथ-1, 'कोटि-कोटि जनता को जापान-विरोध राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे के पक्ष में करने का प्रयत्न करो' (7 मई 1937), कार्यकर्ताओं का सवाल, पहली पेरा।)

इस तरह के नेता और कार्यकर्ता किस तरह तैयार किया जाता है? वर्गसंघर्ष में सक्रिय रूप से भाग लेना, सौंपे गए कर्तव्यों को निभाना, इन्हें मालेमा की रोशनी में समझ कर, अपने अनुभवों से सबक लेने और आंदोलन को आगे बढ़ाने के क्रम में ही कोई भी क्रांतिकारी को विकसित किया जा सकता है। लेकिन, व्यवहार में स्वत:स्फूर्तता का शिकार होने से यह क्रम लागू नहीं होगा। एक योजना के तहत, एक प्रक्रिया के दौरान ही यह संभव हो सकता है। उन्हें सक्षम संगठकों (आर्गनाइजर) और कमांडरों के रूप में विकसित किया जा सकता है। ऐसे लोग जनता का विश्वास हासिल कर और उन्हें नेतृत्व प्रदान कर

सकते हैं। ऐसा करने के लिए हमें मालेमा के सिद्धांत के बारे में अच्छी समझदारी होना ही नहीं, बल्कि व्यवहार में खुद सामना करने वाले समस्याओं से सिद्धांत को जोड़ने में भी सक्षम होना चाहिए। हमने हमारी राजनीतिक लाइन और सैनिक लाइन के बारे में गहरी समझ होना ही नहीं, बल्कि हमारे कार्यक्षेत्र में अपने व्यवहार में उसे ठोस रूप से लागू करना चाहिए। आत्मालोचना के हथियार से लैस होकर कर्तव्य निष्ठा के साथ अध्ययन करने की पद्धति को लागू कर, पार्टी और क्रांति के जरूरतों के अनुरूप खुद को परिवर्तित करना चाहिए। इस तरह हमारी वर्ग दृष्टिकोण, हमारी पार्टी दृष्टिकोण और हमारी पार्टी की स्फूर्ति को और मजबूत करना चाहिए।

इस संदर्भ में कामरेड माओ द्वारा दी गयी यह शिक्षा हमारी मार्गदर्शक के रूप में रहेगी, ''वर्ग-संघर्ष में और प्रकृति के विरुद्ध संघर्ष में, मजदूर वर्ग समूचे समाज का नव रूपान्तर करता है। साथ ही अपना खुद का भी नव रूपान्तर करता है। अपने काम के दौरान उसे लगातार सीखते रहना चाहिए और कदम-ब-कदम अपनी खामियों को दूर करते रहना चाहिए तथा ऐसा करना कभी उसे बन्द नहीं करना चाहिए।'' (जनता के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करने के बारे में (27 फरवरी, 1957), उद्योगपतियों और व्यापारियों का सवाल, पृष्ठ-378)।

नरसिंहरेड्डी दुश्मन के सामने घुटने टेक देने की वर्तमान परिस्थिति में, हमारी पार्टी के सभी नेतृत्वकारी कमेटियों और कैडरों को, विशेषकर, सीसी और राज्य कमेटी को जो कल तक उन्होंने काम किया और तेलंगाना राज्य कमेटी नुकसान को कम से कम करने के लिए तमाम सावधानियां बरतनी चाहिए जो उनके द्वारा दुश्मन के सामने हमारी गोपनीयता उजागर करने से होगा। हमें याद रखना होगा कि पार्टी के गुप्त विषयों के बारे में उनके द्वारा दुश्मन के सामने उजागर होने की संभावना है और इनके आधार पर दुश्मन एलआईसी के तहत अपनी गतिविधियां संचालित कर सकता है। इसलिए दैनंदिन जीवन सहित अभी तक अनुसरित और आधारित सभी विषयों में किसी भी ढील बरते बिना उचित सावधानियां लेने और जरूरी बदलाव करने पर संबंधित कमेटियों को ध्यान देना चाहिए।

प्रिय कामरेडो!

हमारी पार्टी ने क्रांति के प्रति समर्पित कई कामरेडो और विशेष तौर पर कई

वरिष्ठ साथियों को खो दिया है। और ये शहीद साथी हमारे सामने निस्वार्थ भावना, आत्मबलिदान की चेतना, साहस, क्रांति के प्रति समर्पण की भावना, उत्पीड़ित जनता के प्रति प्यार और संवेदनाओं के शानदार उदाहरण के रूप में हमारे सामने खड़े हैं। दुश्मन के सर्वाधिक क्रूर उत्पीड़न और यातनाओं का सामना करते हुए उन्होंने पार्टी की गोपनीयता की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्योछावर किए थे। प्रत्येक पार्टी सदस्य को इन प्रिय शहीद कामरेडों के महान कम्युनिस्ट मूल्यों को अपने व्यवहार में उतारना चाहिए और सभी गैरसर्वहारा कमजोरियों और गलत रूझानों से खुद को मुक्त करते हुए और स्वयं को सच्चे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी के रूप में अपने आप को बदलते हुए उनके योग्य उत्तराधिकारी बनना चाहिए।

इस विषय में नरसिंहरेड्डी हमारी पार्टी, कतार और क्रांतिकारी जनता के लिए एक नकारात्मक शिक्षक के रूप अंकित होगा। क्रांतिकारियों में आंतरिक संघर्ष दुश्मन के खिलाफ संचालित वर्गसंघर्ष से भी बहुत जटिल, कठिन और भीषण रूप लेती है। इसके लिए बहुत ही हिम्मत और दृढ़निश्चय होना चाहिए। इन सबसे ज्यादा मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद (मालेमा) सिद्धांत के बारे में गहरी समझ और उत्पीड़ित जनता तथा पार्टी के प्रति गहरी समर्पण की भावना होनी चाहिए। आइए, पार्टी, क्रांति और जनता के हितों से अलग होकर, अपने स्वार्थ हितों के लिए गद्दारी करने वाले विश्वासघातियों की तीव्र निन्दा करें और उन्हें घृणा करें। हमारे प्यारे अमर शहीदों द्वारा दर्शाए गए क्रांतिकारी रास्ते को लाल रोशनी से उज्वल करने वाले कम्युनिस्ट मूल्यों और व्यवहार को अंतिम सांस तक ऊंचा उठाते हुए, दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते पर, समाजवाद-साम्यवाद को हासिल करने के लक्ष्य से भारत की नवजनवादी क्रांति को आगे बढ़ाएं।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ,

केन्द्रीय कमेटी

19-1-2018 **भाकपा (माओवादी)**

पाठकों से पीपुल्सवार संपादक मंडल का अपील! पीपुल्सवार-10 और 11 वें अंकों में प्रकाशित गलतियों के बारे में

जून 2016 में प्रकाशित पीपुल्सवार-10वी अंक में

प्रिय कामरेडो! जून 2016 में प्रकाशित पीपुल्सवार-10वी (पार्टी 10वीं वर्षगांठ के विशेषांक-2) अंक के अंग्रेजी वर्सन में 'नारी के सवाल-जनयुद्ध-जनमुक्ति' प्रबंध के अंतर्गत पृष्ठ-90 के तीसरा पैराग्राफ में गलती से इस तरह लिखी गयी है - ''In the Lalgarh struggle Tapasi Malik was assaulted and murdered.'' (लालगढ़ आंदोलन में तापसी मालिक पर हमला कर हत्या की गयी।) इस पंक्ति को इस तरह सुधार कर पढ़ने अपली करते हैं कि जो निम्नांकित है -

''हुगली जिला के अंतर्गत सिंगुर टाटा नैनो मोटरगाड़ी कारखाना के लिए भूमि अधिग्रहण के खिलाफ हुई लड़ाई में एक 11 (ग्यारह) साल की किशोरी तापसी मल्लिक को सीपीएम के गुण्डों के द्वारा पुलिस की मदद से बलात्कार कर हत्या की गयी। पश्चिमी मेदिनीपुर जिला के अंतर्गत लालगढ़ थाना में कार्यरत 'पुलिसिया आंतक विरोधी जन-साधारण की कमेटी' द्वारा संचालित आंदोलन में अंशग्रहणकारी एक आदिवासी महिला छितामुनी टुडू जिसको एकदिन रात्रि 12 बजे पुलिस भारी शारीरिक अत्याचार कर और बंदूक का कुन्दा से आंख पर चोट मार कर एक आंख पूरी तरह नष्ट कर डाला।''

मार्च 2017 में प्रकाशित पीपुल्सवार-11वी अंक में

चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर 26 फरवरी, 2017 को सीसी, भाकपा (माओवादी) द्वारा प्रकाशित महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति की महत्व, उसकी सफलताएं व सबक- नामक बुकलेट प्रकाशित किया गया, जिसे अंग्रेजी भाषा में पी.डब्लू.-11 शामिल किया गया था। उस लेख के हिंदी अनुवाद (बुकलेट) के 22 वां पेज के पहला पैराग्राफ के प्रथम लाइन को, फिर पी.डब्लू.-11 के 38 पेज के अंतिम पैराग्राफ के पहले दो पंक्तियों को गलती इस तरह लिखी गयी है, ''सितम्बर

1970 में 9वीं सीसी की दूसरी प्लीनम ने वामपंथियों के गुप्त योजनाओं का पर्दाफाश किया। लिन प्याओं को चीन लोक गणराज्य की अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया।'' इस पंक्तियों को इस तरह सुधार कर पढ़ने अपली करते हैं कि जो निम्नांकित है -

''सितम्बर 1970 में 9वीं सीसी की दूसरी प्लीनम में 'वामपंथियों' ने इस गुप्त षड़यन्त्र रचा ताकि लिन प्याओं को चीन लोक गणराज्य की अध्यक्ष पद पर बैठाया जा सके, लेकिन प्लीनम ने उसे पर्दाफाश किया।''

इसी तरह इस बुकलेट (हिंदी वर्सन) में पृष्ठ 43 और 44 में हमारी पार्टी दस्तावेज 'भारतीय क्रांति के रणनीति और कार्यनीति' (हिंदी वर्सन) से कुछ पैराग्राफ उल्लेखित किया गया है। दस्तावेज (हिंदी वर्सन) के पृष्ठ 41 और 42 से उल्लेखित इन पैराग्राफों में से आखरी पैराग्राफ के तीसरी पंक्ति को गलती से इस तरह अनुवाद किया गया है कि ''....साम्राज्यवाद-सामंतवाद **विरोधी** संस्कृति को मिटाकर....'' जिसे ''....साम्राज्यवाद-सामंतवाद संस्कृति को मिटाकर....'' के रूप में सुधारकर पढ़ना है। इस गलती उस दस्तावेज (हिंदी वर्सन) यानी 'भारतीय क्रांति के रणनीति और कार्यनीति' में ही उपस्थित है। इसलिए उस दस्तावेज (हिंदी वर्सन) में भी इस तरह सुधार करने का अपील करते हैं।

इन गलतियों से पीपुल्सवार संपादक मंडल अपने खेद जताती है।

''लेनिनवाद ने साम्राज्यवाद की उन स्थितियों में विकास किया और आकार ग्रहण किया जब पूंजीवाद के अन्तरविरोध चरमबिन्दु तक पहुँच चुके थे, सर्वहारा क्रान्ति एक फौरी व्यवहारिक सवाल बन गयी थी, मजदूर वर्ग की क्रान्ति की तैयारी का पुराना दौर बीत चुका था और उसके स्थान पर पूंजीवाद पर सीधा प्रहार करने का नया दौर आ चुका था।'' उन्होंने यह भी कहा है कि *''लेनिनवाद आम तौर पर सर्वहारा क्रान्ति का सिद्धान्त तथा कार्यनीति है और खास तौर पर सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का सिद्धान्त तथा कार्यनीति है।''*

– ***स्तालिन***

भाकपा (माओवादी) के मा-ले-मा दस्तावेज से

''लेनिनवाद बर्नस्टीनवादी संशोधनवादियों, नरोदवादियों, अर्थवादियों, मेन्शेविकों, कानूनी मार्क्सवादियों, विसर्जनवादियों, काउत्स्कीपन्थियों, त्रात्स्कीपन्थियों समेत विभिन्न रंग-रूप के अवसरवादियों के खिलाफ अविराम संघर्ष के जरिये विकसित हुआ है। लेनिन ने मार्क्सवाद को जड़सूत्र के रूप में नहीं, बल्कि कार्यों के मार्गदर्शक के रूप में मानते हुए कार्यनीति तैयार की। लेनिन के कार्यनीतिक नारों की विलक्षण स्पष्टता और उनकी क्रान्तिकारी योजनाओं के अनोखे साहस के चलते दूसरे इण्टरनेशनल की समस्त वामपन्थी शक्तियों और क्रान्तिकारी जनता को बोल्शेविकों के पक्ष में लाया जा सका।''

''उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि पार्टी जनता के सभी अन्य रूपों के संगठनों को निर्देशित करने वाले वर्गीय संगठन का उच्चतम रूप है, कि सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को केवल सर्वहारा पार्टी के जरिये ही अमल में लाया जा सकता है और कि पार्टी को पेशेवर क्रान्तिकारियों का ऐसा स्थिर केन्द्रक होना चाहिए जिसके साथ पार्टी सदस्यों का एक व्यापक तानाबाना जुड़ा हो। इस राजनीतिक पार्टी को जनता के साथ गहरा जुड़ाव रखना होगा और इतिहास निर्माण में उसकी सृजनात्मक पहलकदमी को पूरा-पूरा महत्व देना होगा। इसे क्रान्ति के दौरान ही नहीं, वरन् समाजवाद तथा साम्यवाद के निर्माण के दौरान भी, जनता पर घनिष्ठ रूप से निर्भर रहना होगा।''

साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!
समूचे विश्व में सर्वहारा क्रांतियों के ज्वालएं पैदा करें!
लाल एवं समाजवादी भविष्य के लिए आगे बढ़ें!
साम्यवाद की ओर प्रस्थान करें!

"The October Revolution cannot be regarded merely as a revolution "within national bounds." It is, primarily, a revolution of an international, world order, for it signifies a radical turn in the world history of mankind, a turn from the old, capitalist world to the new, socialist world". While shaking imperialism, the October Revolution has at the same time created—in the shape of the first proletarian dictatorship—a powerful and open *base* for the world revolutionary movement, a base such as the latter *never possessed* before and on which it now can rely for support. It has created a powerful and open *centre* of the world revolutionary movement, such as the latter *never possessed* before and around which it can now rally, organising *a united revolutionary front of the proletarians and of the oppressed peoples of all countries against imperialism*.

- J. Stalin

The International Character of the October Revolution
(On the Occasion of the Tenth Anniversary of the October Revolution)
Pravda, No. 255, November 6-7, 1927